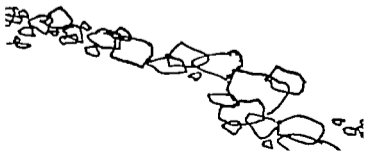
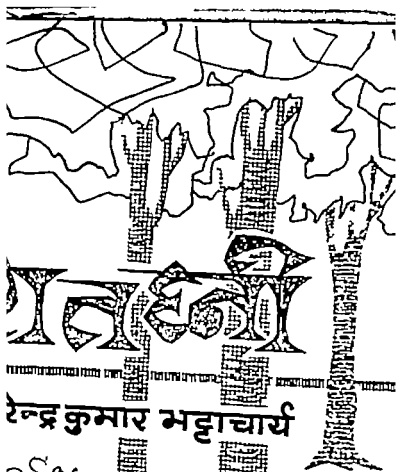




शतघ्नी





रुद्र कुमार भट्टाचार्य

२६२६

२०१



प्रकाशक

मैत्रेयन पब्लिशिंग हाउस

२६-ए, 'अग्रसोक' बहादुरनगर, दिल्ली-७

विन्नी-बेगम बई रोड, दिल्ली ६

प्रथम संस्करण, नवम्बर, १९६३

मूल्य : पाँच रुपये

बुद्धक :

पुरी प्रिन्टर्स,

करोल बाग,

बई दिल्ली-३



## पहला भाग

मैं तैयार हो रहा था। विमला अभी-अभी घटा गई थी कि बर के पिता को नये वस्त्र पहन कर जाना चाहिये। पत्नी द्वार पर आम के पत्तों की बन्दनयार सजा रही थी। कोई पड़ी-सिन नहीं आई थीं। भगसकार्य के लिए उन्हें बुलावा भेजा गया था। वे नहीं आईं। कारण—हम ब्राह्मणों हैं।

जोरण<sup>१</sup> के लिए विमला का पति मेरा विदेही दामाद आपेई वस्त्र अलवार आदि जुटा कर लाया था। रजत का स्टेचन से लान के लिए आपेई ने एक माटर की व्यवस्था की थी। गाड़ी आने में अभी चार घंटे समय थे। समझी को कहला दिया था कि जोरण दोपहर का भेजा जायगा। मेरा विचार था जोरण के लिए मैं और विमला ही जायें। गिनती के भाग थे। गांव के घर से कोई समाचार नहीं मिला था, और न ही मित्रों और बुदुम्य के लोगों से। मेरे विवाह के समय में ही उन्होंने हमारा बहिष्कार कर दिया था। ऐसा क्या हुआ—आप यह जानने को उत्सुक होंगे। धीरे-धीरे घरिये। पहले यह नस्लान सम्पन्न हो जाने दीजिये।

इसी समय दूसरे कमरे में मैंने आपेई और विमला की आवाज

१ जेथ—बरपय की ओर से कन्या के लिए वस्त्र और भर्त्सकार केन की प्रथा।

सुनी। पहले काम में बात करते रहे फिर स्वर में हल्की तीव्रता आ गई। दीवार के सहारे सड़े होकर मैंने उनकी बात पकड़ने की चेष्टा की लेकिन कुछ भी नहीं पकड़ पाया। अनमना-सा होकर नहाने चला गया। मैं गरम पानी से नहाता हूँ विज्ञेप कर जाड़े में। गरम पानी नहीं रखा था। रोप स खो नहीं कहूँगा हाँ विशुद्ध मन से पत्नी को आवाज दी—

गरम पानी कहाँ है ?

क्षण भर के लिए आम कपड़े टाँगने का काम रोककर पत्नी ने वहीं द्वार से कहा—

क्यों टेंटुए पर खोर दे रहे हो ? सत्तराम सफ़ाई फाड़ रहा है। खत्म कर से। पानी दे जायेगा।

मुझे पिताजी का स्मरण हो आया, और पितामह का भी। उन दिनों जब मैं छोटा था, देखता था कि नहाने के लिए गरम पानी देने में ज़रा भी देर हो छापी खो बस फिर क्या था गान्धियाँ बरस जाती थीं, माँ पर और मातामही पर भी। भाग्य से गान्धियाँ देना मैंने उनसे उत्तराधिकार में नहीं पाया। मन का क्षोभ मन में ही लुकाकर, घोटी सपेट, बिना नहाये मैं बाहर निकल आया और बैठक में चला गया।

मैंने देखा विमला अकेली है। बापेई वहाँ नहीं था। एक भस्त्रवार पड़ा था। मैंने उठा लिया। धड़ी-धड़ी सुस्त्रियों में सिला था—चीनी आक्रमण की समाचना। कौतूहल हुआ। आग पड़ा। उत्तर-पूर्वी सीमा पर और महास में चीनियों की सरगमियों में बिठाई बढ़ती जा रही है। उन्होंने सैन्य-संपत्ति बड़ा सी है। मैक-महोन सीमा रेखा के साथ-साथ ऐसी सड़कें बनाई हैं जिन पर

मारी टुकें और बन्धनरूपद गाड़ियों या गा सुनसी हैं। सार तिम्वत में हवाई अड्डों का जाल बिछा दिया है। बिद्वान नहीं हुआ। भउवा फेंक दिया।

“बित्री बङ्गान के लिए मा ही झूठी मनगढ़न्त खबर छापते हैं। छि ।

बिमला ने मेरी ओर देखा और बोली—

‘सब बात है पिताजी। झूठ क्या होगी?’

मैं आरामकुर्सी पर बठ गया। बिमला उठ खड़ी हुई। उसका मुँह कुछ उतरा हुआ था। आश्चर्य हुआ, एता क्यों? वह ता है सदा की प्रसन्नचित्त। पारदू के आकाश की तरह निर्मल उज्ज्वला रंग। प्रभात की मुनहरी धूप की तरह धनकते, हसत होंठ। उसक मुग्धमण्डल पर यह मसिनता कैसी? एष जबल तिम्वी जम सहसा किसी फूम पर निस्पद हा कर बठ आये।

मैं पूछा— ‘बिमला सड़ी क्यों हो गई? कुछ काम है?’

‘हाँ पिताजी शोण के बपड़ों को सहेजकर धक्का म रखना है।’

‘अन्धी बात है बेटी आजो।’

बिमला खली गई।

बठक म पिताजी का एक प्रचोद बित्र टेंगा था। मीध-साव निपापट ब्यक्ति। दाढ़ी-मुँह मंडित रौबदार बेहुर। सदा मुँह स बिसम सगो रहती। एक टियोनी<sup>१</sup> बाँधत और गरमी हो या मरबी पारीर पर एक गन्दे के अतिरिक्त दूसरा कोई पस्त्र नहीं

१ टियोनी—घोंटी घूर्तन तक की पोती जो पर में बिरोपकर स्तन के सन्ध परती जाती है।



शासते । अत्यन्त निष्ठावान् भक्त थे, तीन बार प्रसंग<sup>१</sup> बरके ही जलपान या भात ग्रहण करते । तीन बार घासी की । दो को अपने सामने ही गंगा में प्रवाहित कर दिया । अन्त में अपनी बराबर की आमु के एक बंधु की पुत्री से गठबंधन कर लाये । ऐसी पोट्पी 'माही'<sup>२</sup> के घर में आने के बाद पिताजी उन पर ऐसी निर्भयता से आसक्त हुए कि हम माई-बहनों को कट्टु अमुभव हो गया कि सौतेली माँ क्या होती है । दिन भर हमें निर्दयता से हाँकती । मैं ही बड़ा और समझदार था । बाकी तीन अभी छाटे थे । मैं पढ़ता भी था और यिना मससाये घर का कामकाज भी करता था । एक दिन बासी झाड़ू<sup>३</sup> को पाकघर<sup>४</sup> में ले जाने के अपराध में माही ने छोटे माई बापुकरण को ऐसा पीटा कि मैं सह न सका । माही को गानियाँ देकर बापुकरण को छोड़ा साया । गोधूसी की बेला घर में बड़ा बोहराम मचा । तिस का ताड़ बनाकर पिताजी को बसा बसानी गई । मुन पर बह मुझ पर विगड़े बहुत विगड़े विगड़े ही क्या आपा को बठे । एक नयी फाड़ी लकड़ी से मुझे धुन दिया । उसमें बाद, जब मैं कुछ कहने गया तो मेरे पीछे कुन्हाड़ी लेकर लपके ।

१ तीन बार प्रसंग—तीन बार नामकीर्तन । प्रथम के महापुरविया सप्रदाय में जिसके प्रवर्तक श्री संकरदेव के दिन मैं तीन बार नामकीर्तन करने की प्रथा है । सबेरे, दोपहर और सूर्यास्त के समय ।

२ माही—सौतेली माँ और मासी बोलों के लिए प्रयुक्त होता है ।

३ बासी झाड़ू—बह झाड़ू जिससे घर का आंगन और बाहर घाऊ करते हैं । उसे भीतर, बिघेप कर रसाई में नहीं जाते हैं ।

४ पाकघर—रसोई ।

उस दिन जा मैं घर से दीवा तो दौड़ ही गया। थोड़े दिन बाद मैं सना में भरती हो गया।

बरसों घोट गये। मैं घर नहीं लौटा। छुट्टी भी खाता तो तिनमुक्किया में रह जाता गाँव नहीं जाता।

पिताजी का साँस का रोग हो गया। बूढ़े होने के साथ-साथ हाथ-पाँव सब भी निडाल हो गये। ऐसी अवस्था में एक दिन मारही घर छाड़कर भके पलायन कर गई। छोटे भाई अब तक समाने हा गये थे। वे ही पिताजी की देखभाल करते थे। हाँ मैंने अवश्य एक काम किया। हर महीने दस-पाँच रुपय घर भेज देता।

पिछले महायुद्ध तक मैं नायक बन गया था। बरमा के घन जंगलों में अज्ञानक छापा मारकर एक धापानी बस्ते को बन्दो बनाने के उपसध्य में मुझे पुरस्कार मिला। धनु की गाली मगन के कारण मेरी एक टाँग में हन्की-सी सँभटाहट आ गई थी।

मैं मारगराटा के हस्पताल में भरती हो गया। वहीं अकस्मात् विमला की माँ से सम्पर्क हुआ। मर्ल थी विधारी। ब्राह्मण की बेटी और धाल-बिषबा। सुहाग-जमा खिसने से पहन ही उबड़ गई थी। बंधन की निष्ठुर यत्नना न सह सकन के कारण डिग्रूगढ़ के नरों के स्त्रुन में भरती हो गई थी। लड़ार् दिहने पर हस्पताल में काम मिल गया।

जब मैं स्वस्थ हाकर हस्पताल में निरला तो प्रमिला मरे साथ थी। उसका घर तिनमुक्किया के निरट था। बूढ़ी माँ का दोउबर घर में और भाई प्राणी नहीं था। मैं परजेबाई

बनकर रहने लगा। एक दिन माँ ने आपत्ति की। प्रमिला ने आपत्ति को अमान्य कर दिया तो बुढ़िया अपनी बड़ी बेटा के घर चली गई।

इस तरह वहाँ धीरे-धीरे मेरा एक छोटा-सा सघार बस गया।

अब तक मैं अघेड़ हो चुका था।

एक दिन बसगाड़ी में बैठकर पिताजी वहाँ आये। साथ में भाई भी थे। बसगाड़ी से उतरते समय आड़ी मछली का आकार धारण करती हुई उनकी सूकी कमर और उनके रोग ग्रस्त शरीर को देखकर मेरा हृदय व्याकुल हो उठा। प्रायः बीस साल बाद उन्हें देख रहा था। मैंने चरण-स्पर्श किया। उन्होंने मेरे मस्तक पर हाथ रखा और नामोच्चार करते हुए आशीर्वाद दिया। बोले—

“बधुराम, मैं तुम्हारा घर नहीं बसा सका। तुमने अपने आप ही बसा लिया। अच्छा किया। मैं आशीर्वाद देता हूँ। बहू कहाँ है?”

प्रमिला यादूर भाई। अपने असंग संस्कारों में पली वह एक स्वतंत्र विचारों वाली गारी थी। पिताजी को देखकर अभिवादन किया न आवर दिया। अविनीत भाव से दूर खड़ी रही।

यह अबहेसना मेरे भाई न देख सके।

चलिये पिताजी। आपकी बहू ने ममुप्य के माते भी आपका आनर-मत्कार नहीं किया। महाँ और नहीं ठहर सकते।

पिताजी हुडक-हुडककर रोने लगे। मेरी माँसँ भी शरने लगीं। हमारे छदन ने प्रमिला को तनिब भी न छुमा।

निर्विकार भाव से यह घर के भीतर घसी गई। पिताजी मुझ  
आशीर्वाद देकर गाड़ी में बैठ गये लेकिन माइयों ने अत्यन्त  
तिरस्कार से कहा—

“बपनिया”।

बैलगाड़ी घसी गई। मुझ में उन्हें वापस बुला खाने का  
साहस नहीं हुआ। बहुत दिन तक हृदय हूषता रहा। फिर  
पिताजी हम छोड़ गये। उससे कुछ पहले एक फोटोग्राफर को  
गाँव भेजकर उनका चित्र खिंचवाया था। कलकत्ते भेजकर उसे  
बड़े आकार का बनवाया और यहाँ, इस बठक में, टाँग दिया।  
यह चित्र आज भी प्यों का त्यों उसी स्थान पर टंगा है। मेरे  
अतिरिक्त उसका दूसरा कोई नहीं समझता है।

मैं उसी चित्र के सामने खड़ा था।

पिताजी प्रचान्त मुद्रा में तन्वाकू पी रहे हैं। हठात् ऐसा  
जगा जैसे मुझ से कह रहे हैं—

‘मुझे छोड़कर तुम्हें क्या मुल मिला बभुराम ? तुम ऐसे  
ही गये ? होसीराम भगत का घेटा परजैवाई बन गया !’

माँसों ने ठमकी वो बूँदों को मने घोती के छोर से पोंछा।  
चित्र को प्रणाम किया और कहा—

‘पिताजी एक चिन्तम और भर साजें ? पिपेंगे ? पी  
सीत्रिये पिताजी। आज आपके यड़े नाती रजत की शादी है।  
उम अश्रदा ओहदा मिना है। मने ता नायक ही यनकर अब  
बाग प्राप्न किया उसमे मुञ्च ही मँकण्ड सफिटनैन्ट से क्रिया

१ शक्तिमा—बपनिया में परजैवाई के लिए अत्यन्त तिरस्कार  
ग्रहण करे ।

है। हाँ पिताजी।'।

इसी समय वहाँ प्रमिला आ गई। वह बोली—

“बाह, यह उसके सामने फिर पूजा शुरू हो गई? हटाइये आज आँसू भरने का दिन है? ओरण के लिए तैयार हो जाइये। नहाने का पानी रख दिया गया है।”

मुझे कोप आ गया। मैंने कहा—

‘तुमने किसी दिन भी पिताजी का सेवा-सत्कार नहीं किया, प्रमिला। बेटा-बेटी तक को नहीं बताया कि उनका कोई दादा भी था। उसका जो परिणाम हुआ वह तुम्हारे सामने है। दोनों लड़के परलसी हो गये और लड़की एक चीनी के साथ भसी गई। विवाह का दिन हमारे यहाँ नौ पुरखों का धाढ़ करने की प्रथा भसी आई है। हमारी सन्तान अपने दो पुरखों को भी नहीं जानती है।

अच्छा ही तो है। प्रमिला के ब्यंग में चुभन थी। ‘इस स उमकी कोई क्षति नहीं हुई है। सन्तान के लिए अपन माँ बाप को जानना ही पर्याप्त है। क्या आप स्वयं मुझे नौ पुरखों का नाम लेकर लाये थे? कबहरी जाकर ही तो हमारा विवाह सम्पन्न हो गया था। बस रजिस्टर करके।’

“तुम क्या कहती हो प्रमिला? जिससे यह हाड-मांस पाया जिसका रक्त मेरी बमनियों में है जिससे यह प्राण पाया उसे मैं बिसार हूँ? कभी नहीं।’

प्रमिला चुप रही। आज विशेष दिन जो था। नहीं तो वह कहती—‘सदा यही सब सोचते रहते हो, इसीलिए तो रक्त-चाप बढ़ जाता है। जो भसा गया उसके पीछे इतना सिर

सपाना क्या जरूरी है ?'

ठीक है, किन्तु जो जीवित हैं क्या उनका मृत के प्रति कोई बसब्य नहीं है ? तो फिर क्यों वह गोष्ठी गोध पितृ पितामह-प्रपितामह—मनुष्य इन सब का क्यों स्मरण करते हैं ? क्या ये सब निरर्थक हैं ? मिथ्या हैं ? समाज का गठन कैसे होता है ? क्या वह उस भाषा को तरह नहीं है जिस स्मृतियों के अदृश्य सूत्र में बांध रखा है ? किन्तु—ऐसा मैं बराबर कहता मानता आया हूँ—प्रमिसा एक राखसी है । अपनी सन्तान के अतिरिक्त उस और किसी के लिए मोह-ममता नहीं है । पीहर के परिवार के साथ वह कोई सम्पर्क नहीं रखती । बस समाज के विरुद्ध एक भयानक प्रतिघात का भाव अपन अन्तर में पालती रहती है । क्या इसी समाज में उसे बिधवा नहीं बनाया था ? उसके माथे का सिद्धुर नहीं पोंछ दिया था ? ब्राह्मण-कुल में जन्म लेकर वह ब्राह्मणों के समाज का पथन नहीं मानती है । उसका भवशा, भवहलना करने में उस मुक्त-सत्ताप मिसता है । हमारा तो हिन्दू बछारियों का समाज है । इसमें किसी स्त्री को विधवा होने पर जीवन भर वैधव्य की यंत्रणा नहीं भोगनी पड़ती है । वह दूसरी बार हाथ पीन कर सजती है ।

मैं स्नान करके बसा गया । निभाया पानी था । हन कहते हैं—'बुढ़िया'—अडे की जरदी जितना गरम । तिङ्गी से अम्बुवर की धीत-सनी ह्या का शौंका आया । सूगे यौस जसा मेरा शरीर हो गया था । टूटी टांग में मांस का एक लापडा लट्टन आया था । गांव के एक बच्चे, मिट्टी के घर में मरा जन हुआ था । जब यद्दा हुआ तो निट्टी का दरस-परस

मरा जाना-महधाना था। उसकी सौंभी गंध मरी नाक में बसी हुई थी।

मैं विचारों में खो गया।

दोधव के चित्र उभरने लगे। वही रंग वही गंध। मुझे व्याद आया वह 'बुद्धान-जन' जहाँ आग जलाई जाती थी और जलती रहती थी। वह हमारे जीवन का केन्द्र-बिन्दु था। जहाँ मैं पिताजी के लिए चिसम भरता था जहाँ मांही मुझे गामिनी देती थी—'तू हीजे से मरे। जहाँ पिताजी हमें कहानियाँ सुनाते थे—बूढ़ा-यूढ़ी की कछारी कहानी, शंकर अनिरुद्ध की कहानी। कितनी घातें जानते थे पिताजी! अपने नगर की और समाज की घातें। महाँ, इस प्रदेश में कभी बारहमुइयाँ, मटक, खेतिया कछारी सोगों का राज्य था। उनके अवलोक भूगर्भ में छिपे हैं। उन्हें कौन खोदगा कौन खेगा कौन समझेगा? पिताजी और उन जैसे सोगों से ही तो हम उस युग का इतिहास जान सकते हैं।

वह बुद्धान-जन जहाँ एक दिन हमारे पूर्वज क्षराब बनाते थे और मूखर का मांस भूतते थे, वहाँ आज सबेरे से साँझ तक शोन मार मार-कीतन होता है। विवाहादि के अवसर पर बड़े-बूढ़े एकत्र होते हैं। कितनी मधुर स्मृतियों का आदान प्रदान होता है। इन्हीं सब घातों में तो जीवन का रस है। ऐसे मधुर खचन ही तो देहात के जीवन को एक सूत्र में बाँधते हैं।

१ बुद्धान-जन—जसम के देहात में, विशेषकर वहाँ के पहाड़ी क्षेत्रों में हर घर में एक स्वाम होता है वहाँ आग जलती रहती है। वहाँ के समाज का जीवन इसके चारों ओर केन्द्रित होता है।

और वह गाँव का घर—जो मेरा जन्मस्थान था, जिसके साथ हमारे पूर्वजों की स्मृतियाँ जुड़ी हुई थीं वहाँ वे रहे—वसे जहाँ उनका अन्तिम संस्कार हुआ—वहीं उसी घर में तो मेरी जड़ें हैं।

मैं अपने ऊपर पानी डालना भूल गया।

दरवाजे पर आघात हुआ। पत्नी का स्वर सुनाई दिया।

“बहा चुके !”

मैं चुप रहा।

“बालिम, क्या हुआ है आपका ?”

“कुछ नहीं।”

प्रमिसा ने फिर दरवाजा पीटा। रोज़ बह ऐसे ही दरवाजा पीटती है। स्नान के समय को मैं सदा अपना, निजी मानता हूँ। एकान्त। स्नानघर मेरा चिन्तनघर है। वहाँ मैं अतीस के साथ योगायोग करता हूँ। कपड़े पहनकर मैं ऐसा करने में अपने को असमर्थ पाता हूँ।

इस बार दरवाजे पर प्रबल प्रहार हुआ।

“मृतते है, प्रसान्त का पत्र आया है।”

“क्या सिगा है ?”

“याहर मायें तो घटाऊँ। बिना श्रीमुग देखे नहीं घटाऊँगी।”

गान्धि भग हा गई थी।

जल्दी जल्दी गरिब पर पानी डाला। अब तक ठंडा हो गया था। स्नान के समय पिताजी जा पाठ करते थे वही मैंने सीखा था। आज उसमें दोष का विघ्न पड़ गया। मुँह में एक



मेरा जाना-महघाना था। उसकी सौंधी गंध मेरी नाक में बसी हुई थी।

मैं विचारों में लो गया।

पौधाब के चित्र उभरने लगे। वही रंग वही गंध। मुझे याद आया वह 'जुहास-सन' जहाँ आग जलाई जाती थी और जसती रहती थी। वह हमारे जीवन का केन्द्र-बिन्दु था। जहाँ मैं पिताजी के लिए चिसम भरता था वहाँ माँही मुझे गामियाँ देती थी—'सू डूँडे से मरे। जहाँ पिताजी हमें कहामियाँ सुनाते थे—'यूड़ा-यूड़ी की बछारी कहानी शकर अनिरुद्ध की कहानी। कितनी बातें जानते थे पिताजी! अपने नगर की और समाज की बातें। यहाँ इस प्रदेश में, कभी बारहमुइमाँ, मटक, पेलिया बछारी लोगों का राज्य था। उनके अवशेष भूगर्भ में छिपे हैं। उन्हें कौन खोदेगा, कौन देखेगा कौन समझेगा? पिताजी और उन जैसे लोगों से ही तो हम उस युग का इतिहास जान सकते हैं।

वह जुहास-सन जहाँ एक दिन हमारे पूर्वज शराब बनाते थे और सूअर का मांस भूनते थे वहाँ आज सबेरे से साँस तक तीन बार नाम-कीर्तन होता है। बिबाहादि के अवसर पर बड़े-बूढ़े एकत्र होते हैं। किसमी मधुर स्मृतियों का आदान प्रदान होता है। इन्हीं सब बातों में तो जीवन का रस है। ऐसे मधुर जीवन ही तो देहात के जीवन को एक सूत्र में बाँधते हैं।

१ जुहास-सन—असम के देहात में विदेवकर वहाँ के पहाड़ी क्षेत्रों में हर घर में एक स्थान होता है जहाँ बाब बछती रहती है। वहाँ के मजाज का जीवन इसके चारों ओर केन्द्रित होता है।

और वह गाँव का घर—जो मेरा जन्मस्थान था, जिसके साथ हमारे पूर्वजों की स्मृतियाँ जुड़ी हुई थीं जहाँ वे रह-रसे, जहाँ उनका अन्तिम सस्कार हुआ—वहीं उसी घर में तो मेरी जड़ें हैं।

मैं अपने ऊपर पत्नी डालना भूल गया।

दरवाजे पर आघात हुआ। पत्नी का स्वर सुनाई दिया।

‘महा बुके ?’

मैं चुप रहा।

‘बोलिये, क्या हुआ है आपका ?’

‘बुद्ध नहीं।’

प्रमिता ने फिर दरवाजा पीटा। रोब वह ऐसे ही दरवाजा पीटती है। स्नान के समय को मैं सदा अपना, निजी मानता हूँ। एवाम्ब। स्नानघर मेरा बिल्लनघर है। वहाँ मैं असीत के साथ शौचालय करता हूँ। कपड़ पहनकर मैं ऐसा करने में अपने का असमर्थ पाता हूँ।

इस बार दरवाजा पर प्रबल प्रहार हुआ।

‘मूतते हैं प्रान्त का पत्र आया है।’

‘क्या लिखा है ?’

‘बाहर आयें तो बताऊँ। बिना झोमुम देखे नहीं बताऊँगी।’  
पान्ति भंग हो गई थी।

जन्मी-जल्दी घरीर पर पानी डाला। अब तक ठंडा हो गया था। स्नान के समय विरादो जो पाठ करते थे वही मैंने शौचा था। अब उसमें शीघ्र में विप्लव पड़ गया। मूत म एक

हाइ-डग<sup>१</sup> गीत आया। वेष्णव चोसे के भीतर मन मेरा अब भी निदधय ही कछारी था। बदन अगोख कर कपड़े पहने और बाहर आया। स्नानघर से निकलते ही लगा जैसे कि संसार के सारे संतापों ने मुझे आ घेरा हो। कौसी राक्षसी मूर्ति हैं, ये सताप। सोने के कमरे में जाकर कंधी की। आज प्रमिसा ने कमरे को नये ढंग से सजाया था। दीप में एन छोटी-सी मेख पर बुद्ध की प्रतिमा रखी थी। आप बुद्ध को मानते हैं? मैं नहीं मानता हूँ। कोई सैनिक नहीं मानता है। किन्तु बुद्ध की प्रतिमा से आज मुझे ईर्ष्या नहीं हुई। वह धान्त, समाहित मूर्ति मुझे बहुत प्रिय लगी। बुद्ध के समान बनने के लिए स्नानघर में मुझे कितने दिन बिताने होंगे किन्तु क्या फिर भी मैं उन जैसा बन सकूँगा? कह नहीं सकता।

“तैयार हो गये? प्रशान्त ने बड़ी भयानक बात सिखी है।”

अड्डी का कुर्ता पहनकर मैं बट्क में आया। एक सोपे पर बैठ गया। नीची गोम मेख पर तीन बेसि<sup>२</sup> के फूस रखे थे। इतने सुन्दर, जैसे कह रहे हों—

‘हमें देखो हमें देखो हमें देखते ही रहो।

मैंने एक को उठाया और घूँघ लिया।

प्रमिसा ठमक उठी। “क्या मुसीबत है। आप जानते हैं कितने जतन से ये फूस आये हैं बिमसा के घर से। रजत का बेसि के फूस बहुत अच्छे लगते हैं।

मैंने हँसकर कहा—

१ हाइ-डग—एक कछारी पीत।

२ बेसि—सूरजमुड़ी।

‘सच है, खेत का अच्छे लगते हैं। क्या मुझे अच्छे नहीं लगते हैं? उसने यह गुण मुझ से ही तो पाया है।’

‘तब ही ता हमारी बगिया में एक भी बेलि के पेड़ पर फूल नहीं मिनता है। आप कसी ही छोड़ सेते हैं। जब आपके हाथ में बेलि का फूल देखती हूँ ता मुझे नहीं मुहाता है।’

‘क्यों?’

‘आप को बेलि का फूल देखकर किसी और की याद आ जाती है। आप मुझे भूल आते हैं। यह मुझे असह्य है।’

फिर वही अकारण सदेह। जवानी की पहली उमर में एक सड़की से प्रेम किया था। उसका नाम था बेलि। वह विवाहिता थी। किसी बात पर पति से अनवत हो गई। वह घर नहीं आई। हम में कुछ परस्पर आकण हुआ। सहसा मुझे गाँव छोड़ना पड़ा। पीछे उसने एक बिहारी के साथ घर बसा लिया। एक पन्था के जन्म के बाद वह आदमी सापता हो गया। राजकीन पर मामूम हुआ कि वेग में उसका एक पत्नी थी। कारवार के निमित्त असम आया था। जो मो हो वह बेलि के लिए घर-द्वार, धन-शौतत राफी छोड़ गया था।

‘मैं स येसत हुए मैंने कहा—

‘बूढ़ी हो मर, बेलि तुम्हारी समपिन होने जा रही है। फिर भी तुम्हारे मन से संदेह नहीं गया है।’

प्रमिसा सज्जित हो गई। मुझ से ऐसा आवासन पाकर उसे सतोप होता है। यह संदेह का भाव मुझ अच्छा नहीं लगता है। पिता की तरह बॉल भी मरे लिए एक मधुर स्मृति बनकर रह गई है।

नौकर सत्तराम चाय रख गया। चाय दो रसगुल्ले। वह जामता है रसगुल्ले मुझे बहुत भाते हैं। रखते ही दानों गस से उतार गया।

पत्नी न प्रश्न किया—

‘छोटे बेटे की घिटठी नहीं सुनगे?’

चाय का घूँट भरते हुए मैंने कहा—‘कहो।’

‘कहो या पढ़ो? श्रीमती ने चुटकी सी।

घर की लक्ष्मी को समुष्ट देखकर मैंने कुछ अनुभव किया। कहा—‘पढ़ो।’

प्रधान्त्र सीमांचल के एक छोटे-से हस्पताल में नियुक्त था। डाक्टरों पास किये अधिक दिन नहीं हुए थे। काम की दृष्टि से यदि रजत मेरा उत्तराधिकारी हुआ था तो प्रधान्त्र अपनी माँ का। नायक का बेटा बना था सैकंड सैपिटनेट तो नर्स का डाक्टर। देखने-सुनने में भी रजत मेरी प्रतिमूर्ति था। मीठा वर्ण भरे उभरे गाल। डीसठौस भी बिलकुल मेरा जैसा था। रूप और भाविति में प्रधान्त्र स्त्रीवत् था तो रजत एकदम मर्द। विचार और व्यवहार में भी रजत मेरे अनुरूप था और प्रधान्त्र माँ के।

घरनी ने पत्र पढ़ना आरम्भ किया—

प्रिय स्नेहमयी माँ

यहाँ बर्फ पड़ रही है। कभी-कभी उत्तर से चीन की सेना के सूच के समाचार मिलते हैं। कोई कहता है चीन युद्ध के लिए तयार है, कोई कहता है चीन युद्ध नहीं करेगा। कह नहीं सकता क्या होगा।

पास ही हवाई जहाजों के उड़ान-उतरने की पट्टा है। सीमा पर तनाठ हमारे सैनिका से सम्पर्क रखने के लिए हवाई जहाज और हेलिकॉप्टर ही मात्र साधन हैं। बर्फ की छोट से जलो हुई पूव को देखकर मदानों की बहुत याद आती है। महीं हर चीज ऊँचाई को ध्यान में रखकर बनाई जाती है। हवा और सूझान के डर से साग भीषी छमा के मकानों में रहते हैं। सदियाँ बिफर रही हैं। १९५० के भूकम्प के बाद धरती अस्थिर-सी हो गई। एजिनियर एम कामर हा गये हैं जखे हैं नि अगर सड़कें बनाई भी गई तो स्थायी नहीं होंगी।

माँ तुमने मुझे पर बुझाया है। मैं नहीं आऊँगा। बड़े माई की दादी है फिर भी मैं नहीं आ सकूँगा। क्यों, यह तुम्हें जानने की जरूरत नहीं है। बस भगवान् जानता है। या फिर मैं। बहुत दिन हुए घर से निकसा हूँ। मन में बहुत घान्ति है। घर आकर अपनी और तुम्हारी सास्ति नष्ट नहीं करना चाहता हूँ।

बाप दोनों मेरा प्रणाम स्वीकार करें। पिताजी से कहना रक्तचाप के बारे में विशेष सावधान रहें।

बापका-

प्रणाम।

पत्र मुनबगर में विस्मित हा गया। मैंने पत्नी को ओर देखा। उसकी भाँपे मेरी ओर सगी थी। मैंने कहा-

“सड़क की दास में विसभुस नहीं समझा, प्रमिसा। यह प्रगांड बड़ा जड़निया है। उसका मन उड़ान भरता रहता है, भाव उठान भरते हैं काप भी उड़ान भरते हैं। बड़े माई की दादी में म

जाना उसके लिए अच्छी बात नहीं है ।'

प्रमिता का मुँह मसान हो गया । वहाँ छलछमा आई । स्पष्ट था, छोटे सड़के के पत्र से उसे गहरी ठेस पहुँची थी । किन्तु उपाय क्या था ? हमारा परिवार अपने सात पुरखों के संस्कारों की परिधि के परे था । हमारी कोई निर्दिष्ट गति नहीं थी । किसी के मार्ग आपस में नहीं मिलते थे । सब की विधायें असंग थीं । जैसा रजत सोचता था प्रदान्त के बिचार उससे भेस नहीं खाते थे ।

मैंने उठना चाहा । रजत को लेने जाने का समय हो रहा था । आधेई अभी तक नहीं लौटा था । उत्कण्ठा से मन में उचल-पुचल मची हुई थी । प्रमिता जड़बस्तु बैठी थी । आँसू सूख चस थे । किसी प्रकार की खेप्टा का ससण नहीं था । मैंने कभी उसे इस तरह अचल बटे नहीं देखा था । बेटे के विवाह के दिन उसकी यह अवस्था ! अचरज हुआ ।

'क्या बात है प्रमिता ? ऐसे कैसे बैठी हो ? कोई काम नहीं है । विमला को बुलाओ । उससे पूछो आधेई अभी तक क्यों नहीं आया ।

आप नहीं समझ सकते हैं मैं क्या सोच रही हूँ । इस विवाह के लिए राजी होकर मैंने भारी भूस की है । केवल आपकी बात रखन के लिए मैं मान गई । बेलि की सड़की सुनकर आपकी सारी विचार-बुद्धि लोप हो गई । एक घार भी आपने यह नहीं पूछा, सड़की कसी है ?'

इस आक्षेप का मैंने विरोध किया ।

'नारी-जाति सदा संदेही होती है । बेलि की सड़की देखने

मुने में अच्छी है और घर के कामकाज में पारंगत है । बेसि की प्रबल कामना है कि हमारे घर के साथ सम्बन्ध हो जाये । रजत भी बहुत दिनों से लड़की को पसन्द कर रहा आया है । सब दृष्टि से अनुकूल मानकर ही मैंने इस विवाह के लिए हामी मरी थी । तुमने भी ता कहा था सब ठीक होगा ।”

“किन्तु लड़की कँची है, यह आपने नहीं देखा ।”

“देखने को क्या था । जब से गोद में लेसती थी तब से अमला को मैंने देखा है ।”

“आप अब तक निरे बालक ही हैं । क्या आप नहीं जानते उसने बड़ और छोटे, दोनों भाइयों का एक साथ फ्रीसन की कोशिश की है ?”

“क्या ?”

“हाँ ।”

मेरे लिए नारी-चरित्र एक दुःख रहस्य है । मैं वहाँ से आप जाना चाहता था । जोरध के समय पर यदि स्वयं घरनी के मुँह से कन्या के चरित्र के बारे में एक बात सुने जायें तो उन्हें कौन सदागम, मद्र पुर्य निबिहार चित्त से ग्रहण कर सकता है । प्रमिता बच, कहीं क्या कहना चाहिये, यह भी नहीं जानती है । एक लड़की दो पुर्यों के प्रति आकर्षित हो तो भी यह निश्चित है कि वह पर तो एक ही बँ साब बसा सकती है । पुराणा की तिसात्तमा ने मुँद और उपसुद, दानों भाइयों से भये ही समान रूप से प्रेम किया हो किन्तु आज के युग में तिसात्तमा का नाटक रचना सरम नहीं है ।

क्या हुआ , प्रमिता ने टाका, “विमन्म गमन्म हो



गये ?”

“अब नये सिरे से सोच-विचार का समय नहीं है, प्रमिता !  
जैसा लड़के-लड़की का माम्य ।”

“लेकिन यह सब क्या हो रहा है, मैं नहीं समझ सकती ।  
अगर इस लड़की को लेकर दोनों भाइयों में मममुटाव हो गया  
तो उसका दायित्व मुझ पर नहीं, आप पर होगा ।’

सारा धोप मुझ पर लाकर निश्चिन्त हाना प्रमिता का  
स्वभाव है । मुझ में भी नीसकण्ठ की तरह गरस पीने की  
असीम क्षमता है । प्रस्तुत कार्य पूरा करने के लिए सारे सशय  
दूर करना मैंने अपना पहला कर्तव्य समझा । व्यक्ति और  
समाज के सामने हम जगहेंसाई का पात्र नहीं बन सकते थे ।  
मैंने निश्चय किया यदि बलि की बेटी तिमोत्तमा की भूमिका  
खेसना चाहती है तो उसे निफल करना होगा ।

मैं उठ खड़ा हुआ । हाथ में सिये बेसि क फूस की एक  
पल्लुड़ी धरती पर गिर पड़ी ।

“प्रमिता ये अब समझदार हैं । स्त्री और सम्पत्ति का  
कारण उनमें झगड़ा नहीं होगा ।

स्त्री और सम्पत्ति में समानता कम होती है भेद अधिक ।  
लड़की सव्चरित्रा न हो तो सर्वनाश हो जाता है ।

मेरे माथे पर बस पड़ गये । दुःखता से कहा—

“यदि प्रसन्नत अपन को सेवास कर बस तो कुछ नहीं  
होगा ।

मेरे संवर बेसकर पत्नी चुप हो गई । मैंने जोर से प्रमिता  
को आवाज दी । उस समय मैं बुनिया-जहान से नाराज था ।

मर्यादा हुआ मीतर गया। सार कथर छान डाले। कहीं विमला नहीं दिखलाई दी। नौकर लडके स पूछा। उसने कहा विमला को घर से गय देर हो गई। मेरा शेष छोटी तक पहुँच गया। इस घर में कोई व्यवस्था नहीं है। कोई किसी की आज्ञा आदेश नहीं मानता है। मैंने जोरण का बक्सा रखा। बुला पठा था। गहन-कपड़ बाहर रमे थे। बहुत ही साफ-बाहू है विमला और प्रमिता भी। अगर चीजों का ऐस सामन खोड दिया जाये ता जागी भी हो सकती है। भारत के सामान पर पूरा दो हजार रुप हुआ था। मगसा है हमारा परिवार में हर व्यक्ति एक एक के सामान है जो अनग अरनी कसा सं धूमठा रहता है। मयोग से मैं और प्रमिता एक ही कसा में पड़ गये और हमारा स्वामी सुख्य हो गया।

सुत्रापे में परिवार का सभेदकर मैं अपने लिए जितना एक मुसंगठिन आयय बनाना चाहता था वह उतना ही विधिधन होता जा रहा था। न जान कम इस इमारत की दीवारें और लमे ठह जायगे और मैं दब जाऊंगा।

बक्स का चीजें ठिकान से रखकर मैंने उबरन सगा दिया। गारी जान में रुवल आया घंटा रह गया था। आपेई पर बहुत प्राय आ रहा था। समय का इतना जान होत हुए भी वह अनी का क्या नहीं प्राया। कुछ दर और प्रतीसा की। बैठन म गया। यही प्रमिता एक पची पड़ रही थी। देर जाग कर दी।

पड़िय।

“पुन से पड़ने का धोरण नहीं है। किसने, कितने, क्या मिया है? तुम्हीं बर हो।”

“आवेई की है। उसे किसी विशेष काम से माक़ुम जाना पड़ा है। सिला है, हम स्वयं टैक्सी लेकर स्टेशन घने आये। वह जोरण में नहीं आ सकेया।’

‘उसका सिर। सब गड़बड़ कर दिया। अनाज्ञाकारी नहीं का। ये सब मुझे पेड पर चढ़ाकर जड़ काटेंगे।’

मुझे शास्त करने की कोशिश करते हुए प्रमिता ने कहा—

‘इस धक्कक में क्यों अपने को परेशान करते हैं ? आप तैयार होएँ मैं टैक्सी बुसवाती हूँ।’

प्रमिता खसी गई। शीमे में देखकर मैंने अपनी वेस्तनूपा ठीक की। चन्दन के बटन सगे फसे जामे में मेरा सीमा समा नहीं रहा था। मुठ के समय इस सीने मे अनन्त साहस था। लेकिन आज इसमें यह कम्पन क्या ? कदाचित् जो बाहर के शरीर घारी शत्रु से बटकर मोर्चा ल सकता है वह अन्तर के अमूठ शत्रु के समस अपने को असमर्थ अनुभव करता है। यह वह अकम्प्यूह है जिसमें अभिमन्यु प्रवेश कर सकता है बाहर नहीं निकल सकता।

हठात् सगा कि शीमे में से झाँकती प्रतिभ्याया का अंग अग मुझ से कुछ कह रहा है।

हाय की रँगसियों ने कहा—‘हम उपवासिन हैं, व्यसक्त हैं।’

सिर के सफ़ेद बालो न कहा—‘फम पक चुका है। हम उसके प्रतीक हैं।’

सैगड़ी टाँग ने कहा—‘वस अब और नहीं। यह सघप

समाप्त हो, यंत्रणा का अन्त हो ।'

माये की रेखाओं में कूटिल मुस्कराहट से कहा—'दिन का अवसान निपट है ।'

हृदय ने कहा—'मैं यह चाहता हूँ मैं यह चाहता हूँ ।'

वुद्धि ने कहा—'संयत हो संयत हो ।'

मैं लीमा हुआ दीशे के सामने टड़ा रहा ।

फिर सकड़ी टेकता हुआ बाहर धाया । अर्थ पर नये जूते धरमरा रहे थे । मैंने अपने से प्रश्न किया— मैं कौन हूँ !

'मैं ।'

'हूँ ।'

सामास, विद्वान् भरकर उत्तर दिया—

मैं, बयुराम मजुमदार—वर का पिता । अवकाश प्राप्त सैनिक और मद्र पुरुष ।'

ठंडी धमार का एक झोंका आया और सेठ के बदन को सिहरा गया । राजमार्ग वेड़ों की मोट के परे था । हाँ, सर्प रेखा-सी एक पगडंडी सामन थी ।

सहसा सेठ ने एक कोमल में मैंने सैनिका के एक दस्ते को दौड़ते हुए देखा । मन में धिन्ता जगो—'यह कहाँ से आय ? क्या वहीं युद्ध छिड़ गया ?' इतम में भीखर सड़का मागता आया । मेरे सामन न आकर, वह पीछे के द्वार से भर के भीतर चला गया । हो सकता है उसने मुझे देखा न हो । एक विद्यास जड़ी-बूटा के भीषे पड़ा मैं एक बीमा-सा लग रहा था । प्रकृति ने उस प्रहरी की तुलना में विलना दुद्र ! जोड़ी देर में मुना प्रमिता सड़क की भ्रमना कर रही थी । मैं निविपार भाव से अपनी

घड़ी देखता रहा।

गाड़ी स्टेशन पर पहुँचने में केवल दस मिनट रह गये थे। इतने में प्रमिता बाहर आई। बामो—

‘मुना आपन, एक भी टैक्सी नहीं है।

‘क्यों कहाँ गई सब ?

‘पढाई मुरु हो गई है।

तो वे सैनिक अभ्यास कर रहे थे ? अखबार न तो लिखा था मुझे ही विश्वास नहीं हुआ। विमला ने अपनी बुद्धता से कहा था—मुझ हान वाला है मेर ही मन ने स्वीकार नहीं किया। कदाचित् उसे आयेई स कोई सक्त मिसा हा। अब मरी सैनिक की सुप्त अम्नदृष्टि मजग हो उठी। यदि चीन के साथ मुझ आरम्भ हो गया है तो हमारे गुप्तचर निश्चय ही इस क्षेत्र में रहने वाले चीतियों पर कड़ी निगाह रखेंगे। विमला का पुसाकर चेतामा होगा।

मैंने प्रमिता से पूछा— ‘क्या विमला आई है ?

‘नहीं।

‘ता उसे बुसा भेजा।

प्रमिता तिनक उठी।

‘विमला आ जायेगी। आप रिक्शा पकड़कर स्टेशन आइय। रजत की घड़ी का समय हो गया है।

‘अच्छा मैं बसता हूँ।

मैं सड़क पर आया। भाग्य से सवारी छोड़कर एक रिक्शा सामने से आ रही थी। उसे राक सवार होठ हुए मैंने अपनी पस्टनी हिन्दी में भावना दिया— ‘बसो स्टेशन।’ हमारे बस-

मिया भाई रिबगा पर बहुत समय हिन्दी में बोलने की चेष्टा करते हैं। मैं भी हिन्दी बोल जाता हूँ। मेरी हिन्दी सुना में रबर सीली हुई है।

नयी धस्ती होते हुए रिबगा आग बढ़न लगी। नगर के मध्य तक पहुँचने से पहले मैंने कोई अखाधारण हस्तक्षेप नहीं देखी फिर उत्तमना के सक्षण नज़र आने लग। स्टेशन के पास पीछा पर भीड़ जमा थी। सामन की दुकान में दाबू मूरजमस बाह निकल रहे थे। उनके चेहरे पर गहरी चिन्ता घ्याण्ट थी। बगल में घर्मा का जसपाम-गृह था। चाय का छोटे-ठके ग्राहक भी में समाविष्ट हो गये थे। घर्मा के बैग उर्क आवाज़ें द-ब-ब शर गये थे। वे भीड़ से बाहर नहीं निकल रहे थे। रिबगा सड़क की पट्टी से मटो मटो थीं। उनके पास भीड़ के छोटे पर गहरे रंगना मल्ल हुए उषक-उषकपर भीड़ के बीच किमी बकुरा को देख रहे थे और उसे मृगत की कागिन ब-र-र-र थे।

वे जस ही भीड़ के पास पहुँचा मैंने मुला—

‘आमा हमारे हाथ से निकल गया।

कैसे रिबगा इन्चार्ट और पमे बुकाकर उतर गया। का कह रहा था—

‘तोमा की पीली का पकल हा चुका है। थानी मना मर-र-र रही है।

‘यह गबदर कहीं से मिली है ?’ मने बटार नाब से प्र-किया।

‘नेरिया म। मारागवाणी म।

घड़ी में देखा । बेड़ बज रहा था ।

इतने में गाड़ी की सीटी सुनाई दी । रजत की गाड़ी आ गई । खेड़ी से मीड भीरखा हुआ, रेम का पुस पार कर मैं प्लेट-फॉर्म पर पहुँच गया ।

गाड़ी रुकी । एक-एक करके सारे डिब्बे देखे । रजत नहीं दीखा । 'भूक गमा होऊँगा ।' एक ठार फिर एक छोर स दूसरे छोर तक भूम गया । नहीं रजत नहीं आया था । हृदय धक रह गया । 'रजत नहीं आया, क्यों ?

उस गाड़ी से और बहुत सैनिक आये थे । चेहरे पकान से मुरसाये हुए लेकिन आँसों में चमक । शरीर छुरेरे और स्वस्थ । उन्हें दस्तकर हृदय आत्मीयता के भाव से भर आई और करुण हो गया । उन सैनिकों में मैंने अपना अतीत देखा और वर्तमान भी । उनमें प्राय सभी रजत की आयु के थे । अन्तरतम से उन्हें आशीर्वाद दिया—

विजयी हो सदा विजयी हो मेरे बेटो !

मेरे बेटो !!

मेरा बेटा ।।।

एक टीस हृदय की वेप गई ।

मेरी आँसों के सामने आया—

घड़ स मडित एक क्रूर, ठडा सीमान्त ।

एक अजेय क्षति जो युगयुग से मनुष्य का आवाहन करती रही है ।

वह पवित्र भूमि,

बिन्दु वह मात्र भूमि ही तो नहीं है ।

वह तो भूमि पर रखा एक जाति की सम्पत्ता का, उसकी  
सायना का मन्दिर है

उसका मूल स्रोत है—

पिताजी या हरिनाम का पद गाते थे उसकी—

हमार असमिजा घरलीठ' की तरह

पवित्र और गम्भीर ।

उस भूमि उस मन्दिर की रक्षा के निमित्त ही मेरा रजत

रेस ने सीटी दी ।

सीटन का इच्छा हुई । मेरा हृदय मूल्य था । बोला शीरी  
का पतन हो गया । क्या रजत जीवित है ? कौन उतर देगा ।  
इतने में किसी ने पुकारा—

‘पिताजी !

‘कौन, विमला ?’

‘हूँ पिताजी ।

‘रजत नहीं बापा ।’

‘मैं जानती हूँ ।

‘डाला शीरी का पतन हो गया ।’

‘सिर्फ डोला ही नहीं, गिरिमाने का भी पतन हो गया और  
किसीपू का भी ।’

‘क्या ? तुम बीस मामूम ?’

‘मुझ आयेई ने बताया है ।’

‘आपई ने कहाँ से सुना ?’

१. बालीय—महापुरुषिना मन्त्रालय के अधिकारी ।



विमला ने मरे कान के निकट आकर फुसफुसाया—  
'पीकिंग रडियो में।'

'झूठी खबर है। पाशु का रडियो तुम लोग क्यों सुनते हो ?

विमला ने सयत भाव से कहा— 'इसके बारे में आपसे बात करूँगी। मैं न मूर्ख से आपका वापस ले आने का कहा है। रजत का मार आया है।

'रजत का सार ? क्या मिला है ?

लडाई के कारण छट्टी रह हो गई है। विवाह पीछे हटाने को लिखा है।

है।"

धीरे-धीरे रक्त का पुल पार किया। उन महापाम का मापण अभी जारी था। ऐसे दोस्त रहे थे मानो तत्क्षण युद्ध क्षेत्र से आये हों। अब अफ़वाह का बाजार गरम था ता कान कब तक बन्द रह सकें हैं। सच को झूठ और झूठ का मस बनाकर हृदय में आतंक पैदा करने वाली इस टायन से संकट के समय यदि मनुष्य दूर न रह सके तो महाविपत्ति निश्चित है। मेरे सैनिक हृदय ने मन ही मन ऐसे लोगों को अमिशाप दिया।

मैं धर पहुँचा। मुझ देखते ही प्रमिमा घिसलने लगी। 'जैसे भी हा मेरे रजत को माझा।' पिछले पल्लवाड़े बराबर उसकी भाँस फड़कती रही थी। शुभस पक्ष में बाहिनी भाँस का फड़कना अशुभ होता है। रात रात वह दुःस्वप्न देखती रही है। मारकाट और रक्तपात।

मैंने कहा—

'बेलि को खबर भेज दो। विवाह टल गया है।'

'टल गया या पीछे हट गया?' औसू पोंछते हुए प्रमिला ने प्रश्न किया।

'टल गया यानी पीछे हट गया एक ही बात है।' खली प्रमिला बेलि से कह आये।

प्रमिला न उत्तर दिया—

'मैं नहीं जाऊँगी। आप ही जाय। घर का सारा काम यग है।'

अच्छा विमला तुम माँ के पास रहो। मैं बेलि के यहाँ हा कर आता हूँ।

मूख इस रहा था। आकाश में काले बादल छाये थे। ऐसा प्रतीत हुआ मानो उनके पीछे से आयेई की जैसी दो छोटी, तिरछी आँके पृथ्वी को घूर रही हैं। मेरी चाल में तेजी आ गई। पैर की ठाकर स सड़क के कंकड़ उछलते और साथ के मासे में जा गिरते घटनाओं के आघात से थोटे भाप ध्यक्ति के समान। समय समय आ गया था। मैंने मुठ महापुठ देखा था किन्तु यह मुठ उससे वहीं अधिक अनिष्टकर हागा। यह एसा था जैसे एक ही माहृष्य के दो घरों में भीषण उन्मान हा जाये। वे अबाद हो जाते हैं।

बेलि का घर काफ़ी दूर था। चाय बागान के बीच से निकल कर, दक्षिण दिशा में छोटा टिगराई के निकट वह रहती थी। पड़ोस में दो चार परिवार बसते थे। रास्त में बागान के कुछ बायू और मजदूर मिस। वे फाम से सीट रहे थे। धमि क दर-वाजे पर पहुँचकर मैंने मुना कि मोतर कोई 'सतक-विसनर

रो रहा है।

मैंने पुकारा—'वेसि वेसि।

घर से कोई उत्तर नहीं आया। मेरी आवाज दीवारों से टकराकर एकाकी लौट आई। कियाड़ को धीरे से टेसकर घर में प्रवेश किया। मन में घेर्चनी थी। सामने एक सुन्दर सलोनी सड़की मुट्ठी से माथा ठोक रही थी। मैंने उस आँख भरकर देखा। इतने में मुझे आँसी आ गई। मैं उसे दवा नहीं पाया। सड़की ने धौंककर मुझे देखा और रोना बन्द कर उठ खड़ी हुई।

मैंने पूछा—'वेसि कहाँ है ?

'स्नान को गई है।'

मैं कुछ वर मौन रहा। फिर जब उससे कुछ पूछना चाहा तो मैंने देखा उसकी आँसों एक चित्र पर सगी थीं। समझने में देर नहीं लगी कि वह क्या देख रही थी। हाथ की लकड़ी पर अपना पूरा भार डालकर, मैं ठूठ-सा खड़ा रहा। मेज पर रजत का चित्र रखा था। वह वहीं में नहीं था, किन्तु एक आध्यात्मिक आभा से उसका मुख उद्दीप्त था।

अमला चित्र को देखती रही, एकटक देखती रही।

फिर बोली—

'बैठिये।'

उसके स्वर में इतनी कदना और मिठास थी कि मेरा हृदय प्रवित्त हो गया।

अमला को सांत्वना देते हुए मैंने कहा—

'रोती क्यों हो बेटी ? मैं बूढ़ा भी धीरज धरे हूँ। रोमो मत

समझना, रोमो मत !'



## दूसरा भाग

और फिर अकस्मात् एक दिन सारा नगर एक भयानक आतका से भर गया।

रेडियो पर और समाचारपत्रों में उत्तर-पूर्वों सीमांचल में हमारी सेनाओं के अनेक चौकिमाँ छोड़ने के समाचार आये। हमारे सैनिकों के पीछे हटने के समाचार मेरे और परिवार के लिए असह्य थे। कारण, हमारे दो पुत्र मोर्चे पर थे। उनसे या उनकी कोई सूचना कई दिन से नहीं मिली थी।

देरते-देरते रजत का विवाह स्वर्गित हुए एक महीना भीत गया।

जाइ के दिना में मेरा दाँसी का कष्ट और बढ़ गया था। फिर भी, उसे भुसाकर, घर-द्वार छोड़कर नगर में आने वाले अपने पर्वतीय माइयों के सेवा-सत्कार में मैं जी-जान से लग गया। बेलि के घर के निबट अवस्थित एक कम्प में प्रमिसा, विमसा अमसा और मैं—हम चारों नियमित रूप से काम करने लगे।

नवम्बर के एक दिन, ठीक तिथि मुझे स्मरण नहीं, मबेरे उठार मैन मिक्कर' का दिव्या निवास था। प्रमिसा प्राय

१ मिक्कर—कसम में यह शब्द प्राय तम्बाकू के लिए प्रयुक्त किया जाता है। उत्पत्ति शायद कॅम्पटेन टूर्बको मिक्कर के बन्धित शब्द से है। मिक्कर और तम्बाकू पर्यापवाची शब्द मये हैं।

बना रही थी। इतने में बेलि भागती हुई आई। साँस पड़ रही थी। अन्तर का उद्वेग बेहूरे पर अकित था। कपड़े भी मले-मूम थे। जो घर में पहन थी उन्हीं में बसी आई थी।

“क्या हुआ बेलि ?”

बेलि की आदत है वह मर सामन बैठती नहीं है। घरसों चपटा करके भी मैं उसकी यह आदत बदलन में असमर्थ रहा हूँ। लेकिन उस दिन बिना कहे आप ही माँदा खींचकर वह घम्म से विस्तर गई। मैं समझ गया अक्षय ही कोई गम्भीर बात है।

मैंने मिक्कर को लपेटकर सिगरेट बनाया और मुह से सगाया। मैं जानता था बेलि मेरा तिरस्कार करेगी। वह नहीं चाहती है कि मैं सिगरेट पीकर अपने दमे के विकार को उल्टा बना दूँ। अपने हृदय के एक छोटे से कोने में मेरा प्रति बेलि ने अब भी स्नेह संजो रखा है। यह रहस्य मेरा अतिरिक्त और कोई नहीं जानता है।

साँस थमने पर बेलि ने कहा—“कोई सूचना संकेत मिला ?”

“किसा ?”

“आधेई के बारे में।”

“क्या बात है ? स्पष्ट कहो।”

“सबको आधेई पर संदेह है। हमारा पड़ोस व नीबवान राय से मरे हैं।”

“क्यों ?”

‘कहते हैं वह बीनिमा का गुप्तचर है।

‘यह मिथ्या आरोप है। आर्षद्वै का म बरसा स जानता हूँ।  
उपना जन्म यही हुआ है।

‘अभी जानेदार उबर गया था। मैंने कर्म्य म मुना है, आर्षद्वै  
के नाम परवाना है।

‘सब ?

‘हां।

‘बह तो हो सकता है कुछ भयट घट गया हा। विमला भी  
भार-मौष विन से महीं आई है।’

‘उसी ने मुझ यह संदेश देकर भेजा है। उसम आपकी एक  
बार बुलाया है।

‘मुझ बुलाया है ? निरक्षय ही कोई गम्भीर बात हागी।

मैंने प्रमिता को पुकारा। वह भाव लकर आ रही थी। वसि  
की चेष्टाकर खौकी। मन म खीझो भी हागी। मने छार विमा है  
बह मुझे एकान्त में बेसि के साथ बात करत नही दख सकती है।  
स्त्री-मुसम ईर्ष्या है, मीर क्या।

‘बहा समझिम इतन सबेर-सबेर।’ उसके स्वर म तीला-  
पन था।

बेसि ने विनम्रता से उत्तर दिया—

‘हां, आप लोगों के ही काम से आना हुआ है।

‘बाप का प्यला मत हुए मने बड़ा—‘प्रमिता गरम पानी  
मिलेगा ? मुझे आर्षद्वै के जाना है। विमला न मुनाभा है।

प्रमिता ने प्रतिवाद किया। ‘इतन सबरे मन्हाकर टह म्या  
आवेंगे। विमला ने बुलाया है तो कर्म्य जाते समय हाते आवें।

बना रही थी। इतने में बेसि भागती हुई आई। साँस पड़ रही थी। अन्तर का उद्वेग बेहरे पर अकिस था। कपड़े भी मैंसे-मुम थे। जो घर में पहन थी उन्हीं में बसो आई थी।

“क्या हुआ बेसि ?

बेसि की आदत है वह मेरे सामने बठती नहीं है। बरसों पण्टा करके भी मैं उसकी यह आदत बदलन में असमर्थ रहा हूँ। लेकिन उस दिन दिना कहे आप ही मांवा खींचकर वह धम्म से बिस्तर गई। मैं समझ गया अवश्य ही कोई गम्भीर बात है।

मैंने मिन्चर को सपटकर सिगरेट बनाया और मुह से सगाया। मैं जानता था बेसि मेरा तिरस्कार करेगी। वह नहीं चाहती है कि मैं सिगरेट पीकर अपने दमे के बिकार को उस बना दूँ। अपने हृदय के एक छोटे से काने में मरे प्रति बेसि ने अब भी स्नेह सँजो रखा है। यह रहस्य मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं जानता है।

साँस बमने पर बेसि ने कहा—“कोई सूचना संकेत मिला ?

“कैसा ?”

“आपेई के बारे में।

“क्या बात है ? स्पष्ट कहो।

“सबको आपेई पर संदेह है। हमार पडीस क नीबवान राप से मरे हैं।

“क्यों ?”

‘कहते हैं, वह बीनिया का गुप्तचर है।

‘वह मिथ्या आरोप है। मापई का मैं घरसो स जानता हूँ। उसका कर्म नहीं हुआ है।

‘जमी बानेदार उधर गया था। मैंने कर्म मसुता है आबेई के नाम परबाना है।’

‘सच ?

‘हाँ।’

‘वह तो ही सचता है कुछ भयट घट गया हो। बिमला भी चार-पाँच दिन स नहीं आई है।’

‘उसी न मुझे यह संदेश देकर भेजा है। उसने आपको एक बार बुलाया है।’

‘मुझे बुलाया है ? निदरघम ही कोई गम्भीर बात होगी।

मन प्रमिता को पुकारा। वह धाम लेकर आ रही थी। बेवि का दमकर धौंकी। मय में लीसी भी हागी। मन प्रार किया है वह मुझे एकान्त में बेलि क साथ बात करण नहीं देल सक्ती है। स्त्री-मुसम ईप्पी है और क्या।

‘कहा समधिन, इतन सवरे-सवरे।’ उसके स्वर म सीला-पन था।

बेलि ने बिरभ्रता से उत्तर दिया—

‘हाँ, आप भोगों के ही काम से अन्तर हुआ है।’

बाय का प्यासा पते हुए मने कहा—‘प्रमिता गरम पानी मिसेपा ? मुझे आबेई के जाना है। बिमला ने बुलाया है।

प्रमिता ने प्रतिबाद किया। ‘इतने सवरे नहाबर टंड का जायगे। बिमला ने बुलाया है ता कर्म जात समय हाते धामें।’



आप भाग घात करें। समझिन, घाय के लिए अवर आखोगी ?”

प्रमिला के कटाक्ष पर बेसि मुस्कराई और भीतर जाने को प्रस्तुत हुई। मैंने कहा— ‘प्रमिला, तुम भी खूब हो। बेटे की बहू लाने योग्य हो गई थीर इसना धीरज नहीं कि घात भी पूरी सुन सको।’

‘तो क्या हुआ है ? कहते क्यों नहीं ?’

‘आपेई के नाम वारंट निकसा है। इसलिए बिमसा ने बुसाया है। अब समझीं बेसि छतने सबेरे क्यों भागी आई है।’

प्रमिला सुनकर स्तम्भ रह गई। फिर व्याकुल भाव से बोली—

‘तो फिर देर क्यों कर रहे हैं ? तैयार क्यों नहीं हाते ? जस्दी जाइये।’

प्रमिला बेसि को लेकर भीतर घसी गई।

मुख्य द्वार से प्रवेश करके मुठ हमारे घर में था गया था।

मैंने जस्दी से घाय पी। और दिनों की अपेक्षा, समय से पहले पिताजी के चित्र के सामने लडा हो उसे प्रणाम किया। पिछसी राठ चित्र के ऊपर एक जाला तन गया था। हत्के हाथ से उसे हटाया। स्नान-घर में अपन ऊपर सपठा पानी उडेली। महीने भर की भाग-बीड से सरीर में एकान हो आई थी। अग प्रत्यग में शिथिलता भर गई थी। इस देह के साथ यह वश भी समाप्त हो आयेगा यह बिचार मन में कौष गया। मैं जड़ से हिम उठा। कौन जाने ? एक महीना हो गया था। रजत का कोई समाधार नहीं मिसा था। जो सैमिक उस क्षेत्र से बचकर आये थे उनसे भी नहीं। किसी ने रजत को नहीं

देखा या। तो क्या—तो क्या वह मारा गया? छि छि मैं क्या सोचता हूँ? नहीं, यह मरा नहीं है। मरता तो अवश्य सूचना दी जाती। मैंने सनिक विभाग का भी लिखा था। अब तक कोई उत्तर नहीं मिला था। यही आशा मैं प्यार से इन्त्य म र्त्तियों के वा कि वह पीठ आयेगा। सड़की का अंगूठी पहनाई का खुलने है। बिबाह होगा। मरने की रंगा होगी। अब मर नहीं सकता है।

प्रमिया दिन-रात प्रणाम का चिन्ता करती है। प्रणाम क मरने का मुझे बार्ड मय नहीं है। वह भी मैं का खेदा है। उमम मेरी सनिक प्रवृत्ति नहीं है। उम पर वह डाक्टर है पहली पति से बही दूर। मुना है धामों के आसपास घमासान घुड़ हा रहा है। हमारी सेना न कई बार आनिया का मुँह फा दिया है। प्रणाम गीली क सामने रहा पड़गा। उमम पहल ही उमम पर उमम जायें। विन्नु रबत निनों क है दृढ़-मन्त्र है साहसी है—बसा हमारे कछारी जवानों को जाना आश्रित। वह जान हूँसे पर मिये किन्ता है। इसीलिए मुने उममो अधिक चिन्ता है।

प्रमिया मरवावा पीरते का वहा— 'मिने बहा निरालन का समय नहीं हुआ ?

हाँ-हाँ हो गया। आया।

'तब दूरी कापा को बब तक ममाय ?'

मिने मुना, माहर बेनि कह रही थी—'गपपिन आर मा मूम है। मया बोर्ड मेमे कहता है ?

तो क्या कर ? स्नामप म आन है ता न जाने — क्या

हो जाता है। वहीं क हा रहते हैं।

प्रमिता को खुटकी मुझे मीठी सगी। यह असत्य नहीं है कि मुझ अपने आप से बहुध अनुराग है। साथ ही संसार क प्रति मुझ में एक गहरी वितुष्णा है।

स्नानघर ही मेरा नामघर' है।

मैं बाहर निकसा। धोती-कुर्ता पहना और छड़ी लेकर घसने को उद्यत हुआ। बेसि न प्रस्ताव किया—

"मैं भी बसू आपक साथ ?

पर-स्त्री क साथ रिक्शा पर बैठकर निकलना बिपत्ति को म्यौता देना है। छोटे-से कुस्वे में अफ़वाह डायन एक त्ति में सहस्र सन्तान जनती है। ऐसी डायन से नहू मगाने का मेरे मन म कोई भाव न था।

मैंने उत्तर दिया— 'तुम ठहरा बसि। इनके साथ आ जाना। और हाँ प्रमिता सुना।'

'क्या ?'

'इन लोगों को किसी त्ति भास जाने म बुलायें ?'

'हाँ सोचती हूँ सड़की का भी घर मे पाँच पड़ जायेगा। इतबार को न कह द ?'

'ठीक है।

मने बेसि को आँख भर क देखा। उन में पुमक की एक लहर दौड़ गई। लण भर को नई अवाती के धीले दिन स्मरण हा आय। उन दिनों बैसागु पर बेसि नुनी मधुमी रात के

१ नामघर—जीवन या पूजा का स्थान।

२ बसागु—बाढ़क बिट्टू असम का एक बड़ा रबीहार।

वासी भात और सामा-पानी से भूमि पर आसन बिछाकर, मेरा सुस्कार करती थी।

प्रमिला ने यद्यपि एक कछारी से विवाह किया था लेकिन अपने स्नानपान में वह बाह्यणी सुस्कारा से बंधी रहती थी।

नगर में जहाँ-तहाँ सेना का समावेश था। तहाँ के साथ द्रुकों और सारियों का अधिकरण किया जा रहा था। इन्द्रवर सांग शर्मा के जलपान-जुहू में विभाम कर रहे थे। भाग्य पर मरोसा कर के तबू भाग थे। तबू के उत्तर में सेना का कुम्भक पकवाने की व्यवस्था की जा रही थी। उनक बेहूग पर मन्ना था। दण्ड के लिए वे मन बचन और कम से आन-सुनपण कर चुके थे। उनको सफलता के लिए मैन मन ही मन प्रार्थना की। ऐसी प्रार्थना हमारे नगर और राज का हर व्यक्ति कर रहा था।

इतने में साठहम्पोक पर मुना काई छदकें गोपन का आदेश ब रहा था। नागरिक प्रतिरमा समिति का काई सदस्य हागा। कुछ और पद भी जान में पड

बिम्बा की कीमतें न बढ़ाये। व्यापारी बर्ग से अनुरोध था।

राज के गुप्तधर्मों से सावधान रहें। जिन पर सुन्हे हा उन पर कड़ी निगरानी रखें। पचन बाहिनो से सतर्क रहें। जैसे मायई के पिरर सचेत बनन का दमवालों हो रही थी।

मैन रिस्कावाय से जल्दी खानान का आग्रह किया। फिर

१. साधो-सागी—बाह्य की पदार्थ या शरीर के गुण से बाहर बनाई जाती है। शरीर को अक्षयिमा भाषा में पानी-टांगी कहते हैं।

मी आयेई के घर पहुँचने तक मूरज काफ़ी चढ़ गया था। घड़ी देखी। पूरे नौ बजे थे। चाय बागान में छोकरियों ने पत्तियाँ तोड़ना आरम्भ कर दिया था। कारखानों में मशीनें चलने लगी थीं। धातु लोग काम पर पहुँचने के लिए घर छाड़ चुके थे।

बागान से कुछ परे आयेई की लकड़ी काटने की दुकान थी। दुकान के पास ही यासा था—बल्लियों पर घना हुआ फूस की छत का एक नीचा खँगला। मन देखा, फाटक के भीतर पुलिस थी। पास में, पड़ीस के मौजवानों का एक झुण्ड घर पर उत्सुकता से नज़रें जमाये था।

जैसे ही मैंने फाटक में प्रवेश किया पुलिस के सिपाहियों और मौजवानों ने कुसुहल से मुझे देखा। मेरी आँखें नीची हा गईं। मुझे भय हुआ, आयेई से कोई गुस्तर अपराध हो गया है।

मैं सीधा बैठक में गया। वहाँ कोई नहीं था। सामने का कमरा देखा। वह भी खाली था। उसे पार कर सोने के कमरे में बन्द दरवाजे के सामने खड़ा होकर मैंने मुनन की चेष्टा की। ऐसा आभास हुआ कि भीतर कोई है। फिर हल्का-सा सन्द्रानों में पड़ा। दरवाजे पर धीमे से दस्तक देकर कहा—

‘बिमला, दरवाजा खोलो।’

पहली बार उत्तर न पाकर अधिक आग्रह से कहा—

‘बिमला!’

‘कौन?’

‘मैं तुम्हारा पिता।’

हरबाबा खुला । विमला सामन खड़ी थी । बेहरा पीसा हा गया था बहुत पीसा । भाँचें लास थीं और भारी । रात रात भर नहीं साई थी ।

“क्या बात है विमला ?”

‘सबेरे से पुमिस ने पहरा डाल रखा है । कस कुछ सड़ने आये थे । उन्होंने हम पर खूब ठान कस अपराध कह ।

‘क्यों ?’

“बीन क विरुद्ध अपना शोध प्रकट करन उनके पास आये थे ।”

‘यदि य लाग देग के नाम पर कसक लगायेंगे । क्योंकि आवेई बीनो है इसलिये बीनी सरकार का सारा शोध उस पर नड़ा जाव । यह अनुचित है ।”

विमला उठोप्य हा उठा । बोली— इनका अपना भी दाप है ।

कसा शोध ?”

बीरव का नाठ गात्र है और पाण्डव का गुण गात्र है ।

मन कुछ नहीं कहा । धन्दर गया । आधई बिम्ब पर सेठा था । बाजल-बान उनक बग थे बीर बीर उज्ज्वल बग । मिर बड़ा और ध्यान, गरीब इकट्ठा कसन पतनी सिन्धु छाती गटी हँ और पुष्ट । कुम मियातर एह गानाय ध्वनिम्ब ।

बह गाल निम्बन नाथ म मटा था । मने बनर में पारा भात नुष्टि दासी । गोपार पर बीनी बग म एक तरगी का थिय था । मेठ पर धारा की छाटी बानल और मूमर क सोम का निम्ब । गानगे में बीटा-छरी । पाम की दुसों पर दा

चीनी पत्रिकायें । मैं अक्षर नहीं पहचानता । एक और कुर्सी पर ऊन और दुनाई का सामान ।

‘क्या दुनाई हो रही है ?’

‘असौं ।

‘किस के लिए ?’

‘जवाना के लिए ।’

विमला का उत्तर कानों को प्रिय लगा । एक चीनी के साथ रहकर मा उसने अपने वेश को नहीं गुना दिया था । हाथ में उठाकर उती की जाँच करते हुए मैंन कहा—

‘क्या और मोटा नहीं होना चाहिये था ? रजत आदि बहुत ऊँचाई पर लड़ रहे हैं । हिमालय की पीठ में हड्डियाँ तक ठिठुर आयी हैं । और मोटा ऊन हाता नहीं तो बाहरी दुनाई ।

विमला ने सहसा प्रश्न किया—

‘पिताजी क्या सब हमारी सेना चीनियों के सामने लड़ी नहीं हो सकी है ?’

‘कौन कहता है ?’

‘आपेई ।

भरी आँसुओं के डारे माल हो गए । ‘डाकू अचानक घोड़े से घर में घुस आए तो उसे निकाल भगाने के लिए घर वाले का तैयारी करने में कुछ समय लग सकता है । आपेई झूठ योसता है । पीछे हटने का अर्थ सच्चाई से मुँह मोड़ना नहीं है कभी नहीं ।

‘मैंने भी यही कहा था लेकिन पिताजी

‘क पया गई विमला ? लेकिन क्या ?’

‘यदि सब कहें तो आपको चोट पहुँचेगी ।’

“वही भी विमला । यह व्यक्तिगत भावनाओं के मुख-दुख की चिन्ता करने का समय नहीं है । हमें कटोरा यथाथ सदा धार होना है ।”

“आजकल य शेरु माकुम आत-आते हैं । कामकाज करना छोड़ दिया है । घागान के साहस न एक दा बार तगारा भी फिया सेविन के इनसे काम निकलना नहीं सब । क्या करने जाते हैं, मैं नहीं जानती । देर रात गए आते हैं ।

“हा मकना है उसे भीतर बाई इन मना रखा है ।

“पहले सा मैं भी ऐसा ही मोषनी थी पिताजी सेविन उनके हाथमाय हमके विपरीत हैं ।

सदैह या साभ आयेई को दते हुए मैंन कहा—

“हा मनसा है किसी दुखिन्ता क कारण एमा हो गया है ।

इस समय धीनियों पर कोई विद्यास नहीं करता है । अब तप आयेई गिरफ्तार नहीं हुआ है यही यके नाम्य को बात है ।

विमला न निपट जाकर लटे हुए आयेई का दगा । उसका साथे यद थी । सायन सो रखा था । मैं अबकल म था कि पति पत्नी के बीच एमा अबिदयाम मैंने पंश हा गया ।

आदयम हापर विमला मर पास आई । उनन कहा—

“पिताजी माइने, बटन में गले । भापन दान करती हैं ।

हम बटन म आय । विमला मराही की कुर्मी पर बठ गई, मैंन माफ्रे पर पर फमाय और जेय म मिक्कर की युक्को निकाली । उन समय मैं महानायक ग या फन्सी पुराण—  
गम्भीरतम हा या अस्पन् उपहास्यग्रं बर्मी जी वाठ मुनन का

१ मरानाय हो या चैदनी पुगल—एक भागिना मुहाय्य ।



तयार था ।

विमला बोली—

बिम्बान मानिण पिताजी वे इस देश का नागरिक नहीं हाना चाहते हैं । इतने दिन बाद आज उन्होंने बिसकुस स्पष्ट और अन्तिम रूप से कह दिया है ।’

मिने सिगरेट सुनगाते हुए पूछा—

‘उसका जनम यहाँ असम में हुआ है । वह यहाँ का न हो कर कहीं का नागरिक होगा ?’

‘मुझे कहत आज भाणी है पिताजी । साम्यवादी चीन ने उसी साल जन्म लिया था जिस साल हमारे घादी हुई थी । उसी समय से उसका मन बदल गया है ।

हूँ ।

आप जानते हैं अब तक आपको किसी नाती का मुँह देखना क्यों नसीब नहीं हुआ ?

वात कहत-कहते बिमला भी आँसुओं से आँसू ठमकने लगे ।

विमला के सन्तान न ज्ञान की खर्चा प्रायः हमार घर में होती रहती थी । मैं सोचा था आज के परिवार नियोजन क युग में इस आधुनिक दम्पति का जल्दी सन्तान का वाँछा न होगी । तबिन मैं के मन में आगरा थी ।

मिने पूछा—‘क्यों ?’

वे कहते हैं मैं अब तक चीन का नागरिक नहीं बन जाऊँगा सन्तान न होगी ।’

‘आपई ऐसा होगा इतनी मैंने कभी कल्पना न की थी । बिबाह करम से पहल तुम्हें सावधान हाना चाहिये था ।’

विमला कुछ क्षण चुप रही। फिर सघत होकर बोली—

‘रजत के आरण के दिन ही मुझे इनके असली रूप का ज्ञान हुआ।’

‘क्या ? हाँ-हाँ उस दिन तुम में दवे दवे कुछ कहा-सुनी का हो रही था।’

‘उस दिन बाबा और किन्हीपू के पसल की चर्चा करते हुए इन्होंने कहा था कि गायद बिना खोल गए मही खीन का मागरिक बन जायेंगे। मैंन बहुत बुरा मना कहा था।’

‘भूल।’

‘भूल नहीं पिताजी, सतु।’

‘इसने बार में और कुछ भी पता चला है ?’

विमला उठा और आयेई का भाँका। उसने अभी तक पत्रबट भी न बन्सी थी। मरे पास कुर्मी लीककर बठत हुए घीमे स्वर में उसने कहा—

‘शानदार कह गया है कि आज या बल में इनकी गिरफ्तार तारा होगा।’

‘बुढ़-बाल में प्रतिभंग के नागरिक का गिरफ्तार करना बय माना गया है। मदहू हाने पर भावई का पकडा आ सरना है।’

‘पिताजी यदि अन्तत यह चीना गुप्तचर निफल का मुक्त फार्द आप्पय न हागा।’

मरा धरिंर गरम पानों की तरह उबल रहा था। आयेई के गुप्त पाय के बार में जानने का मैं ध्यग्र हा उठा। पूछा—

‘क्या तुम्हें उगा गुप्तचर हान का दाई विरसनीय

प्रमाण मिला है ?”

चार दिन हुए ये बहुत पीकर घर आए । पहल ता बूब हँस-हँसकर बीन की विजय की बात करते रहे फिर एकदम ढहाका मारकर बोले—विमला तुमने सुना माकुम मैं एक ट्रान्समिटर मिला है । मैंने कहा—माकुम के ट्रान्समिटर का समाचार तो अक्सर मैं भी छप चुका है । जससे क्या हुआ ? आप तो रोज उस आत्मी के घर जाते हैं । उस दिन भी वहीं से साटें ।

भ्रम का घुंघ मिटने लगा था । मैंने चुपचाप सिगरेट खत्म की । वैसे हुए टुमड़ को भरती पर फेंक कर से मससते हुए कहा—

‘तुमिस को खबर देनी होगी । ऐसा आचरण विपत्ति जनक है ।

एक फीकी मुम्कराहट विमला के चेहरे पर खेल गई ।

‘मैं बानेशान को सब बता चुकी हूँ । जहाँ वेद की रसा थीर उसके सम्मान का प्रपन है वहाँ मैं बृद्ध नहीं दिना सकती थी ।’

हल्की-सी आहट हुई । हमने देला आधई दरवाज में पड़ा था । उसकी भाँसें भाग थीं—नींद के अभाव से या मदिरा के प्रभाव से ? या दोनों ही कारणों से ?

उसने पूछा—“आप कब आए ?

‘कुछ देर हुए ।

विमला से मैंने आधई की ओर से ओठें हटा लीं । विमला को देला । उसका मुग बाला पड़ गया था । यह एकदम उठकर

अदर बनी गई। अपनी इशकौली बटो की इस अवस्था पर मेरा हृदय भरना और अवसाद से भर गया। इस विदेगी के प्रेम में फँसकर हमने अपना घर-द्वार, अपना कुल-नुटुम्ब सब कुछ त्याग दिया था। उनकी कच्ची बुद्धि यह मूल तथ्य नहीं ग्रहण कर सकी थी कि स्थायी आधार पर अपना अन्तर्गमनसार बमाने के लिए प्रेम के अतिरिक्त और कुछ भी चाहिये। और बुद्ध क्या? मन का मेल मुमति। यदि मुमति न हो तो दुनिया का घर हा या बाहर फाँटें बारीकदार नहीं चलता है। विमना मन्तान चाहती है आयेई नन्तानहीन रहना चाहता है। विमना का स्वप्न से प्रेम है आयेई का विदगम। पानिया के अतिग्रमण के बाद उनमें विपम च्यमि पैदा हो गई है। आयेई और विमना में उनना ही अन्तर हा गया है जितना चीन और भारत में है।

आयद ने मेरे सामन कुर्सी पर घट्टन हुआ कहा—

‘रमन का कोई पत्रा क्या?’

‘उँहँ।’

और प्रमान का

‘नहीं।’

हम दोनों कुछ दर मीन रहे। समत न मही माता या क्या धान करें। आयद निर्विकार नाव म लीवार पर टेंगे चीनी बन-माना मरपी के पित्र का दपना रहा।

फटान् मीन कहा—

‘आजराय कही पूमते फिगत हो? दिमाई मही दन।’

‘आयद विमना अत्र लक आरक कान मर चुकी है।’

उमर म्यर म विरमि और म्यर का समत बापा

मिथण था ।

“तुमसे जो प्रश्न किया है उसका उत्तर क्यों नहीं दते ?”

आधेई न कठार दृष्टि से मुझे देखा । उसमें असन्तोष से अधिक आक्रांश था । मैंने आधेई का कभी बिना हँसते नहीं देखा था । आज दुर्मौग और अविश्वास के क्षण में उसका अक्षी रूप मेरे समक्ष था । मैं कुर्सी पर तनकर बैठ गया । फिर उठ खड़ा हुआ । अपनी उत्तेजना पर नियंत्रण करने में मैं अपने को असमर्थ पा रहा था । लगता था मेरी आँखें आग बरसा रही थीं । मैंने छड़ी उठाई आधेई के निकट आया और कड़ककर कहा—

आधेई सैनिक की नजर से कोई चीज छूक नहीं सकती है । सच कहो इन दिना क्या करते रहे हो ?

आधेई मिश्कल बठा रहा । उसने कोई उत्तर नहीं दिया । मेरा पारा और खड़ गया । मेरी हृषेसिर्यो और उल्लुखों में अलन होन लगी । शिरा-उपशिरा से चिनगारियाँ निकसने लगी । निदधय ही मेरा रक्तचाप बढ़ गया था । मैंने उसकी हमीज का मजदूनी से पकड़कर कहा—

‘वलाओमे या नहीं ?

आधेई न मेरा हाथ झटक मुझ पकड़कर कुर्सी पर घेठा लिया ।

“आप बहुत बूढ़ हो गए हैं । आप न इतनी शक्ति नहीं हैं कि मुझ मार सरेँ । और मैं हूँ—एक बलशाली जाति की सन्तान ।

उसकी योष्ठी में तिरस्कार था, उपहास था—और था मुझे विमत्ता जो और हम सबको हीन समझन का घृष्ट भाव । मेरा काध दीप के मुर तक पहुँच गया । मैंने छड़ी उठाकर आधेई क

सिर पर प्रहार किया। सम्भवतः मैं बहुत प्रबल प्रहार किया था। आह कहकर, आयेई वहीं बैठ गया।

बिमला भीतर भाग पचाने में लगी थी। छड़ों की आवाज और आयेई की आह सुनकर वह दौड़ी आयी। आयेई के सिर पर हाथ फेरकर देखा। गुमड़ा पड़ गया था। जिस स्थान पर चाट लगी थी वहाँ खमड़ी फट गई थी और रक्त छसक आया था।

‘पिताजी यह आपने क्या किया?’

मेरे अन्तर का क्रोध अभी नि शय नहीं हुआ था। मैंने क्या मजिबार किया? बिमला का प्रश्न मैं नहीं समझता। भाव-दृग्म दृष्टि से मैंने उसे देखा और दयावा रहा। वह आयेई की सहाय देकर सीसुर सोने के कमरे में ले गई और बिस्तर पर लिटा दिया।

मैंने अपने लिए एक सिगरेट बनाया। विधि की बसी विद्वम्बना है एक ही जामाता और वह भी मनु क पदा था। दा पुत्र, दोनों मोक्ष पर—देवा की रक्षा के निमित्त समर्पित। जिस देव में जन्म लिया है, जिसका भाग राया है संकट की घड़ी में उस देव की सहायता के लिए आवे न मानर आयेई न मयानक भूस की है। यदि कोई भारतीय हीनोसुसु में जन्म सता है और वहीं रह-बस जाता है, तो उसे भारतीय कहना-मानना हमारी मोति नहीं है। वह हीनोसुसु का ही मायनिक हो जाता है। किन्तु चीन की गंगा ही उल्टी है। वहाँ की सरकार प्रवासी चीनियों का, जहाँ वहाँ भी वे रहते हैं, विदेशी बने रहने के लिए बढ़ावा दनी है, उपकारी है। जहाँ तक मैं जानता हूँ चार-पाँच साल पहले तक आयेई ऐसा नहीं था। हो सकता है उस चीन उसका विदेशी चरों

‘इसलिए कि विमला ने मुझ पर जासूस होने का संदेह किया। पुलिस को बुलाया आपसे कहा।’

‘और तुम कहना चाहते हो कि विमला का संदेह निराधार है।’

आचेर्ड कुछ न बोला। मैंने प्रश्न किया—

‘माकूम में पकड़ा जाने वाला गुप्तचर तुम्हारा मित्र है?’

‘या।’

‘सच बताओ। क्या तुम बाल्मिक में गुप्तचर नहीं हो? यह निश्चय है कि तुम बंदी बनाए जाओगे। मैं विमला के कारण पूछ रहा हूँ। क्या तुम इस दण्ड क शत्रु हो?’

‘मैं कुछ नहीं जानता। किन्तु माम्रो-स्वे-तुग एक महान् मेठा है। वह न शमत बात कहेगा न शमत काम करेगा। पीकिंग रेडियो ने कहा है कि भारत ने आक्रमण किया है। और, और—

‘और क्या?’

जसते हुए स्टोब की दिशा में देखते हुए आचेर्ड ने कहा—  
‘थीनी भाषा में कुछ समाचार-पत्र थे मैंने जमा दिए हैं। उनमें कहा गया था कि सीमांक्ष्य थीनियों का है।’

‘कौन-सा भाग?’

‘यही स्थान, जहाँ हम मोग हैं।’

‘और तुमने बिश्वास कर लिया?’

‘हाँ। मेरे पिता ने भी यही बात कही थी।’

उसका पिता? बागाम म वह मिस्त्री था। पिछले महामुद्द के समय एक बार भेंट हुई थी। उन दिनों भारी

सभ्यता में चीनी सेना, यहाँ आपानियों के विरुद्ध मार्चा स्थापित करने आई थी। मिन्शी ने मुझसे कहा था कि मन्चू राजाओं के शासन-काल में समस्त दक्षिण-पूर्वी एशिया पर चीनियों का आधिपत्य था। मेरा इतिहास का ज्ञान बहुत गहरा नहीं है लेकिन जब यह कहा गया कि अब भी चीनी राज्य के अन्तर्गत या तो अत्यन्त दूर स्थित व्यापक हैं। पर राज्यसामुप चीनी नेताओं का यह मित्रान्त्रिण प्रचार था।

मैंने कहा— 'तुम जब हमारे देश के घुस रहे हो।'

'मैं दो नम्र देते हूँ। मगर नफ़ा अवस्य ह्यारा है।

उन राजों नम्रा में यह साफ़ लिखाया गया है।'

आधेई नदरों वर्षों ने यह प्रवेश हमारा रहा है।

अपरदन्तों चीनियों म घुम जान से यह उनका नहान बन जायगा।'

आधेई गुप रखा। मैं कहना गया—

जिन दग में मुझे जन्म पाया जिसकी मिट्टी-भूषा मे मुझे दम जब नमरी गया के लिए हृषिकार उठाना तो अलग रहा मुझे उमे दग म मीय दना चाहत ही। तुम गुप्तचर हा म हों दग देग क मनु धनय हा।'

'मैं चीन का भारतीय दान के लिए आवेदन-दर दनिया है। यह दग मग नहीं है।

तो फिर विदवा ने टोप ही किया। पृथिवी का गुप ने व उमने बहुत अछदा किया। तुम उम भी चीनी बनाना चाहते थे।'

आधेई का अहम पीरा पड गया। क्या यह क्या न मरुत म निमय मही पर मा।



कसो आश्चर्यजनक मनोवृत्ति है इन चीनियों की विशेषकर आज की दुनिया में। इसी तरह एक दिन हिटलर और लोजो ने दूसरों की धरती हथियान के लिए दूसरा महायुद्ध रखा था। उसका क्या परिणाम निकला? जर्मनी और जापान को मुंह की खानी पड़ी। वे धराशायी हो गए। आज चीनी भी अगर पर राज्य की लालसा में तीसरा महायुद्ध रखना चाहते हैं तो उनका निनाश ही निश्चय है। चीन आहों से गुंजना एव भयंकर झमान हो जायेगा विधवाओं और अनाथों का देश और उसकी गलती के कारण दूसरे देशों को भी इस नरमेघ में अपने सपूना पी आहुति देनी होगी। आयेई भी यही चाहता है। मूर्ख यह नहीं जानता कि वह मात्र माओ-त्से-तुंग की बटुक है लक्ष्य पूर्ति का एक साधन और कुछ नहीं।

मैंने उससे और तर्क नहीं किया। वहाँ कुछ दूर खड़ा रहा फिर दौड़कर चले आया आहा। इतन में आयेई बोला—

‘क्या आप समझते हैं भारत चीन के नामक राजा हो सकगा?’

‘क्यों नहीं पता हो सकगा? मैं आप से बातें रहा था। चीन भारत का हरा सकगा यह चीन के गुणधर के अतिरिक्त और कोई मान सकता है न सोच सकगा है। जैसे भी हो अन्त में जीत हमारी होगी। हँसी-ठड्डा है, अपनी धरती औरों को जीत दोगे?’

मैंने ताप्रा था आप लोग अपने हित की चिन्ता करके हमारी सेवा का स्वागत करेंगे।

मैं अपने को समयित नहीं रख सका। आयेई के गाल पर

बसकर एक चप्पड़ रमीद किया। एक भदिग की यह मुस्ताखी।  
 नाम पर हाथ रखकर, आवर्ड न अगारे भरी मौलों से मुझ  
 दना। नायद मुझ पर हमसा करना चाहता था। पुलिस को  
 लपक कर चला गया।

मैं वहीं से चला आया। बाहर बिमला मृत्तिका लड़ी  
 था—अपारक और अटोस। वह एकटक दूर कहीं दान रही थी।  
 उसकी झूठी जिन्दगी का ख्याल कर मग मन दानी से भर  
 गया। निरुद्ध जाकर मैंने कहा—

'तुम तो न हो बिमला। तुम जमा घटा का पिता होकर मैं  
 अने का धन्य मानता हूँ। इसमें पार मंहे नहीं नि आवर्ड पर  
 गुलाम है हम सब का यरी है।

बिमला न मेरी आ दगा और फिर प्रका किया।

रान में एक पुनिस बन खारर रना। स्वयं मुसलिमगण्ट  
 माहव दानर लकर जाय प। धर क पर का और मुद्दु पमान  
 का आग दार यह आवर्ड क बनर में बन य। मैं बाहर हा  
 रना। मिापर की पुकी निमानी थीर पिगारठ बनारर  
 विगामद दूय में पुर्त क धर्य छोदन मगा। धुम लाग नाना  
 मैं लर महान अभिनता बन गया हूँ। पर जाना में कुछ क स्वर  
 गुंजन मा। सुकरा मीथ दूर हाम बान मुद की वदूरा और  
 ताता का गजन पर पारों आर प्रतिध्वनिप हान मगा। भरी  
 अगिता क गानने 'बूड़ी गामादनी' रफमस होकर नानर रगा।  
 को रगा वहाँ कर पावगा तुम्हारा पार रगा नहीं कर  
 गायगा। आवर्ड तुम्हारे इस धर का बनसा रजन आरि मेंदे।

१. बूड़ी गामादनी—बसमिदा में भगती के लिए बरत रहे।

जब तक वे बदला नहीं ले लेंगे धन से नहीं बैठेंगे। मुना है सभा और वासोंग में भ्रमासान मुठ मचा हुआ है। मुझ जैसे सहस्रों पिताओं की संस्तान आयेई जैसे बर्बरो का सूर्यनाश करने के लिए मुठ बन रही है। विजयी होगी हमारी संस्तान निम्सन्देह विजयी होगी। मैंने भगवान् के घरणों में प्रार्थना की। दश में एक बार फिर रणचंडी भगवती अवतरित हा।

धानदार आयेई को मेकर बाहर आया और वे दानों धन में बैठ गये। आयेई ने मेरी तरफ़ टेढ़ी नजर उठाकर भी नहीं देखा। मैंने भी आगे बढ़कर कुछ नहीं कहा। धन नगर की दिशा में चली गई।

बन्दर क कमरे में मैंने एस पी की आवाज सुनी। वे विमला से बात कर रहे थे। वदाचित् आयेई के भूत वर्तमान और भविष्य के बारे में। मैंने सिगरेट का सम्बा कष नीचा। सहसा मेरा साँस का विकार बढ़क उठा। खीसत-खीसते निडार होकर पास की एक बेच पर बैठ गया। जब सँभना तब तब पमर की घातकीत समाप्त हो चुकी थी। सामन अहात के फाटक से एस पी की कार बाहर निकरा रही थी। मैं उठकर अंदर चला गया।

विमला बठक म नहीं थी। उस बूढ़ता हुआ मैं साने क कमरे में पहुँचा। दसा एकाग्रचित्त हा आलमारी रागकर यह अपने सार गहन एक सद्रुबनी में रक रही थी। चेहरे और आँसों पर गहरी उदासी छाई थी।

मैंने पूछा— 'क्या कर रही हो विमला ?

'पाप का प्रायश्चित्त।'

'इन गहनों से क्या प्रायश्चित्त ?

'मैं से सुना है स्वर्ण दान कर प्रायश्चित्त किया जा सकता है।'

मैं क मन से वाष्पाणस्त्र का सस्वार अभी दूर नहीं हुआ था। उसका एसा कहना अस्वाभाविक नहीं था।

लेकिन इन गहनों का दान किसको दोगी ?

'सरकार का। सरकार युद्ध अमान क लिए सोना चाहती है।

'इतने सब गहन दे दोगी !'

'व देती हूँ पिताजी। मैं इनका क्या करूँगी ?

उसके प्रश्न का मैं क्या उत्तर दे सकता था। आयेई का क्या होगा, मैं कुछ नहीं जानता था। मुझदमा निरक्षय ही चलगा। फिर विमला का क्या होगा ?

"कुछ दिन रुक जाओ। जल्दी मैं कुछ नहीं करना चाहिए। मैं से भी कुछ थी।'

'अब किसी से नहीं पूछना है। एम पी साहय न कहा है उन्हें आयेई पर पूरा संदेह है। भातुम म पकड़े गए मापरसैस से अज्ञान म भी उनका हाथ था। मेरा और उनका मत अब धमभ्रय है पिताजी। उनका साथ पर अज्ञानर जा पाव किया है उनका प्रायश्चित्त करना चाहती हूँ।'

मूय जल ही रहा था। दिन भर का अनाव हल्का पड़ने लगा था। कुछ भ्रम अकृष हई। विमला अपने धामुगन सङ्क-रक्षी म रण चुां थी। आज उस नून-प्यास कहीं थी ? उस अविनम्य साने का दान देने की सम्मुद्रता थी। मैं अकृमान किया अगदग सोरा हज्जार से कम का शाना नहीं था। मैं तो

अपनी ज़मीन-आयवादा घर-डार सब बेधकर इतना रणमा हकूटा नहीं कर सकता था। बिमला की दान-क्षमता देखकर मेरे मन में उससे लिए घड़ा हुई।

मैंने कहा— 'बटी, मुट्ठी भर भात पेट में डाल लो।

मैं अभी कुछ नहीं खाऊँगी पिताजी।'

मैंने दस्ता अगर मैं घाला गया तो आज यह अनाहार रह जाएगी। मैंन थोड़ा धनकर कहा—

'आँसी बहुत सता रही है। घर जाने को जो नहीं चाह रहा है। यहीं मुट्ठी भर गरम भात खा लूँगा।'

बिमला मुट्ठीमान लड़की है। इनत विपाद में भी मेरी धान का अर्थ समझकर वह मुस्कराई। आभूषणों की सज्जशी आल मारी में रखने को बड़ी। आसमारी क दरवाजे से टक्कर खाकर दीवार पर टंगा बिवाह के अवसर पर लिया गया उसफा और भावेई का चित्र ज़मीन पर गिर पड़ा। वह चित्र उठाने के लिए झुकी तो एक टूटे काँच क टुकड़े से भौंगुली बट गई। रक्त की बूँदें फ़ल पर गिर पड़ीं। साप-साप आँसु सजस हो आईं।

मेरी छाती अबसाद से भर गई।



## तीसरा भाग

उस दिन देर से घूप निकली थी। गान के दूधे बान को निपटाकर, प्रमिता गरम पाना से महारि थी और अपने ब्रेष घूप से मुन्नाने का रसना दिए थे। बस भग वागिन मुन्नान दो किरणा से मोन के सेना के गमान बमक रहा था। मैं नहान को प्रस्तुत था। हमन में प्रमिता न कहा—

‘तीन बटा-बटो हूँ, बिनम से दा ही पाई उबर नहीं और एष का पनि निपता दा पर दम् । न जान अकसी उस नान से क्या कर रही है ? यही क्या गरी क्या आती ?’

इतनी सधनति ही दननाल बीन परगा प्रमिता सेन धाममारी से मोन के आभूषण सेन हैं। एक पूरी सङ्करी नरा है। और बाड़ा भर के गाधन है।

‘यम रहन मो ले।’ प्रमिता न गहरी सोम नरा। ‘आभूषण बीर गाधन लकर भागन क्या करती। यम गदा ता सब गया। वि. एन बरू गिरफ्तार हान में ता परमात्मा उग चठा मता ता बही भयदा होता।’

‘प्रमिता तुम्हारे मांगन न बाना माँप आकर दिन काय बीर अतवान तुम्ह इम से जो हमन का इम हा ता क्या मुम उम फिर भी यष निबनन दोगी

‘ता फिर दाप दिन का से ।’

“अपनी असावधानी को । प्रमिसा, हमारे-तुम्हार रहते यह दुर्घटना कैसे हो गई ?”

विमला ने जब आघेई स विवाह के लिए आग्रह किया था तो उसने छपर-छपर के यहाने बनाकर बष निबभने की बाशिष की थी किन्तु विमला ही न मानो । उसका दतना मन देखकर हमारे मन ने भी मान लिया । वह अनचाहत के सग हा गई । अनेक साल धीत गए । सुस से धीत गए । विमला को कोई संवेह नहीं हुआ । न तय जब कि सन्तान के लिए आघेई ने काई आस-अभिमास प्रकट नहीं की और न तब ही अब उसन भारतीय नागरिक बनने स इन्कार कर दिया । विमला का बिचार था पाठ-सहजों बपों से चीम और भारत के सम्बन्ध जैसे रहे हैं सहजों बप बसे ही रहेंगे । किन्तु हिमालय पर अतिक्रमण के साथ आघेई का पक्षाधिक रूप सामने आया । और अब वह अकभी अपने मूगे घर में सोच रही थी कि कसे आघेई को तमाक दे । पिछले एक-दो दिन में उसने बकीलों से परामर्श किया है । उनका कहना है, पति की नागरिकता क साथ ही पत्नी की नागरिकता जुड़ी रहती है । अपने मन के भाव से वह आघेई को अवगत करा चुकी है । वह आघेई की सारी सम्पत्ति और जायदाद सरकार का सीप बना चाहती है । कबस अपन निजी आमूषण उसन प्रायदिबल क हेतु, असग रस सिमे है । उन्हें स्वय अपने हाथों सरकार को भेंट करेगी । एक घत पर—कि उन्हें नीनिया के विनाश के लिए, गोसी-बदूक में परिणत किया जाये ।

सरसा का तीस क्षरीर पर भलकर, मिन धीधी प्रमिसा क

भागे सरकात हुए कहा—

“उस आज्ञा का क्या न बुझा लें ?

‘मैंने उस बुझाया है परन्तु वह आसगी या नहा यह मैं नहीं कह सकती ।

‘क्या ?

‘उमन कहा है डिप्लोमट जायगी ।

‘आज ही ?

‘हाँ ।

‘अच्छा । उस जान दो ।

‘आप जानते हैं वह डिप्लोमट क्या जा रही है ?

‘हाँ ।

‘किस लिए ?’

‘संसार का मुकदमा दायर करने ।

प्रमिता बृद्ध देर के लिए मान हा गई । समाज की बात उसे नहीं सुहाई । नारी के जीवन में इससे बड़ा दुःख नहीं हा मजबूत । किन्तु ऐसा भी नहीं था कि वह न जानती हा कि एन दायरगी के साथ रहना निवृत्तता कहिन है । किन्तु भी वह बोली—

‘या तार तिन पर जाता मा क्या बुझा था ।’

तर्जिन करा, तिन लिए ।

‘वया जान आयेद की यदि फिर जान आज यह मान्य का नामरिण धरना मात म ।

‘एक बार चीन ट्यूस ता रम्भा भी चीन मान्य लगती है ।’

प्रमिता भरमुना कर गई । आज न दासी । मैं भी स्वान द्य



बला गया। स्नानघर में एक बार फिर मैंने अपने को मुक्त अनुभव किया। अज्ञाने वध की हवा का एक झोंका आया और सारे शरीर को स्पर्श करके बला गया। उसकी सुखदायी अनुभूति पाकर मैंने सोचा—

‘प्रमिमा किञ्चिनी भोली है। देशघात जैसे अघन्म पाप को भी अपनी सन्तान के शिष्ट में बहू क्षमा करने को तैयार है। वह आपेई को माहसल देना चाहती है। किन्तु समय और समाज उसे क्षमा नहीं करेंगे और न ही उसकी अपनी पत्नी और ससुर उसे क्षमा करेंगे। उसे बहू मिलना चाहिए क्योंकि वह शत्रु के पद यत्र में सम्मिलित है। उसके बाद यदि आपेई नामक भ्यक्ति का कुछ शेष रह जाए तो उसे क्षमा करा उस पर दया करा। किन्तु यह निश्चय है कि उस दुबारा जवाई के रूप में स्वीकृति नहीं मिलेगी।’

बाहर मोटर का हॉन सुनाई दिया। फोन लगाकर अनुमान करना चाहा क्या गाड़ी अपनी पहचान की है। नहीं कोई और थी। वह अधिक न दखी। तुरन्त ही उसके जाने की आवाज सुनाई दी। पत्नी ने अपनी आदस के अनुसार दरवाजा पीटते हुए कहा—

‘आपने मुना चिट्ठी आयी है।

किन्तुकी चिट्ठी प्रमिमा ?

‘रजत के हैडक्वार्टर्स से।

जैसे-जैसे कपड़े सपेट जल्दी स मैं बाहर आया। प्रमिमा के हाथ से मित्राफ्रा सिया उसे फाड़ा और पड़ा और पड़ा।

हैडक्वार्टर्स में मूचित किया था—

आपके पृथ की कोई खोज नहीं मिली है। शायद वह जेब रहा है।'

छात्रा पर पथ्यर रखकर प्रमिता को यह दुःखद समाचार सुनाया। सुनते ही माता घर तक बिनाप क नर गया। मैं भी अपने औसू न राक मदा। जन क बारे में अनक प्रका की मस्पना करके अपने मन क अिन दास को छव त राव रा था यह एषमन फूट पडा। हिनालय को एक की मुभ्र पमन न रजन का अपन म रुक विदा था। जिन तीर का निर विमला चली थी उमी ने पत्र जन के प्राण लिये। यह मोर पतुपनी है। यह हम मदका नाग करक रहगा।

दास आर भमना को पान क विण आनत्रित रिया था, यह पय विस्तृत हो गया। मुन विन्धापियों क कम्प आता था यह भी ध्यान से उतर गया। ह्री नयरे नौकर का दादाग नेज रिया था। जब यह नीन रपा की मद्यमी का एक छाटा-मा छपड़ा चार दमे देकर लाया ता प्रमिता का भाव दुाना हो उठा। उमन बहा—

अर क्यों इतन पम कर यह नदनी लाया है ? कीन मावग दम ?"

नीरर म दृष्टा—कहा हुआ मात्री ? कुछ युग हुआ ?

एक नदिन स्थिति का बखान क लिए मैंने पाप का लिगाया परत हूँ दहा— अरे तुम जाओ यहाँ म नीर नदनी का बाहर फेंक दो।

नीरर न अयम्न म मग आर दगा भीर दगता गा। फिर दास यह गनस ला—बहा दा मही रह। मैं ऊपदू

झड़ा था। प्रमिमा घरती पर लोट रही थी और विमल खड़ी थी। नीकर दुविधा में था मछली रहने दे या फेंक दे। मैंने सोचा शोक के आघात से अगर आदमी भी भीरु की तरह विचलित हो जाये और हाय-हाय करने लग तो घर का कारोबार नहीं चल सकता। और घर ही का क्यों बंध गा भा नहीं बस सकता।

मैंने नीकर को डाँटते हुए कहा—

‘फेंक क्यों नहीं देता मछली का?’

इस वार उसने मछली को हाथ में उठा लिया। प्रमिमा का क्रन्दन तीव्रतर हो गया। इतने में किसी व स्वर ने मेरे हृदय को धकधका दिया। बेलि आ गई थी और उसके पीछे आ रही थी वह लड़की जिसे हमने अँगूठी पहनाई थी। मछली फेंकने की बात उसने सुन ली थी। आशङ्कित हा आँगन से ही प्रश्न किया—

‘मछली क्यों फिक्का रह गई है? क्या हुआ है?’

‘बलि रजत की खबर आयी है। उसका बार्ड पता नहीं है।’

बेलि स्तब्ध रह गई। उसने खासी आँसु से मुझे और प्रमिमा को देखा। मैंने अमला पर स्नेह-भरी दृष्टि डाली। फटा—  
‘आई’ इधर आया। आया मर पास।

अमला सहज सरन भाव से मेरे सामने आ लड़ी हुई जैसे फाई बालिका अपने अध्यापक के सामने या लड़ी होती है। मेरी आई का रूप कितना सुन्दर है! आँखें मुसाय की कसा व समान मधुर और मुँह बेलि व फूल के समान खिला हुआ। यहाँ कोमलता से मैंने उसे अपनी बाँह में भर लिया।

१ आई—अभियान में आई के बर्ष है माँ कफिल म्नेर से पेटो का भी नम चन्द्र से सम्बोधित किया जाता है।

आई तब नी भाम्य खराब है और हमारा नी । यद्यपि चाव था कि एक दिन तुझे और उमे जाड़े के रूप में देख के पेड़ के नीचे लड़ा करके स्वागत करें और घर के भीतर लायें । लेकिन मनुष्य बुद्ध सोचता है और विघाता बुद्ध करता है । तुम बड़ बनाना हमारे नाम्य ने नहीं था ।

अनसा न बोधन न अपनी आँवें पाछीं । सहसा प्रनिसा जहाँ घटी थी वहाँ से तेजी न उठकर आई और अनसा को अपन अक्ष म भन्दर मेरे पास स गीबकर ले गई ।

तुम बाई नी मेरे पास न नहीं ल जा सकता । रजत बना गया तो लगी आवल्यनना हम घर में भीर बड़ गई है ।

गोश-निनन हात हुए नी मिन प्रतिवाद किया—

‘प्रनिसा मद्द तुम क्या कह रही हो ? अनसा का तुम फते रण मन्ता ? जन पी अनुपस्थिति म तुम अनसा का क्या द सकते हो ?’

मिनही अनसा प्रनिसा इन प्रश्न का क्या उत्तर देती । इसी दोष ही म दोष पड़ी ।

‘आप लोग बड़ सब क्या कर रहे हैं ? इन बातों के लिए अभा बहुत समय है । मनमिन् मुता । जग देता दा पाकपर म क्या बतौ ता है । जाने री बुद्ध व्यवस्था करनी चाहिए । दापल हा । प्रिना गाण आप साद र्भम रहेंगे ? अनसा, मर माय आजो ।’

१ समय में विशाह के पापान् कब-दम्पति पर के दुस्व-भार पर रोते हुए उस प देह के दोष लड़ गये हैं । बतौ कर के साजा-बिजा बाकि उनका विविध स्वागत करके पर के भीतर लाते हैं ।

प्रमिसा ने कहा—

बुरा न मानना समझिन । आपको खान के लिए म्वांता दिया था । कौन जानता था एसी कुपट्टी देखनी होगी । रसोई की टोड पर जलपान का सामान रखा है । आप कुछ सा लीजिए । लठकी का भी कुछ खिना लीजिए । मैं सेटने आ रही हूँ । मेरी तवियत ठीक नहीं है ।

कमरे में जाकर प्रमिसा चिन्तर पर विगार गई और सिमर-सिसककर रोने लगी । उसका रोना सुनकर मेर हृदय में भी करुण रागिनी बज उठी । मैं पूरी गहगाई और तीव्रता से अनुभव किया कि सन्तान का सताप कसा भयानक शाठा है । यह क्षति कभी पुराई नहीं जा सकती है ।

मैं पास रखी एक कुर्सी पर बैठ गया और आँसु बन्द करके रजत की अविस्मरणीय आह्वति की कल्पना करने लगा ।

याद आया बचपन में कैसे मेरे पास आकर घुटना के बीच खड़ा हो वह अपनी बटपटी तुलसी मिशरी धुली वाली में कहता था—'बाबा बाबा । एसा सगा मानो वही स्वर मैंने फिर सुना । मेरे गले में झूलकर वह कह रहा है—'बाबा बाबा, बहुत चलाता हूँ । देखिए । धूम धूम धूम । वह गोली मेरे हृदय को घेस गई । उसने एक महारा गढ़ा बना दिया । जितने जिऊँगा इस घायल हृदय का सकर ही जिऊँगा ।

जय यह बढ़ा हुआ और कॉलिन जाने लगा तो उसके आरूपक धरीर को दगाकर मैं अपने को भूल जाता । फिर एक दिन वह सैनिक अज्ञमर हो गया । भरे पात आया और एक छाटे-स घालक के समान नोसपन से बाला—

'दादा मैं आपसं यहा वीर बर्नूंगा । अब हम लोग  
माझाद हैं ।'

और आजादी की रक्षा में उसने अपने प्राण तक अर्पित  
कर दिए । सब वह मुझसे हजार गुना वीर निराला ।

धीरे-धीरे ऐसा आर्यात्म हुआ कि दिन में ही अंधियारा  
घाता जा रहा है ।

घर की सबसे प्रिय यन्त्रात व समाय में सब कुछ प्राण-  
हीन और निरानन्द हो गया है ।

जिस पत्थर में रजत रहता था उसमें उसका विद्योना  
उसकी आसमाही उसका बपका का स्टैंड उसका बागड-पत्थर,  
जैसे यह छोड़ गया था वैसे ही रहे व । आसमाही में उसका  
बचपन व, छोटे से बड़ होना तक के सारे क्षितीक सबे रह  
ये । पाठ गया और दया । मेर के मूँह पर एक दाग लग गया  
था फिर भी यह पहले की तरह अपने दंत दिखा रहा था

अपने मालिक को दरबार यह बँस हुआ हुआ है और  
रजत उससे कह रहा है । ए करकन में लेने लिए आज निवार  
देमका आया है । कहीं ? दिगराई नदी के पास जगम में ।  
बला, बसें । तीस सुन्दर सुघा हिरन हैं ।

शर के साथ रजत निवार पर बस देता है । विलीन को  
बढ़क लहर यह जगम म—अर्थात् बमर प बौने-कोन म—हिरन  
की समाग करता है । यहमा हिरन उसको भाँगा व सामन  
भाता है । वह निगाहा साथकर गासी शकता है—घाँस घाँस  
घाँस । हिरन को लादर पर लाया जाता है । दापत को व्यवस्था  
होती है । प्रान्त पास उठारकर गास्त साथ करण, विमला

पकाएगी। अगर किसी ने बीस कर वी तो कड़ा दंड दिया जाएगा।

एक दिन माँ से किसी बात पर पिटकर विमत्ता ने गोष्ठ पकाने से इन्कार कर दिया। प्रशान्त ने भी गांठ साक़ नही किया। वह बाहर मँदान में 'बीयाँ' पकड़ने चला गया। फिर क्या था, रजत पर श्रेय का मूत सवार हो गया। वह शिकार से लौटते समय एक राजा के समान था और विमत्ता आदि रसोद्दय और नौकर। उसके आदेश की उपेक्षा का दण्ड था पीठ पर घेत की मार।

उस दिन जब वहन भाई मार खाकर दधीर हो गेने सगे तो माँ ने आकर रजत को धमकाया। उसने उदृण्ड भाव से उत्तर दिया—

'आओ चली आओ। मेरे राज्य का दासन भग परोगी तो तुम भी पिटोगी।'

उसके राज्य में सेना-सामन्त शोषदार-नतकियाँ रेस-मोटर दुगा-मयानी हाथी घोड़े, घोर-कुले चय थे।

आज उनका वह निष्कण्टक राज्य गारुडमुद्दयाँ बछारी चेतिया यशों के राज्यों की तरह काल के पल में समा गया है। कबल उसक अशरोप स्मारक-शिल्पों के रूप में आँखों के सामने रह गये हैं।

ऐसा आभास हुआ, उस खिसीन के शेर की आँखें सजम हो आई हैं। उसक मासिक ने असमय ही हिमालय पर अपने प्राणा का उत्सव जो किया है।

मिने अपने को मन्मदिस पसीने से सचपम पाया।

००० तीसरा भाग

देश के घर घर से रजत जमे सपूता ने सीमान्त की रक्षा के लिए अपने प्राणा का उत्सव किया है। मरी और प्रमिला की तरह आज उनके माता-पिता भी दुखी हैं। विश्वासघाती शत्रु को धामने के लिए अभी और जल्पर मरना होगा।

मुझे रजत की चिट्ठियाँ याद आईं। उसन सीमान्त में निराला थीं। ऊपर से पुसिन्दा उतारा। अक्षरा पर धुएँ की पत्र जम गई थी। उन्हें हाथ में लेकर मैंने अनुभव किया मानो ये पत्र अभी अभी गंगा में डुबकी लगा पबित्र होकर आये हैं। मैं एक पत्र पढ़ने लगा—

पिताजी,  
घोत ठिठुरन की घीत उत्तर-दक्षिण पूर्व-पश्चिम सब दिशाओं से उतर रही है। वर्ष पड़न लगी है। वर्ष के लक्षण जवान् ऋषि-महात्माओं की नीति मौन है। मीमारोखा के उस पार मामो-रस-गुग के सिपाही अभी-अभी नजर आ जात हैं। उनकी हामी में छल है बपट है। कई वर्गों में हिमाचल पर उनकी निगाह लगी हुई है। मन में आशा है कि एक दिन यह टिड्डी दम की तरह टूट पड़ेगी। हा सक्ता है यह मरे मन का भ्रम है। हमारे कमांडरों और देश के मेनाओं का मन हमके विपरीत है। ये कहत हैं एसा अभी नहीं होगा। यह सीमान्त निरापद है। एक गिन सेना के माग में दलाद सामा आवे थे। उगी दिन मैंने जान लिया था कि चीना दम मार्ग का नहीं भूमने। वे प्रतिगाप-प्रिय जानि हैं। दुनिया के सारे देशों ने महामा गांधी के मिदालना और नरृत्य का नहीं



स्वीकार किया है

पत्र कई स्थानों पर कटापिटा था। शायद वह इस विषय पर और कुछ कहना चाहता था किन्तु कह नहीं सकता था। मैं उसके मन की बात समझ गया। वह सदा कहता था, भारत को एक सबसे प्राणवान् देश बनना है उसे एक बड़ी सेना चाहिए। शक्ति का आदर होता है। मैं भी ऐसा ही मानता हूँ।

कमी-कमी वह अपने विवाह के सम्बन्ध में सिखाता था  
पिताजी

आपने मेरे उपयुक्त सड़की भुनी है। मैं सोचता हूँ अमसा से विवाह करके मैं सुखी होऊँगा। आपने सिखा है वह सुन्दर है विनीत है स्वस्थ है। यह सब मुझ पहले से मानूँ है। आप से कहते आज सगती है किन्तु फिर भी आज करूँगा। यदि आपने इस सड़की से मेरा विवाह न स्वीकारा होता तो मुझे संदेह है कि मैं किसी और से कमी विवाह करने को तैयार होता।  
पिताजी प्यार नाम की जो वस्तु है उसे समझना कठिन है।

उसने पत्र यही समाप्त कर दिया था। हो सकता है इससे आगे अमसा के प्रति अपने प्रेम की चर्चा मुझसे करना उसने असोभन समझा हो। हो सकता है माया का अभाव हो। जो भी हो।

और बहुतेरी चिट्ठियाँ थीं। उन्हें कौन कहाँ तक पढ़ेगा। पढ़ते-पढ़ते रजत की आकृति मेरी आँखों के सामने घूमने लगी। मुझे लगा जैसे अपने बानों के पास मैं उसकी आवाज सुन रहा हूँ। गम्भीर और पुरुषोचित। मुझे जाने के मग्न में आत्म-विश्वास का भाव जगाने वाली।

पिताजी, पिताजी -जैम कमरे म छिपकर कहीं घुसा  
रहा है बा बा

मैं कुर्सी से उठ सका हुआ और एकाग्रचित्त दीवार पर  
टंगा मकड़ सेप्टिनेन्ट रजत मनुमदार का चित्र देखन लगा ।

हल्की-सी माहट हुई । एक म्त्रो-मूर्ति धीमे-धीमे आकर मेरे  
पीछ गड़ो हा गई । बिना मुड़ मैंने कहा—

‘अमना ?

हाँ पिताजी । मैं आपका गान ब लिए घुसा रहो हूँ ।

‘क्या पाऊँ घेटी भूग-प्यास तो सब मिट गई है ।’

बिना जाए कैसे सरेगा पिताजी । न गान से पित्त का  
विराग हा सनता है । आपका गमा उलट जायगा ।

‘वित्त और दम की बात तुम्ह कैसे मानूम हुई ?’

मिर शुबाकर अमना ने कहा— टम्हनि बताया था ।

निमन रजत म ?’

‘हाँ ।’

‘क्या कहा था उसने ?

कहा था बियाह ब पद्वान् भापका नियम म मनय पर  
भाजन कराना मेरा मुख्य काम हागा ।’

मरी छाती पटने लगी । किसी तरह संयत हाकर मैंने कहा—

‘बह मेरा बहुत धान करता था । मैं भी उम तुम जैमी  
मुसलिनी मढ़की के हापसोतर निदिपन्न होना चाहता था ।  
बिन्नु विधाता ही उठ गया ।

मेर धरन स्पष्ट करते हुए अमना ने कहा—

पिताजी, मेरा ही भाग्य गूटा था नहीं तो बिबाह म पटने

ही जैसे बियबा हो जाती ।”

मुझे अनुभूति हुई कि अमसा भी वाणी असाधारण मात्र में करण है । साथ ही, मुझे स्मरण ही आया प्रसन्न का बहु पर जो उसने हास में अपनी माँ को सिखा था कि अमसा उसे प्राणों से भी प्रिय है और अमसा भी उसे समान रूप से प्रेम करती है मैं सत्य जानना चाहता था । उसकी आँसों पर दृष्टि समाकर्मने कठोर स्वर में पूछा—

“तुम रजस को कितना प्यार करती थी ?

इस अचानक प्रश्न से एकधारगी संतप्त होकर अमसा ने एक ओर मुँह करके उत्तर दिया—

‘यह मैं जानता हूँ ।’

यह कहकर वह तेजी से कमरे से निकल गई । मैं अनुमान नहीं कर सका कि अमसा के मन का भाव क्या है । स्त्री-मुख का प्रेम रहस्यमय है । उसे समझना सरल नहीं है । किन्तु वह जानने के लिए कि अमसा रजस का एक-मनस चाहती है या नहीं येरा मन व्यग्र हो उठा ।

इसी समय थोड़ा-सा सूजी का हस्तुआ और एक प्यासा चाय लेकर बेसि कमरे में आई । उन्हें मेज पर रखते हुए बोली—

‘ये खा लो । चाय प्यासे में दासे देर हो गई । ठंडी न हो गई हो ।’

मैंने कहा—‘कैसी बिडम्बला है ! पाने को तुम्हें पुसाया था और पिसा तुम रही हो ।

बेसि ने मुझे कुर्ती पर बटा दिया और हस्तुए को प्लेट आगे बढ़ा दी । मैं बेसि का मुँह देखने लगा । उसने मोठी सिङ्की दी ।

“मुझे क्या देख रहे हैं ? लाइये ।”

“एक बात पूछना चाहता हूँ । बताओगी ?”

“क्या ? बहिए ।”

‘मैं यह माँग नहीं करता कि सड़की अपने होने का ल पति पर अपना सम्पूर्ण मन और प्राण अर्पण कर दे लेकिन इतना अवश्य चाहता हूँ कि वह अनुगता हो । आज मैं यह जानना चाहता हूँ कि अमला के मन में रजत के लिए कितना प्यार है ।”

“क्या ?

मैं कोई कारण न बूँद पाया । केवल इतना ही कहा—

“हृदय तर्क नहीं मानता है, यह तो तुम जानती हो । प्रशान्त ने सिखा है कि अमला उसे अच्छी लगती है और वह भी अमला को अच्छा लगता है । यदि ऐसा था तो तुमने अमला को रजत के लिए क्यों दिया ?”

“सुनना चाहते हैं आप ?”

हाँ ।

“आज ही ?”

“मैं समझता हूँ आज ही ठीक हागा ।”

“पहले मास्ता कर सें । मैं समझिन को भी बूझ दे आऊँ ।”

मैंने नाश्ता शुरू किया । बसि जल्दी नहीं सोटी । विसम्भ गल गया । वह आई तो मैंने शिकायत की—

“बड़ी देर लगाई बसि ।”

‘अपने अलग-अलग प्रश्न का जतर देना उचित होगा या अनुचित, यह निष्पत्ति नहीं कर पाई थी ।”

“असपत्त बैसे ?”

‘अपने उत्तर में मैं जो कहूँगी वह सच भी होगा या नहीं यह भी मैं नहीं कह सकती। कौन माँ-बाप अपने लड़क-लड़की के मन में पँथ सकते हैं ?

वेसि का कहना सच था। मैंने गहरी साँस ली।

‘तो न कहो वेसि। रहस्य रहस्य ही बना रहे।’

वह आराम से घठ गई। बोसी—

‘नहीं मैंने कहने का निश्चय कर लिया है। अवश्य कहूँगी। हाँ माँ के नाते आपस केवल एक आश्वासन चाहती हूँ।’

‘वह क्या ?’

‘जो मैं कहने जा रही हूँ उसके कारण अमला क मविष्य पर किसी प्रकार से आँच न आए।

‘क्या मतलब ?

वेसि रुक गई। मेरी ओर तीक्ष्ण दृष्टिपात किया फिर हँसकर बोली—‘माँ के मन में सदा आशंका रहती है। न जाने कब बेटे के अरिष म कोई छोट निकाल दे।

‘मेरी ओर स तुम्हें कोई डर नहीं होना चाहिए वेसि।’ मैंने उसका हाथ अपने हाथ में ले समिश्क आवेश से कहा—‘क्या यह अथ फिर से स्मरण करान की आवश्यकता है नि आज स नहीं, न जाने कब से मैं तुम्हारा बिद्वानस करता आया हूँ। और क्या अमला क विवाह की बात भी तुम्हारे कारण नहीं हुई ?

अपना हाथ पीथते हुए वह बोली—‘बास पढ़ने को आए लेकिन आपका बासकपन अभी तक ज्यों का त्यों है। अच्छा मुनिए। बताती हूँ।’

००० तीसरा भाग

मैन सिगरेट बनाई और कुर्नी की पीठ से सहारा टेककर मुनने के लिए तत्पर हो गया। बसिन न कहना आरम्भ किया—  
 "अमला एक अद्भुत सड़की है। इसलिए नहीं कि यह मेरी बटी है बल्कि यह एक रेडिया के समान है। उसमें विमलजल ग्रहण-शक्ति है। बचपन में पेड़ पर एक गारिया गुदाई का रूप देखकर यह अपनी मुपबुध भूल गई थी। आज तब उसे विस्मृत नहीं कर सकी है। अगर कोई उससे पूछे ता वह यही कहगी कि औरों की बात वह नहीं जानती लेकिन उसका लिए गारिया खुदाई एक स्वर्गीय वस्तु है।

'आप जानते हैं जब स मेरे पति पलायन कर गए, आप लोग का पर ही मेरा आश्रय रहा है। बित्तनी रात हो आप में से कोई भी आकर दरवाजा गटकटाए ता हम निराश्रित होकर देते हैं। आप मांगों पर हमारा इतना विद्वान है। अमला नारी किसी न किसी का विद्वान न बने ता वह कैसे ?

'रजत छुटपन से हमारा यहाँ आना-जाना रहा है। अमला को, जब स यह प्युटनियाँ देती थी तब स उनमें दगा है। दाना माय मन बढ़ है। उन्नत व माय उनमें अन्य प्रकार व सम्बन्ध भी मर्दान हान सम। दाना यागान व घोष की पगडंडियाँ पर, मस्त पक्षिया की तरह बिषग्न परत फिरत। मैन दगा आर बुद्ध नहीं बहा। न आपन ही बुद्ध कहा। हमन—मैन आपन—दगा जनदगा कर दिया। फिर, बातचीत में आपन एसा नाब प्रकट किया कि यदि उन दाना के मेम का म्यानी किया जा मसे

१. गोरिया गदई—एक प्रकार का निर्दोष। जगदी विद्वानता यह है कि वह देखने वाले की ओर परटक देगता रहा है।

तो मुझ की बात होगी ।

‘एक दिन ऐसी सम्भावना दिखाई दी । रजत आया और मेरे सामने एक कुर्सी पर बैठ गया । तब वह स्कूल का छात्र था । अमसा अन्दर ही रही, बाहर नहीं निकली । मैंने भीतर जाकर उसे अपने पास बुसाया और पूछा—‘क्या हुआ अमला ? रजत से नहीं बोलती ? वह बाहर अकेला बैठा है । अमसा ने उत्तर दिया—‘मैं रजत से के सामने नहीं जाऊँगी, माँ । मुझसे ऐसी बातें कहते हैं जिनसे साज आती है ।

‘मुझ को तूहम हुआ । अमसा साज का बोध होने की अवस्था में पहुँच गई थी । हमें सावधान रहना होगा । बहुत पूछने पर उसने बताया एक दिन रजत उसे छैर के लिए से गया । वहाँ प्रेम की एक बबिता सुनाई और कहा— अमला उसके हृदय का धन है । अमसा का हाथ लेकर, साहबी ढग से उसका चुम्बन कर लिया । मैंने सुना और अमसा को बुझा दिया । जा कोई बात नहीं है । यद्य, सँभलकर चमता ।

‘लेकिन अगले दिन से मैंने उनमें एक परिवर्तन दृष्टा । उन्होंने बाहर थाना-जाना कम कर दिया । घर में ही बठकर बातों में समय बिताते । कभी-कभी रजत रात का थाना खाकर हमारे यहाँ आ जाता और बहुत रात गये तक बातें करता रहता । एक बार तां मुझे अपने विस्तरे से उठकर उन्हें सचेत करने जाना पड़ा था ।

‘उसके बाद आपका शीकर उन दोनों के बीच पत्र लाने-से जानें लगा । मेरी दृष्टि से उनकी एक बात, एक श्रेष्ठा, एक गति नहीं चुकी । फिर, जिस दिन गाँव छोड़कर रजत कॉलेज पढ़ने

बसा गया, मैंने देखा अमला पर चौक छा गया। पहनने-ओढ़ने, छाने-सोने, वातपीठ, सभी में अमनापन आ गया। विरह की अवस्था शुरू हो गई।

छुट्टी और बीहू के पत्र पर अब रजत धर जाता अमला में नई स्फूर्ति आ जाती। वह अब सजसजकर निकसती और मुझसे नाममात्र को अनुमति माँगकर सिनमा देखने जाती। किन्तु ये छुट्टी और पत्र के दिन बहुत कम होते। आठे और निकस जाते। इसलिए उनके प्रेम न एक संयत रूप से लिया।

‘एक दिन रजत को कमीशन मिला गई। उसने साम-साय अमला को विवाह का एक पत्र लिखा। यह पत्र वह बहुत दिन छाती से छिपकाए रखी। जब यह बात मुझ पर प्रकट हुई तो मैं समझ गई कि अब और रहने का समय नहीं है। हमं धीमे ही प्रस्ताव दमा चाहिए। आप सामों न भी अनुप प्रस्ताव स्वीकार दिया। एक दिन, जब वह करघे पर ताना बुन रही थी मैंने प्यार से कहा—‘बेटी तेरा भाग्य अच्छा है। मन-पीठा भर मिला गया है।’ वह सजाकर मुझसे छिपक गई। मेरे माँपन से मुँह छिपा लिया। मैं तुम्हें छोड़कर नहीं आऊँगी, माँ। मेरी माँगों से माँसुओं को धार वह निकली। उम पौछने हुए मैंने कहा—‘मेरी किन्ता न कर अमला। जिस घर तू जा रही है वह मुझे अलग नहीं कर देगा।’ ”

बेनि की बधा सबधा मुक्तिप्रदान थी लेकिन मेरा पापी मन एक और प्रश्न त्रिय बिना नहीं रह सता। कारण नारी-पत्रिक के मही निरूपण में चारोरेख समग की बात एक मुख्य मानदंड है। कम न कम एयो मेरी मांगता है।



“क्या उन दोनों में कभी छरीर से सम्पर्क नहीं हुआ ?”

बेसि की भैंसें तन गई । उसने दृढ़ता से कहा— “नहीं ।”

मैंने सोचा, इस रहस्य को निदोषपूर्वक न बेसि जानती है

न भविष्य में मैं कभी जान पाऊँगा । इस विषय पर और जिज्ञासा अनुचित होगी ।

“क्या अमला अब भी राजत को एक मन से प्रेम करती है ?”

हाँ ।

मैं आश्चर्य हुआ । किन्तु सहसा फिर प्रदान्त के पत्र का

ध्यान आ गया ।

“बसि, एक बात और पूछूँ ? बुरा न मानना ।”

“पूछिये ।”

“प्रदान्त के साथ अमला का क्या सम्बन्ध है ?”

बसि का मुँह तमतमा गया । वह बोली—

‘प्रदान्त एक पशु है ।’

‘जैसे बेसि ?’

‘कहाँ तो बुरा न मानेंगे ?’

‘नहीं मानूँगा, कहो ।’

‘आ सड़की उसकी मामी बनन आ रही है, क्या उस पत्र

सिगमा चाहिए ? राज उसका पत्र आता है ।’

‘अमला जवाब देती है ?’

‘देती है ।’

‘क्या जवाब देती है ?’

‘मैं नहीं जानती । शायद यही सिखाती हागी कि वह उसे

पसन्द करती है, किन्तु राजत की तरह नहीं ।’

मैं खेनि के उत्तर म मनुष्य नहीं हुआ ।

“अमला के लिए प्रदान्त का कुछ भी लिखना उचित नहीं है।”

मैंने भी यही कहा था किन्तु आजकल कौन बिधे सेनाल सकता है । आजकल सब आजाद हैं ।

‘फिर भी अमला रजत के अनिरीस और किसी को प्रेम करती है यह जानकर रजत की आत्मा को स्वर्ग में भी शान्ति नहीं मिल पायेगी ।

“आप क्या जानें मरे मन म कभी-कभी कैसे विचार उठते हैं ?”

“कैसे ?

“सीता जैसा सभी न भी अमान वाटिका में रावण का धिय गींचा था । मैं पहल ही कह चुकी हूँ अमला एक रेडियो क ममान है । इधर ग्रहण करती है उधर बितरण । उसका हृदय कभी-कभी सहज ही विचलित हो उठता है । मारी-हृदय विचित्र वस्तु है । जमना दो पुरुषों को एक साथ ममान रूप से प्रेम करना कोई अचरम की बात नहीं है । नहीं तो याजीवन बेपना बगैरे मैं आपकी पर्यो नहीं नुसा सरी । इसका यह अर्थ नहीं कि मैं अपने पति का प्रेम नहीं पगती थी या प्रेम बगैरे थी ।

बेमि प्याना-प्यत उठावर पातघर में चली गई । मैं अकाक् उमपी आर देगता रहा । प्रमिता न प्रति इतना प्रेम हाते हुए भी मेरे हृदय में बमि का स्थान मग मुरगित रहा है । हृदय की मोला निगामी है ।

इतने में मुभा याहर कुछ औरतें नारा मगा रही थी—

‘स्वर्ग दीजिए स्वयं’

रजत के आरण के आभूषणों का ध्यान आया। बिमला की तरह, हम भी उन्हें स्वर्ण-कोप के लिए क्यों न दे दें ? जिस घण्टे ने रजत की हत्या की है उसके विमास के लिए उनसे बंदूक-बास्त्व की व्यवस्था होगी। हम उनका क्या करेंगे ? मैंने बाहर जाकर उनसे कहा—

“बठिये मैं अभी आया।”

तेजी से मैं प्रमिला के कमरे में गया। प्रवेश करते ही जो काण्ड देखा तो स्तम्भित रह गया। प्रमिला ने अमला को अपने पास बठा रखा था और उसे एक-एक करके सारे आभूषण पहना रही थी। उनके आस से अमला कुछ झुक गई थी।

मैंने कहा— ‘प्रमिला बाहर सोना मांगने के लिए औरतें आई हैं।’

उसका उत्तर वो दूक था—

“उनसे कह दें कि घर में सोने का कम भी नहीं है।”

“क्यों इन गहनों का क्या करोगी ? इन्हें मुझ के लिए न दे दें ?”

बहु शोध से भर उठी। प्रमिला के खण्डी स्वरूप से मुझे हमेशा डर लगता है। वह बोली—

“यह सोना इसका है। मैं देखती हूँ आप में बुद्धि का निवाँस अभाव है।”

अमला हपर-उपर भाँक रही थी।

“सड़का जसा गया और तुम बहू का गूगार कर रही हो ?”

मैं अपनी कड़वाहट को नहीं दवा पाया।

“टोक है एक सड़का जसा गया सबिन एक और तो है।

मानो किसी ने मुझे आकाश से फेंक दिया हो ।

'क्या ?'

'इस सोने की प्रतिमा को पाकर मैं अपने हाथ से नहीं निकलने दूंगी । मेरा शरीर गिरता जा रहा है । मैं थक गई हूँ । कमी आपने इसकी भी चिन्ता की है ?'

मैंने कुछ कहना चाहा किन्तु अमला बहुत अम्वस्थ अनुभव कर रही थी और बेसि दरवाजे के पास आ खड़ी हो मुझे तिरछी निगाहों से घूर रही थी ।

मैं बाहर आया । सोना माँगने वाली औरता को खाली हाथ सौटा दिया । मैं अत्यन्त उन्मिन्न था । प्रशान्त सदा से प्रमिसा की प्रिय सन्तान रहा है । मन और चित्त में दोनों एक-दूसरे के निष्कट हैं । दोनों के दृष्टिकोण भी एक हैं । इसकी अपेक्षा मेरा रजत के साथ गहरा योगायोग रहा है । आज वह नहीं रहा । आज मैं सिवाय उसके और कुछ नहीं सोच पा रहा हूँ और न ही सोचना चाहता हूँ । आज सारा घर उसके लिए खोब मनाए, शायना करे उपवास करे—यह मेरी कामना थी । किन्तु दो घंटे भी न बीत पाये थे कि प्रमिसा न अमला को गहने पहनाकर उम छोटे बेटे को बहू बनाने की तैयारी शुरू कर दी । उसने रजत की आरमा का अपमान किया है ।

'रजत मेरे बेटे यह तेरी माँ अबस्थ है किन्तु ममतामयी माँ नहीं है । यह राक्षसी है ।'

मेरा अन्तर पटा जा रहा था । मैं वहीं और वहीं रग मचा । रजत के कमरे में जाकर कूट-कूटकर रोया । कुछ देर बाद बेसि यहाँ आई । उसने दरवाजा बंद किया । मुझे बिम्बरे पर निगाया ।

दिलासा देते हुए अपने भाव भरे स्वर में बोली—

‘आप आराम करें ।’

मैं बिसकुल टूट चुका था ।

‘तुम न बसी जाना बसि नहीं तो मैं क्रुद्ध नहीं कर पाऊंगा ।

वह मेरे पास बठ गई । मेरा हाथ अपने हाथ में धाम लिया ।

‘आपका मन इतना दुर्वस हो गया है ? मैं रहूँगी यहीं रहूँगी । आप सो जायें ।

मैंने सोने की बेष्टा की लेकिन मेरी आँसुओं के सामने एक ऊँची दीवार आ गयी । उस पर सड़ा होकर एक महारथी घतष्ठी वाण छोड़ रहा था । पृथ्वी क्षार-क्षार हो रही थी । चिन-गारियाँ निकल रही थीं । वस्त्र का चूर्ण हो गया । अस्वाचार का अन्त हो गया । शत्रु निरिच्छ हो गये ।]

वह महारथी था—

रजत ।

मेरी भीर सन्तान रजत ।



## चौथा भाग

नवम्बर के मध्य में अकस्मात् भारत का भाग्यचक्र घूमने लगा।

सूखा और दम्प्रा की अधिभक्ता के बल पर चीनियों ने हमारी सत्ता का सीमांशल क कुछ प्रमुख स्थान छोड़ने पर— मैं समझता हूँ अल्पकाल क लिए ही—बाध्य किया। वीमडिमा और वालोंग के पतन के बाद दंग की रक्षा का बंधन बना नज़ा के दक्षिणी भाग में नीची पहाड़ियाँ का वह क्षेत्र जिसे फुटुहिस्य कहते हैं।

एक सप्तेर मैंने दंगा माटर गाड़ियाँ पंक्ति बनाय डिट्रूपड का दिना सं जा रही थीं। वेम कम्पनियों और बाय बागान क बिन्धी माहब सोय सपरिवार नाग रहे थे। उनका साथ हमारे कुछ देगी ब्यापारी और अधिकारी भी थे। कान् सीधी कतबते की सबक पनड रह थे, बाई गौहाटी पहुँचकर हवाई जहाज या रेल से बच निरामन की आस लगा रहे थे।

द्वार विम्पापित्तों की सेवा और देगमाय के केन्द्रों के अतिरिक्त एक नागरिक प्रतिगदा मय बन गया था। मुने मैगन में म्यसेवना का पण बराने का दायित्व मुझे सौंपा गया। मैं एक दूनपूब मनिब हों नहीं एक गहीद का पिता भी था। कुछ दिव्दानु सोयों न इसका विरोध किया। मेरे

आयेई का समुह होने की बात का वतगढ़ बनाया। किन्तु अधिकतर साग विशेषकर वे जिन्होंने आयेई की गिरफ्तारी के समय पुलिस के साथ मेरी बातचीत सुनी थी, मुझ पर पूरा विश्वास रखते थे।

उस दिन परेड के मैदान से सोगों में अत्यधिक उत्तेजना थी। सबेरे से ही सीमाबन्ध से विस्थापितों के दस के दस मगर में उमड़े वा रहे थे। हमें संकट नजर आया। यदि समय रहते जनता को सबैत न कर दिया गया तो ऐसा न हो कि भगदड़ मच जाये। विस्थापितों के जाने से जो अफवाहें फैलगी तो सोगों में धीरज और विश्वास बनाये रखना असाध्य हो जायेगा। परेड समाप्त होते ही मैंने मुबका को आदेश दिया कि वे माइक्रोफोन लेकर प्रचार का काम तुरन्त आरम्भ कर दें। उन्हें क्या कहना होगा, यह भी मैंने समझा दिया।

सारे मगर को एक बिभीपिका ने अपने अंक में भर लिया था। बेलि और अमझा को भर साने के लिए मैंने एक स्वयं सेवक भेज दिया। मेरा अनुमान था कि अब हवाई सड़ाई शुरू हागे। बासोंग घाटी क्षेत्र के बाद यदि बीनी डिगवोई और तिनमुकिया जैसे क्षेत्र के नगरों पर अधिकार करने के लिए अपनी सारी शक्ति का प्रयोग करें तो कोई आश्चर्य नहीं।

मैं संध्या तक घर नहीं गया। हवाई सड़ाई होने की स्थिति में क्या व्यवस्था करनी होगी, इस पर उच्च समिक अधिकारियों से बातचीत की। सब यही सोचते थे कि इस बार खन्दक सोदकर और रोशनी पर नियंत्रण करके ही रस्ता न हो पायेगी। उसके लिए जबरदस्त हवाई शक्ति की आवश्यकता

होगे । वहीं मुना नि मार्ग ने पश्चिमी देशों से सहायता मांगी है ।

हम में से आ वरुण मान-विधारी स्वभाव बाप से के अपन के राजनैतिक भविष्य की कल्पना करके गहरो चिन्ता में पड़ गए । जो साहसा से व छापामार युद्ध की योजना बनाने लग । हमन निजय किया कि एक एसी टुकड़ी बनाने के लिए कुछ नौजवानों को तयार किया जाये जो भीमियाँ क आन क बाद उनक हर काम और कदम में सामा डाले और मुकद्दिस कर लाड़-शौड कर । एक से मुस्ताव दिया कि पहले मगर क मारे स्वयमेवकी की गिनती की जाय ।

दुपर जगह-जगह स्वर्ण दान और रक्षा-कोष क लिए धन एकत्र करन का काम बराबर चल रहा था । कृष्णवादी म म्रिया की कृष्टि-एड को गिदा दी जा रही थी । अपन-अपन याद क प्रमिता बेमि और अमला भी गिदा क रही थी । केबल विमला अपन तनाइ क मुकद्दम म पूणरूप म ध्यस्त थी । आपने देबली कम्प में मजदूरगए था । वहाँ म अपन पत्र म निश्चय ही विमला का प्रसन्न करने क लिए, उमन अन्न व्यपहार पर अनुत्पाप ध्यस्त किया था और क्षमा मांग था । मरिन विमला क निश्चय दिया था कि उसक माय यश गुना अगम्यक था । दोना क मयागोष्ठ मलाह हा अनीष्ट था । पत्र मिलाकर वह निश्चय मही बैठ गई । कम्पहगे म भी कुराक क लिए आपेन्न-अत्र क दिया । विमला का एसा दुःख-मय-र दारकर आपेई आउनिष्ठ हा गया और उमन शैवली कम्प आन का अनुगोप किया । उमने सिगा, विमला अमी तर उमरक



विवाहिता पत्नी है। वह उससे एक घार मिमना चाहता है।

विमला निदवय नहीं कर पा रही थी कि वह जाए या न जाए। हठात् युद्ध की स्थिति गम्भीर हो गई। उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में भार तीय सेना को पीछे हटना पड़ा। हमारे मन क्षोभ और चिन्ता से भर गए। हम अपने को बिल्कुल बेजान अनुभव करने लगे। युद्ध के समाचारों से विमला का चेहरा और सूख गया, किन्तु वह अभीर न हुई। तन्मय होकर नागरिक प्रतिरक्षा के काम में जुट गई। बागान के मेम साहयान और तिनसुकिया के कुछ मारबाड़ी मिश्रों ने उसे कसकसे बसे जाने की मलाहती अपने साथ लाने का प्रस्ताव किया, किन्तु उसने सब अमान्य कर दिया। उसका कहना था—

“यह नगर छोड़ कर कहाँ जाऊँगी? अपने पति के देशद्रोह का प्रायश्चित्त करने के लिए मुझे यही ठकना है।

आर्षेई की गिरफ्तारी के बाद खुफिया पुलिस विमला की गतिविधि पर सतर्कता से दृष्टि रख रही थी। मैं उसे कैसे रोक सकता था? सरकार के सम्येह का निवारण आसान नहीं था। अफसोस है कि सारे असम में गुप्त धातु और गुप्तचर बड़ी संख्या में सक्रिय थे। आर्षेई के घर पर कड़ा पहरा था। विमला को रो पुलिस में यह रपट देनी होती थी कि वह दिन में कहाँ जाती है और क्या करती है। उसका जीवन असह्य हो गया था वह चाहती थी कि यथाशीघ्र समाप्त पा कर इस कसक से मुक्त हो जाए।

उस दिन गोधूसी के समय नागरिक प्रतिरक्षा कार्यालय में यह आवास मिला कि विमला की गिरफ्तारी बहुत नि

है। सवाई ने ऐसी बरबट बदली थी कि सरकार किसी भी सदेह-जनक व्यक्ति को बाहर नहीं छोड़ना चाहती थी।

एक अदृश्य अपमान की कल्पना से मेरा बेहरा तमतमा उठा। आँसू झुक गईं। विमला आयेई की पत्नी है तो रजत की बही बहन भी। रजत की बहन ही नहीं यह धन्युराम मजुमदार की बही भी है।

घर साटा सा फाफ़ा रात बीत चुकी थी। वहाँ बाने का आदमी मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे एकदम बुसाया था। उल्टे पैर ही मौंट गया। विमला मुपरिन्ट-इंट माहब के सामन बठी थी। मुझे देखते ही उसने सिर झुका लिया।

मुपरिन्ट-इंट माहब ने कहा—

हमन आपका एप बात कहने को बुसाया है।

'बहिए।

'हम इन्हें बाहर मरी रहने दे सकते।

'क्यों ?'

'प्रमाण तो कोई नहीं है बिलु यह एप चीनी की पत्नी है।

गमय बहुत नाबुब है। आप मय जानत हैं। इन्हें निगरानी में रखना होगा। आप एब अद्वेय नागरिक हैं। भाग्यो मूषित करमा हमने उचित ममसा।

विमला की आँसू धरती में गड़ी थीं।

एम० पी० माहय कानून बना और क्या नहीं पहना है पर मैं नहीं जानता लेकिन यह मैं जानता हूँ कि यह मेरी बेटी निष्पाप और निरपराध है।'

मैं ना जानता हूँ लेकिन श्रीमान मैं आपसे कहान, ममय

बहुत माजुक है। हम किसी पर दया-माया नहीं दिखा सकते। आर्चेई के साथ इनका इसने साल रहना ही शका का मूस कारण है।

उनके स्वर में सहानुभूति की ध्वनि स्पष्ट थी।

मुझे एक उपाय सूझा। मैंने कहा—

अगर इसकी सारी जिम्मेदारी मैं ले लूँ तो क्या कुछ हो सकता है ?

एस० पी० साहब न क्षण भर साचा और उत्तर दिया—

‘हाँ हो सकता है।’

बिमला की प्रतिबिम्बा अप्रत्याशित हुई। वह बोली—

पिताजी मरी जिम्मेदारी आप क्यों लेंगे ? मैं अपना बोझ स्वयं बहन करूँगी। आप घर जायें।

मैंने उसे समझाया।

‘घेटो और कुछ हो न हो तुम्हें कष्ट बहुत होगा।

जिसके मलाट में जो सिखा है वह उस भोगना ही होगा।

मैं किंकलभ्यविमूढ़-सा उस दखता रहा। एस० पी० ने अपनी मेज पर रस ट्रान्जिस्टर का चासू किया। उद्घोषणा हुई—

यह आकाशवाणी है।

अब प्रधान मंत्री देस क नाम संदेश प्रसारित करेंगे।

जवाहरलाल महल।

मैं चौका।

बासाग और घीमडिला क पतन का घर्षा करते हुए उनका स्वर कटप हो गया। यकी हुई आवाज में वह कह रहे थे—

भाइयो और बहनो,

करीब एक महीना हुआ मैंने रेडियो पर आप स कुछ कहा था जिस तरह स चीनी फीजों स हमारे ऊपर हमसा किया और हमारे मुल्क में बस आई— — आज फिर स मैं आपको इसी बारे में कुछ कहना चाहता हूँ क्योंकि पिछले दो-तीन रोज स और काम कर कम और आज घुरी घर में आई है तकलीफ़ें सब स आई हैं—कहीं कुछ हमारी फीजों क हटा देन की और कहीं कहीं कुछ हार जाने की पूर्वी चीमा प्रान्त में वासोंग एक नगर है उसको हमारी फीज को छाड़ना पड़ा, सीला है— बीमडिला और तबाग के बीच—और धौमडिला भी हमार हाथ से निकल गया असम खतरे में है हमारा दिन जाता है हमारे माँ और बहन को घसम स रहत है उनकी हमदर्दी में क्योंकि उन्हें तकलीफ़ उठानी पड़ रही है और गाफ़ और भी उठानी पड़

एम० पी० ने रेडियो स कर दिया । उनकी भावमद्दा गम्भीर हो गई । मोई हर्द आँवों ने मुझ देखा और बोले—

यहून बुरे दिन आ गये हैं, धीमान् । पिछले बड़ सो खाल में हमार धोमों का एते दुर्योग का सामना नहीं करना पड़ा है ।

यह उठे और पाहर चले गये । बाहर की ठही हवा के साथ ने बलापित् उन्हें आकल्प किया हा ।

बिम्बना यभी तब रीते ही बटी थी । बचरा बेहुरा बहुरात का मला के रग ने समान जाता पड़ गया था । यह अपन की अल्पन अपमानित अनुभव कर रही थी । उसी न अपन पति का परदेयाया था । यह बात मुगर्ध्ण्ट साहब भी जानते

थे। उसके तसाह्र माँगने की बात भी सरकार को भविदित नहीं थी। फिर यह गिरफ्तारी क्यों? गिरफ्तारी के कामक के लिए वह विस्कुम तैयार नहीं थी।

इतने में आकाश हवाई जहाजों के झोर से भर गया। वे धायद रसद गिरा कर लौट रहे थे। घाने क बाह्य मोटरों के आने-जाने का ताँता बँधा हुआ था। धायद और लोग अपने परिवार भेज रहे थे। घाने के सामने नगर के भौजवानों का एक झुण्ड जमा था। उनकी हँसी और उनके उत्तेजना भरे शब्द मेरे कानों तक पहुँच रहे थे। मुझे ऐसा लगा मानो विमसा की गिरफ्तारी के समाचार से वे खुसी थे। मरा हृत्प्य उनके प्रति कृतज्ञता से भर गया।

किन्तु अपना निर्विष्ट काम छोड़ कर उनका इस तरह समय गँवाना ठीक नहीं था। उन्हें ता पहाड़ी क्षेत्रों से आन जाने विस्थापितों का सेवा-सत्कार करना था। वे यहाँ क्यों आये?

मैंने एक सिगरेट बनाई। संकट के समय पिताजी कीर्तन पूषी से जो पद गाया करते थे उसे मन ही मन गुनगुनाया। फिर सहज भाव से कहा—

‘खुशी न हो बेटी। भगवान् है। वे तेरी रक्षा करगे।

विमसा भगवान् का स्मरण नहीं करती थी। उसने कभी आबस्थकता भी अनुभव नहीं की थी। किन्तु आज उनके सन्नाहय कदपामय स्वल्प की कल्पना करने उसक आँसू आ गय। मुझे यह अच्छा लगा। उस समय वहाँ और कोई नहीं

१ कीर्तन-पूषी—जसमिया मे की शकरनेक द्वारा रिमा हुआ श्रीमद् भागवत् का पद्यानुवाच।

००० बीया भाग

था। मैंने उससे कहा—

“विमला एक अदृश्य शक्ति किसी भगव्य स्थान से हमारे जीवन में उसटफेज मखा कर हमसे तिसबाड करती रहती है। हम नहीं जान सकते कि हमारे जीवन में कब कहीं क्या घट जाय।

चिन्तु पितार्जी निरपराध का दण्ड देना भी क्या भगवान् का बिधान है ?”

‘नहीं।’

‘तो फिर मुझे क्या पबडा गया है ? मैं कुछ भी तो नहीं बिया है। एक दिन अनायास बिमी बिदेगी के प्रति मन में प्रेम जग गया था। मैंने उससे बिबाह कर लिया। वह देरदोही निबला। जम ही मुझ इसका जाल हुआ मैंने उसे पकड़वा दिया। उस—अपन पति को—परइवान वाली मैं ही थी। फिर मुझ यह दण्ड क्या !

“यह दण्ड नहीं है विमला यह तरी परीदा है।

‘परीदा ?

‘हाँ सीता न अपन बर्नक से मुक्ति पान के लिए अग्नि-गंगा दी थी। मनुष्य मदा मुन्ही हाता है। यह माना उसका जन्मजात स्वभाव है।’

‘मनुष्य क्या साध समाज ही मुझ पर संदेह कर रहा है।’  
 ‘समाज भी ता मनुष्य। न समूह का ही बहन है। तू मरी बरा है। जम राजा और प्रान्त देगत्रमी हैं बंस ही तू देगत्रमी है। मागी मुनिया भी यह ता मैं तुम पर संदेह नहीं कर सक्ता।

विमला उठी मेरे निकट आई और जीवन में पहली बार मेरे चरण स्पर्श किये ।

पिताजी आपका विश्वास ही मेरा बल है । इन पिछले दिनों मैंने हर कहीं अनगिनत लोगों का ब्यग और विद्रूप सहा है । सब मुझे एक गुप्तचर की पत्नी के ही रूप में देखते हैं । वे नहीं जानते कि मेरे हृदय में भी देशप्रेम की ज्वाला धमक रही है । मैंने अपने पति ही को नहीं पकड़वाया अपना सारा संचित धन और गहने भी देश की रक्षा के लिए दे दिये हैं । औरां ने धोखा खरीदे हैं मैंने सब कुछ दान कर दिया है । नौजवानों के साथ कथा मिलाकर नागरिक प्रतिरक्षा का काम कर रही हूँ । मैंने अपनी मर्जी से अपने घर में एमरजन्सी हस्पताल सोमने की अनुमति दी है । फिर भी मेरे कलक का मोचन नहीं हुआ है । मैं भूणा की पात्र हूँ, पतिता हूँ, निहृष्ट हूँ । वह परम पावन देश कहलाता है किन्तु इसमें एक भी ऐसा उदारमना व्यक्ति नहीं है जिसके हृदय में एक भवला नारी की ऐसी दुसमरी कथा प्रतिबन्धित होती हो । भगवान् भी क्या कर रहे हैं ? वे भी इतन ही निहृष्ट हैं ।

मैं विस्मित था । आधेई द्वारा कड़े निये उत्पात के माघ मैंने कई बार विमला से बातचीत की थी, उसकी माँ ने की थी लेकिन कभी भी उसने यह संकेत नहीं दिया था कि वह लोगों के ब्यग और विद्रूप के कारण अपने का इस प्रकार साक्षित अनुभव कर रही थी । मूर्ख मनुष्य, बिना सोचे-समझे किसी पर बसक धोप देते हैं । उन्हें जामना चाहिये कि विमला एक एम परिवार की सड़की है जिसने दो सड़के सीमांचल के

रणक्षेत्र में हैं और जिनमें से एक दाहीद हो चुका है। इस छोटे-से नगर में उसके पिता की भी कुछ ख्याति है, प्रतिष्ठा है।

‘मगवान् को दोष न दा विमला। यह तो मनुष्यों की मूर्खता है।

‘मनुष्य मूल हैं या जानी, इसकी कीन चिन्ता करता है। एक गणतंत्र में मनुष्यों की ही राय से राज्य चलता है।’

मैंने दिमासा देते हुए कहा— मैं सागों को समझाऊंगा, विमला। इसमें कुछ समय अवश्य लग सकता है। तुम धीरे-धीरे धरो।’

धाने के बाहर नौजवाना की भीड़ सघन हो गई थी। उनमें से अधिकांश विमला पर स्तन बस रहे थे। कुछ उसे देखने मान की इच्छा से गढ़े थे। वह रहस्य का केन्द्र बन गई थी। उसका सम्बन्ध में विचित्र अफवाहें प्रचलित की जा रही थीं। जिन्हें हमस जमान थी वे प्रचार कर रहे थे कि विमला की गतिविधि और उसका सारा कारोबार सदेहजनक है। एक खोली की पत्नी का ऐसी समय में आबाद छोड़ना आपत्कारी होगा।

जब-जब बाहर भीड़ का गौर बढ़ता जा रहा था विमला का चेहरा का रंग और कासा पड़ता जा रहा था। मेरे ना में प्रबल इच्छा हुई कि बाहर जाकर उन बहक हुए नौजवाना से विमला का तलाक़ का वृत्तान्त कहूँ किन्तु इतन में ही एम० पी० गार्ड एन गनिश अचानक का माय प्रवेश हुए। मैं उन्हें नहीं जानता था लेकिन अचानक ही रुक गया कि वह बढ़ अचानक



हैं। उन्होंने बड़ी शिष्टता से विमला से सरस अप्रेजी में पूछा—

‘आप चीनी भापा जानती हैं ?

‘‘घोड़ी-घोड़ी।’

आप घर में किस भापा में बात करती थीं ?

‘‘असमिया में।

आपको यह कब आनास हुआ कि आपसे एक गुप्तचर है ?

‘चीनी आक्रमण क पहल तक नहीं। उसके बाद ही उनके व्यवहार से मुझे संदेह हुआ।

‘ठीक। आपको घर में किसी संदेहजनक वस्तु के रखने की याद तो नहीं पड़ती है ?

विमला के माथे की रेखाएँ कुछ खिंची। उसमें स्मरण करने की चेष्टा की। फिर उत्तर दिया—

‘‘नहीं।’

सैनिक अधिकारी ने अपनी जब से एक पुस्तिन्दा निकाला। उसे सासकर कुछ हस्तलिखित कागज मेज पर रखे।

‘आपने ये कागजात कही देख हैं ?

वह देखते ही पहचान गई। आपसे इन्हें सदा अपन बिस्तरे के नीचे रखा था। वह घोसी—

‘‘ये कागज चीनी भापा में हैं। उस दिन सबरे मर साथ खूब हागडे ने याद उन्होंने स्टोब पर इनको जलान की चेष्टा की थी।

‘‘आपने उससे कुछ पूछा था ?

“हाँ लेकिन मेरा प्रश्न सुनते ही उन्होंने मेरे मुँह में कपड़ा डूँधकर मुझे वापस में बंद कर दिया था।”

‘वापस में क्यों?’

‘मैं नहीं जानती। सामद के मेरी हत्या करना चाहत थे।’

‘आपने क्या किया?’

‘मैं कर क्या सकती थी? मेरा मुँह बन्द था। मेरे हाथ उन्होंने बस कर अकड़ रले थे। उनकी आँखें नग और क्रोध में उमल थी। मैं पहली बार जाना कि वे एक पिशाच हैं।’

‘आपकी हत्या करने की चाही थी इसलिए?’

‘मेरी हत्या करने के प्राण ले लिये होते लौं मेरे लिए अच्छा ही होता। सब रसम मिट जाता। मैं समझ गई कि वे एक गुप्त-घर हैं।’

‘उसने मानस और बुद्ध कहा था?’

‘हाँ।’

‘क्या कहा था?’

‘असम चीन का हाना चाहिये।’

‘अस, इतना ही?’

विमला अब तर विस्फुलक टूट चुकी थी।।

‘मैं खबर नहीं जानती। और अधिपति प्रश्ना का उत्तर देने को सामर्थ्य मुझ में नहीं है।’

वह मैनिंग अफसर बुद्ध का फिर बिनबता स कहा—

‘समा करें, एव हा प्रश्न और बन्दगा। क्या अफसर ने आपका यह बताया था कि वह शीघ्र ही हम दंग का छोड़ कर जाने वाला है?’

“हाँ उन्हामे कहा था।”

‘क्या आप भी उसने साथ जा रही थीं?’

‘नहीं। मैंने उसका के लिए आभेदन दिया है।

‘क्या आपके अपने परिवार का यहाँ कोई है?’

विमला ने मेरी ओर इंगित किया। ‘मेरे पिता।

आपका नाम?’

मिन अपना नाम बताया।

‘आप भूतपूर्व सैनिक हैं?’

‘हाँ।’

‘आपका एक पुत्र मुझ से सापता है?’

‘ओ हाँ।’

मुझे लगा कि मैं सहसा कुछ ऊँचा उठ गया था। छाती सन गई।

एस० पी० और सैनिक अफसर आपस में बात करते हुए बाहर बसे गए। मिनने विमला को देखा। हवा में एक सूत पत्ते की तरह उसकी देह काँप रही थी। वह समझ नहीं पा रही थी कि उसका ऊपर दृष्टना संदेह क्यों है। मुझे यह बेलकर सन्ताप हुआ कि हमारे अधिकारी इतने सतर्क हैं। वे यथेष्ट जाँच-पड़ताम क बाद ही किसी परिणाम पर पहुँचते हैं।

मिनने पूछा—‘विमला तुम्हें भय लग रहा है?’

‘हाँ, आप यहाँ से न जायें।’

उसका मनोबल ध्वस्त हो चुका था। हँसने की चेष्टा करते हुए मिन कहा—

‘पगली, मैं तुझे मफेमी छोड़कर कहाँ जाऊँगा?’

‘आप लोगों के मन में मेरे लिए बहुत घृणा है न पिताजी?’

‘घृणा ! घृणा क्यों ? तू तो निर्दोष है ।

एस० पी० सीट आये । बोले— ‘विमला दबो !

‘जी कहिये । खलू ? बसतन का समय हा गया ?

‘हाँ बहकर एस० पी० विसखिला पड़े ।

‘भुक्त और अधिक न सताइय । जहाँ से बसना है बलिए । मैं तैयार हूँ ।’

उसके हृदय की वेदना उसकी बाजी न पुकार रही थी ।

विमला देवी हम आपको नहीं से आयेगे । आप अपने पिता के पास ही रहेंगी ।

‘एस० पी० साहब यह उपहास का अवसर नहीं है ।

‘उपहास नहीं, सुब ।

विमला को अपने जानों पर बिश्वास नहीं हुआ । उसने मेरी ओर देखा मैं भी मन्मथ मे था । मैंने पूछा—

‘क्या सब मैं इसे अपने साथ रख सकूँगा ?’

‘हाँ श्रीमान् आप लोग सब जा सकते हैं । विमला दबो आपकी रोज एक बार धान खाना होगा । बस । इतनी दर आपको जा बूट्ट हुआ उसके लिए समा चाहता हूँ ।’

फिर कुछ रक कर उन्होंने प्रस्ताव किया— ‘आप चाहें तो मैं आप लोगों को घर छोड़ आऊँ । बाहर कुछ नाइ जमा है । नहीं तो आप अपने साथ कुछ सिपाही ले जा सकते हैं ।

‘नहीं जब तक मैं इनके साथ हूँ कोई मनुषिया नहा होगी ।

‘अच्छा, मैं चलता हूँ । अनी-अनो मुन डिग्रुण्ड के लिए

रवाना होना है।”

मैं विमला का हाथ धामे बाहर आया। रात गहरी हो गई थी। धाने के पास कुछ छायाएँ इधर-उधर बिसरी हुई लगी थीं। हमें देखते ही वे आगे बढ़ीं। वे हमें घेर लेना चाहती थीं। मैं रुक गया। विमला का हाथ और कस कर धाम लिया। छायाएँ पास आ गईं बिल्कुल पास। मैं उन्हें स्पर्श कर सकता था। मैंने ध्यान से देखा। अधिकतर नगर के नौजवान थे। समत होकर पूछा— आप लोग क्या चाहते हैं ?”

एक ने ठोसी की।

‘जिसने चीनी का दामन पकटा था उसे भी पुलिस ने छोड़ दिया।’

‘हाँ वह मेरे साथ रहेगी।’

एक अस्फुट गुमगुनाहट हमारे चारों ओर उठी और अँधेरे में सर गई। मैं सावधान हो गया। सड़क के लैम्प के मद्धिम प्रकाश में मैंने परिचित चेहरे ढूँढे। कुछ नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सुपुत्र थे जिनकी दिनचर्या थी शराब पीना सिनेमा देखना और सड़क जमती मद्धकियों के साथ छेड़छाड़ करना। कुछ नामी गुंडे थे। कुछ हट कर पटरी पर सड़े थे। वे तमाशबीन होंगे। भीड़ की रचना देखा कर मैंने मन में हीसला भरा और तन कर प्रदत्त किया—

‘आप लोग क्या चाहते हैं ?’

मेरी मुद्रा देखा कर पहले तो वे डगमगाये फिर एक कोने से आवाज आई—‘आप से एक बात पूछनी है।’

‘क्या ?’

“आप क्या इस औरत को पुलिस की हिरासत से निकाल  
र बाहर लाये हैं ?”

“क्योंकि यह मिर्दोप है।”

‘आप कैसे कह सकते हैं ?’

स्वयं में उत्पत्ता थी। मैंने नरम पड़ कर समझाने की  
श्रमिणी की।

“आपेई विमसा का पति अवश्य था किन्तु जिस दिन इसने  
यह जान लिया कि वह एक गुप्तचर है उसी दिन इसने, ही  
इसी म—ठसकी अपनी पत्नी ने उसे पकड़वा दिया। इसके  
अतिरिक्त आप और क्या प्रमाण चाहते हैं ?”

क्षण भर जो वे निरन्तर हो गये। भीड़ में एक दरार देख  
कर मैं विमसा को पकड़े छोड़ा आगे बढ़ा। पीछे से किसी  
न बहा—

‘सबके के समय सब राम का नाम अपने सगते हैं।  
विमसा का कोई विदबास नहीं।’

यह सुनते ही नौसवाना का यह समूह फिर उत्तेजित हो  
गया। मैं बहा—

‘आप मागों को मेर ऊपर विद्वान है, मेरे—बपुराम  
मजुमदार के ऊपर।’

‘हां, है।’

‘ता मैं बहता हूँ विमसा सम्पूर्ण रूप से मिर्दोप है।’

‘हम कैसे मानें ?’

‘क्योंकि यह मेरी बेटा है और रजत की बही बहन।’

रजत की घड़ी घटन ! वे सब असमजत में पड़ गये।

रिक्शा को कौडन कर दिया। हमने अपने को सुरक्षित अनुभव किया। रिक्शा वाला भयमारा हो रहा था। वह हमें कहीं भी ले जाने को तयार न था। विमला का नाम लेकर धीरे-धीरे बोलने लगे। वह अपने दोनों कानों में रंगमिराई बास कर मेरा सहारा लेकर बैठ गई।

पानेदार ने कहा—

धीमान्, आप रिक्शा से उतर आये। हम कौडन में आप दोनों को यहाँ से ले आये।'

हम रिक्शा से उतर आये। भीड़ हमें ठेकती हुई आगे बढ़ने लगी। पुलिस कौडन बनाये रखने में असमर्थ रही। वह दूटने लगी। कुछ लोग हम पर हमला करने को आमादा थे। पानेदार ने मेरे निकट आकर कहा—

'अब तो साठी-चार्य करना होना करना खैर नहीं है।'

'भगवान् के लिए ऐसा न करें, मैंने विनती की।

भीड़ में उत्पत्ता बढ़ गई थी। पुलिस साठी चार्य के लिए तैयार हो गई। बेतावनी दे दी गई। किसी ने न सुनी। सुनी भी तो अनसुनी कर ही। निश्चय ही बड़ा अनर्थ होने जा रहा था। सहसा विमला ने कर जोड़ कर एक बार फिर भीड़ से गुहार की।

'राइज यदि मेरे प्राण ले कर ही आपको शान्ति मिलेगी तो मुझ मार डालिये। यह असोमन व्यवहार बंद कीजिए। मैं आप ही लोगों की बेटी और वहम हूँ। मैं यह और नहीं सह सकती।'

वे नरपशु इस पर भी क्षिप्तचित्त दिए। तरह-उरु की

बोमियाँ निकालने लगे ।

धानेदार बराबर लोगों का साठी से पीछे झकेल रहे थे ।  
स्तने में भीड़ में से कुछ पत्थर आए । एक मेरी बाँह पर लगा,  
एक विमला के माथे पर । मैंने उसे अपनी आँक में ले लिया ।

‘क्यों बेटी, चोट लग गई ?’

मेरा माथा फूट गया पिताजी ।

‘रो न बेटी भगवान् हमारी रक्षा करेंगे ।’

‘आपका भगवान् अम्मा है, पिताजी ।’

‘नहीं, ऐसा नहीं कहते हैं बेटी ।’

इतने में एक अप्रत्याशित काण्ड हा गया । भीड़ को चीरती  
हुई एक टुक आई और हम से कुछ दूर रुक गई । उसमें माइ-  
क्रोफोन लगा हुआ था । टुक में एक व्यक्ति ने लड़े हो कर  
बहना शुरू किया—

‘मैं भूइयाँ हूँ नगरपालिका का पैयरमन ।’

माइके विन्नाये — ‘सुन लिया, सुन लिया । अब तक कहीं  
ध ? जाइये, यहाँ आपकी कोई जरूरत नहीं है ।’

कहाँ था, यह भी बता दूँगा । पहले देखिये, मैं किम  
अपन माप सामा हूँ ।’

वे एक बार हट पड़े । एक बड़ोधाटी नीजवान माइका-  
फोन के सामने आया ।

‘गद्दज, मैं प्रगान्त हूँ ।’

प्रगान्त !

प्रगान्त के वासते ही भीड़ मानो मन्त्रमुग्ध हा गई । अब  
टुक की ओर मुड़ गये ।



मैंने विमला से कहा—“सुना कौन माया है ?”

“कौन, अपना प्रधान्त है ?”

“हाँ, और नहीं तो कौन ?”

प्रधान्त बड़े विश्वास से मापण दे रहा था—

“मैं अभी-अभी यहाँ पहुँचा हूँ । दुर्गम पहाड़ी मार्गों पर चलते-चलते मेरी टाँगें सूज गई हैं । मैं जिस स्थान पर ठँका था उसकी चीनियों ने ईंट से ईंट बना बी है । भारी सभ्या में उनके सैनिकों को मार कर हमारे बीर जवान पीछे हटने पर विवश हुए हैं । उन्होंने हिम्मत नहीं हारी है । चीनी आगे बढ़ रहे हैं लेकिन हमारे जवान तिस-तिस घरती के सिँए जीबट से सड़ रहे हैं और यहाँ, आप लोग क्या कर रहे हैं ?”

प्रश्न झूम्य में लो गया । किसी ने उत्तर नहीं दिया । प्रधान्त ने फिर पूछा—

“मैं जानना चाहता हूँ, यहाँ आप लोग क्या कर रहे हैं ?”

किसी ने जोश से कहा, “हम युद्ध के लिए तैयार हैं ।

एक सारभरी मुस्कान प्रधान्त के चेहरे पर खेल गई ।

“यदि युद्ध करना है तो इस तरह एक मड़की के पीछे अपनी शक्ति का दाय करके आप कुछ नहीं कर सकेंगे । आपकी उत्तेजना का कारण मैंने सुना है । आपकी आर्षका व्यर्थ है निमू ल है । विमला साइदव’ एक गुप्तधर की पत्नी अवश्य है किन्तु वह स्वयं गुप्तधर नहीं है । यदि कभी भी उसके गुप्तधर होने का प्रमाण मिला तो आप लोगों से पहले मैं उसने दण्ड की व्यवस्था करूँगा, कठोर दण्ड की ।

रजत दादा की बाइदेव प्रशान्त की बाइदेव यदि देवाद्रोही हुई तो हम आप जीवित नहीं रह सकेंगे। विमला बाइदेव का दायित्व मैं लेता हूँ। निराश होकर आप लोग अपने घर जायें। जाइये। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ।'

पहले तो भीड़ में बसमसाहट हुई फिर वह छितराने लगी। घानेदार ने मुझ और विमला को पुलिस-वेन में बड़ा दिया। वेन के खाना होते ही मैंने मुना चेवरमैन भुइयाँ ने अपना भाषण शुरू कर दिया था।

पर क' द्वार पर जगम की प्रशान्त-माओं की तरह तीन स्त्री घायलें निम्न पड़ी थी।

विमला को देखते ही प्रमिला दौड़ी आई और उसे अपने बग' में भर लिया।

'मेरी बटी मरी बटी सू जीवित लौट आई।

विमला के माये म रक्त की धार बह रही थी। मैंने कहा—

“प्रमिला उसका माया धोकर थोड़ी आयोडीन लगा दो। काफ़ी घोट आई है।

प्रमिला ने मेरे पद नहीं सुन। विमला को अब मैं मेरे उमरी भाँवे झरने लगी।

मैं बठक में चला गया। भयभीत-सी बसमला वहाँ आई और बिना कुछ पहे-मुन मेर जूते माज उतार दिए। फिर पाँव दवाने लगी। थोड़ी दर बाद, एक प्यासा गरम पाय सकर बसि आई। यय तक प्रमिला ने विमला को अन्तर स बाबर बिम्बुरे पर मिटा दिया था।

बसमला गड़ी हा गई। उसके शरीर के आभूषण मधुर

झंकार कर उठे। मैंने चाय का बूट भरते हुए पूछा—

‘बेलि, प्रधानत यहाँ आया था ?’

‘हाँ।’

‘आज वह न होता तो निश्चय ही हमारा मरन था।’

‘क्या हुआ वहाँ ?’

‘इस समय तो प्राण विल्कुल सूत गये हैं बेलि, फिर बता लेंगा। किन्तु प्रबन्ध एवम भवस गया है। वह मनुष्य बन गया है।’

‘वह मनुष्य बन गया है।’ जैसे ही यह वाक्य अमला के कानों से टकराया, उसमें एक सिहरन दौड़ गई और आनूपण एक बार फिर झकृत हो उठे।

बेलि ने कहा—

‘वह आया और आप लोगों की विपत्ति की कथा सुनते ही सीधा वहाँ चला गया।’

‘और उसने आकर हमारी रक्षा की। भगवान् ने ठीक समय उसे वहाँ भेज दिया।’

मेरी आँसुँ नींद से बोझिल हो रही थीं।

रात का दूसरा पहर बीत चुका था।



## पाँचवाँ भाग

नगर में हमारे परिवार के लिए घुणा और प्रयासा समान रूप से थीं। चीनो आक्रमण के दिनों में जब लोग अत्यन्त असिक्त थे, वे विपरीत भाष छोटी लक्ष पहुँच गये थे। किन्तु जब चीनियों ने सहसा युद्धबंदी की एकांगी घोषणा करने वापस सीट जाने का निर्णय किया तो लोगों के मन का दृष्टिकोण बम होने लगी और उन्होंने हमारे परिवार को स्वामाधिक दृष्टि से श्रेयता आरम्भ कर दिया।

विमला फिर भी स्वामाधिक अवस्था में नहीं आई। उसे अपने से घुणा हो गई थी। अपने ही नगर के लोग उसे इस तरह साक्षित और अपमानित करेंगे इसकी वह कभी एस्पना नहीं कर सकती थी।

धने उसे समझाया—

“नीड़ में कभी-कभी मनुष्य बहुत ही अशोभन काय कर उठता है। उत्तमता में ध्यक्ति का किवेक भोग हो जाता है।”

विमला ने उत्तर दिया—

“किन्तु पिताजी, उन मकड़ों ध्यक्तियों में से एक न भी ना यह नहीं कहा कि मैं निर्दोष हूँ।”

मैं विमला को क्या कहता समझाता स्वयं बम अपमानित नहीं अनुमय कर रहा था। हमारे परिवार का बमे भी उच्च

जाति और धनिकों के समाज में कोई विशेष मान नहीं था। मूल कारण वही था—कि राजत प्रधानत और विमला एक बच्ची थीं और ब्राह्मणी माँ के अवैध योग से उत्पन्न हुए थे। नगर के सम्भ्रान्त कहे जाने वाले लोगों की यह धारणा थी कि हमारा परिवार हिन्दू समाज में एक विपरीत फोड़े के समान उठ रहा था और वह एक दिन किसी भीपण आघात से अपने आप फूट कर रिस जायेगा।

हमारे परिवार की ऐसी क्षति और छाटना से ईर्ष्यासु लोगों की छाती ठडी हो रही थी। यह मैं स्वयं देख रहा था किन्तु कर क्या सकता था? यदि मुझ में सामर्थ्य होती तो अवश्य जाति-पाँति के बाधा-बन्धनों को विध्वंस और चूर्ण करने में हिन्दू समाज की उनके मज्जाजनक और हानिकर प्रभाव से रक्षा करता। आज भी ऐसा लगता है कि जाति-पाँति के भेदभाव को जड़ से मिटाने में अभी बहुत समय लगेगा।

हम राजत का मन ही मन स्मरण कर मत थे। उसकी अधिक चर्चा नहीं करते थे। विमला के अपमान की कथा भी हमने अपने दैनन्दिन के वातावरण से वञ्चित-सी कर रखी थी। मन इस ओर न भटकने इससे बचने के लिए हम सब अपने-अपने से सारे तब नागरिक प्रतिरक्षा के काम में लगाये रहते थे। हाँ एक बात कहना मैं भूल गया। हमने बेसि और अमता को भी अपने घर रहने के लिए बुसा लिया था। उन दिनों की अनिदिष्ट स्थिति में हम सब साथ रहकर ही संभावित विपत्ति का सामना करना चाहते थे।

उस दिन सुबरे प्रदान्त आयेई के घर में लोभे हुए सैनिक हस्पताल गया था। प्रमिला भी साथ गई थी। वह रोगियों की परिचर्या करती थी। विमला डिब्रूगढ़ गई हुई थी। तलाक़ क सिलसिले में उसका वहाँ अक्सर आना-जाना भगा रहता था। बेसि पाकघर में भात पका रही थी। मैं सुबरे की परेड से लौट कर स्नानघर में गया ही था। मैं पहले कढ़ चुका हूँ स्नान घर मेरा चिन्तन-घर भी है।

मैंने सुना अमला गा रही थी। स्वर मीठा था और गीत माधुर्य भरा। आधुनिक गीतों में प्रणय को दास इतनी निलम्बता से व्यक्त की जाती है कि बड़ा अंध आता है। इन गीतों में यौन प्रवृत्तियों को उकसाने के अतिरिक्त और कोई गहराई नहीं होती है। अमला क गाने का कारण मैं अनुमान कर सकता था। प्रदान्त के आन में उसके मन-उपवन में रंग और रस का संचार हो आया था।

अमला का गरीर बलि क जवानी के गरीर की एकदम अनुरक्ति है। माँपें हलका हँसती रहती हैं। किसी को एक बार देखकर वह सहज ही मोह भेती हैं। वह अब अबाध नहीं रही हैं। अपनी अल्प आयु में ही प्रेम के सम्बन्ध में इतना सचेत हो गई है कि यदि कोई उस प्रेम अर्पित करे तो वह उसरी अवहसना नहीं कर सकती है। बेसि के समान किसी क प्रेम को अमात्य कर देना उसने नहीं सीखा है। उसने ग्रहण करना ही जाना है। मेरे बहने का यह कदापि प्रयाजन नहीं है कि उसने कभी पट्टी कोई दुःखम किया है। नहीं ऐसा नहीं है।

उसके गाने में क्षमता जाती जा रही थी। नमो-नमी विषाद का स्वर भी सुनाई पड़ता था किन्तु उस स्वर में अपने मृत प्रेमी के लिए उत्पीड़न का कोई भाव नहीं मिसला था। मेरी तरह रजत को कोई याद नहीं करता था। सगता था इस अवधि में अमला भी उसे भूल चुकी थी।

अमला ने एक गीत आरम्भ किया जो हम कक्षागियों में बैसागू<sup>१</sup> के अवसर पर प्रथमित है। मनमाता गीत में तन्मय हो कर सुनता रहा। फिर वह बियानाम<sup>२</sup> गुनगुनाते लगी। उसके बाद एक बहुत ही भावपक बीहू गीत। अपनी याद से वह गीत पर गीत गाती गई। सारा घर एक सुमपुर कोमल भाव से भर गया।

स्नातघर से निकल कर मैं अपने कमरे में आया। बासों में झेंपी कर रहा था कि देखा अमला एक स्वर बुन रही थी। मैंने विनोद करते हुए कहा—

कहो यह किसके लिए बुना जा रहा है ?

'हृत्पताम में एक बृद्ध सैनिक भरती हुआ है उसके लिए।'

'कौन बृद्ध सैनिक ?

'मैंने नहीं देखा, माँ ने कहा है। माप भी माँ ने ही दिया है।'

किसने बेसि ने ?

'नाहीं इस घर बासी माँ ने।'

१ बैसागू—शोहाप बीहू एक अलमिया लोहार।

२ बियानाम—विवाह के अवसर पर पाया जाने वाला गीत।

अमता ने मन से सम्बन्ध मान लिया था। मुझ देवता कहुँ महादेव नहीं। प्रमिता की माँ कहुँ, बाँबी नहीं। मङ्गलियाँ अकारण ही ऐसे सम्बन्ध नहीं मान लेती हैं।

मैं बाहर जाकर बैठ गया। मैंने देखा एक बेसिन का फूस बिखर रहा था। उसे ठाढ़ कर मैं एकचित्त हो सूँघने लगा। इतने में बेसन के पकौड़ और चाय का प्यासा लेकर बेसिन आई। चूल्हे की ठाप से गालों पर गहरे सलाई या मई थी। सुन्दर बूझा बेबा हुआ था। बनाव-सिगार में बेसिन सग से बनुर रही थी। पकौड़ें और चाय बह मरे सामने त्रिपाही पर रखने लगी। मैंने कहा—

‘मुनो इमर भागो बलि।’

मेरी बात को मनमूनी करने का दिखावा कर के वह पापस मीटने को मुझी। मैंने झट से उठ कर उब तक पहुँच यह पूरा उसके बूँदों में ताम दिया। बनावटी शेष से वह भागी—

‘मिर भीर दाड़ी के बाल पन गये सेकिन बुद्धि जमी तक नहीं आई।’

मैं इस वक़्त। उस रात्र पाने के शायने भोज में आ तिर-स्वार किया था उसकी तुलना में यह तिरस्कार किन्तु मीठ का यह बबल मुक्त योगी ही जान सकते हैं। मैंने कहा—

‘‘जाने के दिन जितन निबट आवे जाते हैं बीते दिनों का

१ बेबा—रिवा

२ महारैब—भोगा

३ बाँबी—बाँबी



फिर से पाने की इच्छा उतनी ही प्रबल होती जाती है, वेसि ।

“आप मुझे अभी तक चाहते हैं ?

हाँ, उतना ही ।’

‘यह आप भयकर अन्याय कर रहे हैं ।

‘नहीं बेलि ।

मैं सच कहती हूँ । यहाँ रह कर मैंने जान लिया है ।  
प्रमिसा को संदेह है ।

मैं आगे कुछ न कह सका । उसका कथम सच था ।

‘परवार छोड़ कर भाई हूँ । भंडार में धान यों ही पड़ा  
है । कोई रखवासा नहीं है । मैं जाने की सोच रही हूँ ।

वह बेचस बात बना रही थी । घर की दसभाज के लिए  
आवमी था । और वह भी बूध विस्वासी ।

‘आमोगी तो सही लेकिन कुछ दिन रुक जाओ । हासत  
थोड़ी सुधर जाये ।

हासत न जाने कब सुधरेगी और कौन जाने सुधरेगी  
मो ?

‘सुधरेगी क्यों नहीं बलि । युद्ध सदा थोड़े रहने वाला  
है । वास्तव में मनुष्य युद्ध नहीं चाहते हैं ।

‘तो फिर युद्ध क्यों करते हैं ?’

जब उनमें पश्चिन्न का गुमान हो जाता है । वह पर राग्य  
सोसुप हो जाते हैं ।

वे मूर्ख हैं ।

‘मूर्ख अवश्य है किन्तु वासर के समान । आगा-पीछा  
नहीं सोचते । या कहें, नकेस पड़े पशु के समान होते हैं ।

नेता लोग उन्हें मकेस पकड़ कर बिबर बाहरी हैं बसाते हैं।"

कुछ स्वर बेनि में प्रत्य किया—“यह मुझ फिर से छिड़ेगा?”

‘कह नहीं सकता।

‘बुद्ध ने इस बिबाह को समाप्त कर दिया। रजत अब नहीं मायेगा। बमसा को बहू बनाने का प्रमिसा को सड़ा पाष है। मैं भी नुकी होने आई। कुछ प्रसता ही जाता तो मैं भी निदिपन्त हो जाती।”

“मैं सब समझता हूँ, बेनि। मेरे मन में एक उमझन है।”

“वह क्या?”

‘क्या रजत को भूस कर बमसा प्रमान्त के साथ घर बसा मकेगो? क्या रजत की स्मृति एक प्रेतारमा की तरह उसके मन पर महराती नहीं रहती?’”

बनि हेम दी। वह हेम्री रहस्यमय थी। उसने अपना वाक्य दाहराया।

“रजत अब नहीं मायेगा।

बाय ठही हा रही थी। बनि ने याद कियाई। मैंने फूट मरत हुए कहा—

‘नगर के एक परिचित दुकानदार के पास प्लैन्बैट है। बम में वही क्या था। प्लैन्बैट पर रजत को भूमामा। उसने कहा ही बिभूस उमका भाषात्र थी, कि वह बमो जीवित है। कुछ बिरयान नहीं हुआ।”

‘मैं कहती हूँ, यह अब मुट है। बायको बाया ध्यर्य है। यह अब नहीं मायेगा।”

चाय खत्म हो गई। मैं कुछ सोचता रहा। फिर पूछा—  
‘प्रमिता क्या कहती है?’

‘प्रमिता कहती है कि वह अब अमला का घर से नहीं  
जाये देगी।’

‘अर्थात् विवाह की बात पक्की हो गई है?’

‘हाँ, सम्भव हो तो इसी महीने में।

और प्रशान्त?’

प्रशान्त का नाम सुनते ही बेलि का मुँह खस गया।

‘क्यों, क्या हुआ बेलि? प्रशान्त के लिए कुछ नहीं  
बोसी।’

‘प्रशान्त तो आज अब करने को तैयार है। वह अमला  
का रूप बेस कर उम्मत हो गया है।’

‘और अमला?’

‘अमला की बात मैं पहले आप से कह चुका हूँ। उस  
जिस पात्र में रखेंगे वह अपने को उसके अनुकूल बना लेगी।  
वह रजत से अभी भी प्रेम करती है। रजत की बात सुनकर  
उसकी आँसू भर जाती हैं। किन्तु प्रशान्त का प्रति वह उदात्त  
नहीं है।’

बिसदाण बात है।

‘वास्तव में बिसदाण है। जो मैंने देखा जाना है वही  
कहती हूँ। वह रजत की वदता के समान पूजा करती है किन्तु  
प्रशान्त को अपने बराबर का अपन घरतस का मान कर पसन्द  
करती है। वह उसे अच्छा समझता है। कभी-कभी वह कहती  
है—प्रशान्त कितना सुन्दर है।’

मैं कुछ नहीं खाता। बेनि ने पूछा—“बुप क्या हो गये ?

‘बेनि एक दिन तुमने कहा था—प्रधान्त एक पशु है।  
उसका क्या आचार था।

‘स्त्रियों में एक ऐसी शक्ति होती है जिससे वे आदमियों  
का मात्र देख कर उनका स्वभाव जान सकती हैं। प्रधान्त रूप  
का सोमी है।

शायद तुम ठीक कहती हो। प्रधान्त में मनुष्य के हृदय  
की गहराई आँकन की क्षमता नहीं है। वह अममा का सुन्दर,  
मोहिनी स्वरूप और गौर वण दस्त कर ही उसपर आसक्त हो  
गया किन्तु क्या हम सब, कम अधिक मात्रा में ऐसे लोमी नहीं  
होते हैं ?

मुझ सिद्धवत्से हुए भनि ने कहा—

वेद्यिये, इन बेकार की बातों में पढ़न का सब समय नहीं  
है। वे जिन अवस्था में हैं उस देखते हुए उचित भी नहीं है।  
उनके पसीरे जलती ज्वाला के समान हैं। और देर करना  
किसी के लिए हितकर न होगा।

मैं निरुत्तर हो गया।

अध्या एक दिन के लिए और धीरज रखो। मैं साध  
सूँ।

बेनि पसी गई।

एसा समा बि भरा दुपहरी में अंधरा छा गया था।

बाहर से रजत का विवाह टूट चुका था किन्तु मैं अभी  
तब उसके सपने सँजाये हुए था। औरों के लिए भसे ही विवाह  
टूट चुका हो, मैं मन ही मन अपने प्रेम और अधुआ से हाम-

कुण्ड में आहुति डेकर उसे रोञ्च रखा जाता था ।

किन्तु उस दिन गोधूलि के समय जो बुध्द देखा उसने भीरज और विश्वास दोनों छोड़ दिये । अकस्मात् अमसा एक अपरिचित, अप्रत्याशित स्वरूप में सामने आई । बेसि ने ठीक ही कहा था—

“जसती ज्वाला की तरह उनके शरीर है । और देर करना हितकर न होगा ।

संध्या को पार्क में टहलने गया था । जाड़े की श्रुतु के फूल खिल रहे थे । टूटी, टूटती हुई पत्तियाँ बसन्त के आगमन की पूब-सूचना दे रही थीं । शीघ्र ही नई पत्तियाँ आयेंगी । घर घर में शीत का उत्साह भरेगा और सुख की सृष्टि होगी ।

पार्क के फूलों के नाम मैं नहीं जानता था । आजकल शहरों में विनायती फूलों का आदर बढ़ गया है । देखने में तो वे अवश्य सुन्दर लगते हैं किन्तु नाहर, टगर और गुसाव के नाम से असमियों के मन में जो पुसक हाती है वह इन फूलों से नहीं होती । फूलों को मिहारता हुआ मैं तिजोने पोखर पहुँच गया । इसी पोखर से तो नगर का नाम तिनसुकिया पड़ा है । बहुत पुराना पोखर है । उसके आसपास अनेक पुराने अवशेष धरती के नीचे गड़े पड़े हैं । नगर के धन-कुबेरों की कृपा से यहाँ बड़ी बड़ी किन्तु कुम्भिपूर्ण कोठियाँ उठ खड़ी हुई हैं और युगों की हमारी इतिहास के वे स्मारक उनके नीचे दब गये हैं । अब उनका उद्धार होना पड़ता है । इन बातों का कोई नहीं सोचता है । यहाँ के धनिक भी अद्भुत है । उन्हें एव ही आजादा प्रेरित करती है । धन बटोरना । इतिहास की जानकारी पाने की

उनमें कोई बाह नहीं है ।

इससे मूरज को सुनहरी किरणों से वह पोकर ऐसे जगमगा रहा था मानो किसी नागा युवती का मेखला हो । मैं मृग्य हो कर देखता रहा ।

मेरे मन में विचार आया—'मेरी इतनी आयु से इस दृश्य की कौसी अनुभूति समानता है !

इतने में एक अममान विद्विया बूक उठी और तान के एक कोने का धस सिहरा गया । मैंने देखा तान के उस पार एक बेंच पर एक युवक-युवती का जोड़ा, बातावरण से बसुध प्रणय-भाव में खोया, बैठा था । हमारे दिनों में ऐसा दृश्य बड़े-बड़ों की दृष्टि में बदायित् अधोमन माना जाता किन्तु यह धीमधीम सदी का छटा दयाक है । इस दयाक में युवक-युवती का इस प्रकार गुला प्रणय बनहोला है न अस्वामन । पुराने लोग अपने रीति-रिवाज आज के देका-भावक पर नहीं लाग सकते हैं । नई पीढ़ी के साथ समि करना आवश्यक होता है ।

एक ऊँचे पेड़ की छाड़ में बैठ कर मैं उन्हें देखता रहा । जंने ही वे गड़ हुए मैं खडा हा गया । उन्होंने पार्क का कादक गाँसा और बाहर निकल गए । मैंने भी तेजी से ब्रदम बढ़ाए । मड़क पर पहुँच कर वे दके । मैं पास आ गया था । उन्हें पह-चान लिया । युवक और कोई नहीं हमारा ही बराबर था—प्रधान्त, और युवती—हमारी होने वाली पृत्रबपू, अमना ।

१ मेखला—मृग्य के प्रकार का एक वस्त्र जो अक्षय और कादक के बीच में लटकी के स्थान पर पहना जाता है ।

२ देका-भावक—लड़के-लड़की ।

संसार का नियम है कि औरों के मुक्त व्यवहार को देख कर हम मसे ही नजर फेर सें लेकिन जब उसे अपने पर में देखते हैं तो कम से कम पहली बार, वह हमें उन्मुख समता प्रतीत होता है। वेनि क शब्द मुझे स्मरण हो आये—“प्रधान पशु है। छिः, विवाह से पहले उसका इस तरह सुस्थमसुस्था अमसा को लेकर घूमना अनर्थ है। किन्तु कौन, किसे रोक सकता है ? हमारे ब्राह्मण परिवार पर समाज का कोई नियमन नहीं है। वह तो उल्टा समाज को हमेशा अगुठा ही दिखाता आया है।

मैंने घर सौट कर प्रमिता को बुलाया और कहा—

“प्रमिता तुम्हें उनकी हरकतें मासूम हैं ?

उसके चेहरे पर चिन्ता का कोई चिह्न सक्षिप्त नहीं हुआ।  
हैंसी की एक हल्की रेखा सिख गई।

“क्यों बया हुआ ? कुछ कहें तो।”

पार्क की घटना मैंने क्यों की त्यों बयान कर दी। सुन कर वह बोसी—

“यस इतनी सी बात थी ? मैं समझी कोई भयानक काण्ड घट गया। आप भी बेकार डरते हैं।”

मुझे शोष आ गया।

“तुम नहीं जानतीं इस तरह दिन-दहाड़े मिसने का क्या परिणाम होता है ?

“जानती हूँ, सब जानती हूँ।

सब जानती हूँ ! इन शब्दों में हमारे दाम्पत्य-जीवन का एक ऐसा तथ्य निहित है कि यदि मैं स्पष्ट न कहूँ तो आप

समझ नहीं पायेंगे । मेरा धीर बेसि का सम्बन्ध कभी-कभी इतना रहस्यमय हो जाता था कि प्रमिला के साथ विवाह के पदचान् में बहुत दिन तक उससे मुँह छिपाय रहता था । प्रमिला सनकी प्रकृति की भले ही हो हृदय से अतीव करुणामयी थी । मुँह से चाहे जितना गरज से अन्तर से स्निग्ध चन्द्रिका के समान थी—सुन्दर और शांतल ।

मैंने कहा—

फिर भी हमें अपनी सन्तान को ऐसे व्यवहार से रोचना चाहिये ।”

‘यह ना बार्ड ऐसा राग है जा टीना लगा कर रोका जा सकता है ? बड़े-बड़े श्रुति-भुति या काम म कर पाये बहु क्या मैं और आप कर सकते हैं ?’

‘बड़े भाई की मंगेतर से छोटे भाई का विवाह करना वही तक उचित होगा ?’

‘आप ध्यय की दुस्विज्ञा म पड़े हैं । जब तक अग्नि के मानन घँठ पर दानों एक मूत्र में नहीं घँघ जाते कोई पनि पत्नी नहीं होते हैं । मैं दसम बोद्ध बुगईं नहीं मानती । और फिर, य बहुत भागे घड़ चुक हैं ।

‘क्या ?’

‘ये दोनों बिना एक दूसरे को देग दान म भी नहीं रह सकते हैं । यह आप भी जानत हैं ।

‘जानता हूँ ।’

हमारी बातचीत पानपर म हो रही थी । मैं एक मुँडिया पीब कर घँठ गया । गिगरट बना कर मुनगाईं ।



“प्रधान्त के पत्र मैंने आपको नहीं दिखाये हैं। उसका अमला से विवाह न हुआ तो वह घर छोड़ देगा।”

हैं।”

‘सबकी जिसके भाग्य में मिली है उसे ही मिलेगी। रजत का विवाह नहीं हुआ। उसके भाग्य में नहीं था। अब इसी के साथ हो जाये।

मैं मौन रहा।

बूँदों पर दाल बड़ी हुई थी। उबाल आने लगा था। उसमें पिसी हुई कासी मिर्च, हल्दी और जीरा डालते हुए प्रमिसा बोसी—

“आज सब जाना आपका मन-मसख बन रहा है। कई दिन से आपकी टहल नहीं कर पाई हूँ। हस्पताल में उस बुढ़े की हालत बहुत खराब थी। आज कुछ सुधार हुआ है।’

सहसा मुझे अमला के स्विटर बुनने की याद आई।

‘वही बुढ़ा जिसके लिए अमला स्विटर बुन रही थी?’

‘आप तो बड़ी ठाह रखते हैं। हाँ, वही बुढ़ा।’

“अरे, उससे कहीं स्विटर पूरा होगा। विवाह की वायु जिस लड़की का एक घाट स्पर्श कर जाये उससे भला कोई काम होता है। एक फंदा पूरा करने में घाम हो जाती है।

मेरी हँसी में प्रमिसा की हँसी मिला गई।

घाहुर नीकर सबका गार्न घोंघ रहा था। बड़बे न बतसे कर्न-कर्न कर रही थीं। बाबे में बजरियाँ मिमिया रही थीं। दूर बरबी के रोत में रू-रू कर कोई सियार बिल्सा उठता था।

प्रमिता बासी—

‘सौध रही हूँ बिबाह-मात्र के लिए बड़े बकरे को कटका हूँ । आपका क्या विचार है ?

‘पहले बिबाह ता निश्चित हो जाने दो ।

‘मैंने पुराहित के लिखि पूछ ली है । उनका कहना है बसाल् की पंचमी का याम है ।’

‘ता फिर नप क्या रह गया है ?’

‘प्रधान कहता है, उसक जाग रकने को वह तैयार नहीं है । रपय-मस की जितनी आवश्यकता होबी बह दया ।’

‘तो ठीक है, मुझे श्री श्रोता द देना । भोज में भाकर छा आर्द्धा । तुम्हारे प्रिम पुत्र का का विबाह है ।’

अन्तिम बायप प्रमिता को भुम गया ।

‘आपरी सग मही रट रही है मैं रजत का नहीं चाहता हूँ—मात्रो मैं उस अपन पेट में नहीं पाता है । एक ही बाप एा ही पेट—फिर नद बैसा ?

प्रमिता बनी-कमी अदभौत धाम कहन में नहीं सकुचाती है । मैंने धनमुने का कहना दिया । डिगरेट का मसन कर संसते हुए कहा—

‘बिबाह न हो, यह कहने की मरी सामध्य नहीं है । देगता हूँ धनि का भी मही मत्र है । तो फिर, यिनम्य क्यों ?

प्रमिता का पुछ सन्नाप हुआ ।

‘मैं कहती हूँ मूर्ख बनाने में काम नहीं हा आपका । हाय भी श्रिताने पड़ेगे । आप त्रिचिन्न हारर बठ रहिये । मारा मार में उदाल का तैपार हूँ ।

'किन्तु एक बात है प्रमिमा ।'

'क्या ?'

'लटके से कहना हाथ रोबकर सच करे । आज की आपत्कामीन स्थिति में अपव्यय करना उचित न होगा ।'

यह कहकर मैं रजत के कमरे में चला गया । उसके चित्र के सामने खड़ा होकर मैंने कहा—

'रजत, तुम जहाँ भी हा मुझे कामा करना । तुमने देश के लिए अपने प्राण दिये, किन्तु तुम्हारा बूढ़ा पिता तुम्हें कुछ न दे सका । कामा करना पुत्र ।

बाहर पदचाप हुआ । प्रधान्त और अममा सौट रहे थे । प्रधान्त सीटी बजा रहा था अममा का मुँह उद्दीप्त था ।

'उफ़, असह्य है असह्य ।'

'रजत, सोचा था एक विम इसी कमरे में तुम्हारे लिए यह लाऊँगा । किन्तु तुम इतनी दूर चले गये । कहते हैं वह लोक हिमासय के बहुत निकट है ।'

मैं कमरे से बाहर निकल आया ।

मुझे भावना हुई कि विवाह के बाद यही नव-शम्पति के साने का कमरा बनेगा । रजत के विम के स्थान पर प्रधान्त का चित्र घोषित होगा ।

एक असह्य पीड़ा मुझे नखनिस बेध गई ।

मैंने बटफ में जाकर शान्त होने की चेष्टा की । अखबार पढ़ा था । उठाकर पढ़ने लगा । सारे देश में युद्ध की तैयारियाँ हो रही हैं । साव-नाय हर व्यक्ति यह अटकल लगा रहा है कि क्या चीनी अपनी घोषणा के अनुसार सीमारेखा तक

बापस जसे जायेंगे । सब के मन में सुदेह है । जोई सन्न माव  
स चीनियों का विस्वास नहीं कर सक्ता ।

चित्र का एक पहलू यह है ।

और दूसरा ?

सागों का जीवन अपनी पिटी सक्तीर पर बस रहा है ।  
वे अपने सामान्य कामों में सग दृष्ट हैं । ब्याह-यादी के आयोजन  
कर रहे हैं । सिनमा बसत हैं । खेती करत हैं । बागखाने  
बसात हैं । चाय बापान में पसियाँ ताडते हैं ।

सगता है माा वान्ति हो चाहते हैं । और तीब नी है  
वान्ति के बिना घर बनता है न ससार ।

मान माने के बाद प्रान्त मेरे पास भाबर बठ गया  
कई दिन से उमपा मन मेरे साथ बात करन का मफुला रफ  
पा । मैंने हो यह मुयोग नहीं किया था । वह अपनी बात का  
उमके पूव हो मैंने बाउषीठ को दूसरा माड द दिया ।

'बाओ बंठा प्रान्त । यहो पहाडी मापे पर तुमने क  
देगा ? हनारे मभिरों न दुदमन का कमा मुत्रारसा किया ?

प्रान्त ने कहा—

'अब मन उनके पास गोमियाँ रहीं हमार सुनिब र  
रह । मेबिन परिम्पति हमारे पिग्द है । और चीनी ।  
बिस्तुन टिड्डीम को तरफ मान है ।'

'पिछमो मटार्द में जापानी नी लमे ही मड़े ये ।

फिर आप सागों म उन्हें कम परात्रिप दिया ?

'अच्छे इदियारों से ।

मैन देगा प्रान्त मुछ गम्भीर हो गया ।

‘पिताजी हमारे विपर्यय का क्या कारण है ?’

मैंने कुछ देर सोचा । ऐसे मुनियामी सवाल का अनसोचें कसे उत्तर देता । फिर कहा—

‘तैयारी की कमी ।’

‘लेकिन तैयारी की कमी क्यों हुई ? हमारी सरकार क्या कर रही थी ?’

मह प्रश्न व्यापक और गूस्तर था । सारे देश में प्रतिरक्षा मंत्री को दोष दिया जा रहा था । वह पद-त्याग भी कर चुके थे । किन्तु तैयारी की कमी का कारण और गहरा था ।

बहुत अटिल प्रश्न है, प्रशान्त । मैं समझता हूँ भारत को बहुत चेष्टा करनी होगी ।

‘आपके कहने का तात्पर्य पिताजी ?’

‘लोगों को ट्रेनिंग देनी होगी सैनिक मर्यादा बढ़ानी होगी उससे भी अधिक—अच्छे हथियारों की व्यवस्था करनी होगी विशेष कर हवाई जहाजों की । और अगर चीनियों ने फिर हमला किया तो हमें बिना सोच-सकोच के लक्ष्मिवासी देशों से सहायता भी लेनी होगी ।’

प्रशान्त उठ खड़ा हुआ । वह इधर-उधर टहमने लगा । फिर बठ गया ।

‘कब तक हम दूसरों का मुँह ताकते रहेंगे पिताजी ? इस देश में और कुछ न हो, कम से कम एक वस्तु का अभाव नहीं है ।’

‘वह क्या ?’

‘जनवस । इस देश का हर व्यक्ति अगर सड़ाई के लिए

कमर कसकर खड़ा हो जाये तो कौन उसकी घरती पर धमि-  
कार कर सकता है ?'

'कुम ठीक कहते ही, प्रसान्त, लेकिन लड़ाई की स्थायी  
और सुबुद्ध तमारी के लिए अपार धन चाहिये।

'धन चाहिये या मन, पिताजी ?

मैंने प्रसान्त की ओर देखा। वह बड़ो बाठ कहना सीख  
गया था। मैंने दान्त माव स कहा—

मन का अभाव ता नहीं है प्रसान्त।'

'मन ही का अभाव हुआ है पिताजी। मन का अभाव  
न होता तो धन का अभाव में हमारी ऐसी दुबचा न होती।

हम दोनों चुप हो गये। प्रसान्त बिचलित हो उठा था।

वह धीनियों का एकदम भार समाना चाहता था।

हूँ मूर यात्रा जार

सब सिद्धि हीय तार।

बिन सोचे-समझ जा मैदान में कूद पड़ता है सिद्धि उस ही  
प्राप्त होती है। किन्तु घुट बनना हेयी-यस नहीं है और वह  
भी हिमासय की डोषाहियों पर।

फिर प्रसान्त धीनियों के घेर से अपने बंध निरसने की  
कहानी सुनान लगा। अद्भुत रोमांचकारी कहानी थी। वह  
बानाग के निष्कट एण्ड हृत्पत्राम में ठनात्र था। वामोंग के पत्रम  
के माय बोधे हटने का आन्ध्र मिमा। वे कुस साठ आन्ध्रो  
ये। एण टाती बना कर धत दिया। मार्ग में अनेत्र सुनिव  
अप्रमर, क्वरर और मजदूर मित। सम साथ हा गये। लगा-  
ताए तीन दिन प्राय अनाहार माव करने के बाद तीरू पड़ेथे।

वहाँ विस्थापितों के ठहरने के लिए कैम्प बने हुए थे। एक दिन विश्राम किया और फिर तिनसुकिया आ गये।

रात के साये गहरे हो गये थे। युद्ध की सम्भी चर्चा के बाद बकान अनुभव होने लगी थी। मैं साने की तैयारी कर रहा था। तभी प्रमिता ने आकर कहा—

‘इतनी देर हो गई, समझिन अभी तक नहीं सौटीं।’

मुझे आश्चर्य हुआ। दस बज रहे थे।

‘बेलि कहाँ गई है?’

‘वे घर गई थीं।’

‘घर गई थी?’

‘हाँ सध्या तक सौट आने को कह गई थीं।’

मेरी आँखों से नींद बिबा हो गई। बेलि पर क्रोध आया। इतनी रात गये घर से निकलना मुझे बहुत नहीं सुहाता। प्रदान्त से साथ चलने के लिए कहने को भी मन नहीं किया। बेलि ऐसी नहीं थी कि अकारण बाहर रुक जाये। घर पहुँच कर उस पर कोई विपत्ति आ गई हो इसकी सम्भावना भी नहीं थी। असमंजस में मैं मौन और निष्क्रिय बठा रहा। आँखें अहात क फाटक पर सगी थीं।

प्रदान्त के चेहरे पर चिन्ता की कोई रेखा नहीं थी। स्वच्छ चाँदनी में वह मुन्दर और मुडूस चेहरा अनोखी भासा से दीप्त था। उसकी आँखें उनीवी हो रही थीं। मैंने उसे सोने को कहा। वह अपने कमरे में चला गया। थोड़ी देर बाद मैंने प्रमिता और अमसा को भी आवेष्ट दिया कि वे भाठ ला लें। दोनों को दायद तेज भूख लग रही थी। वे पाकघर में चली

गई ।

मेरा मन चिन्ता में झल्लोरे सा रहा था । मैंने कपड़े पहने, छड़ी हाथ में ली और सड़क पर निकल आया । एक रिक्शा-वाले को रोका और अतिरिक्त भाड़े का लालच देकर वसि के घर आसने को राज़ी किया ।

हमारा छोटा-सा नगर अब तक लो चुका था । बेवस्त स्टेशन पर कुछ बहस-पहस थी । स्टेशन के पिछवाड़े चाय की दो-एक स्टाल लुभी थीं । रास्ते में कुछ गुण्डे और उग्र स्वभाव के मौजवान भापस में उलझ रहे थे । कुछ लोग सड़क के बीच बैठ कर जुआ खेल रहे थे । कुछ भाग खमा कर ताप रहे थे ।

घड़मा धीरे आवाज तक बड़ जाया था । उसकी मुसी हुई चाँदनी में इस गंदे नगर की सड़क भी एक स्पष्टी धेणी की तरह धमक रही थी । रिक्शा सड़क छोड़ रहा था । ठण्ठी वायु के स्पर्श और भारी और छिन्नी नोट्स चाँदनी के प्रभाव से मैं संभार के दुग्-भुल उमपी चाह-चिन्ता को विस्मृत कर अपने बिबाने में निरुप्य हो गया ।

येति के घर के सामने जब रिक्शा रुका तब मुझ आई । यही अँधरा पहा था । रिक्शा वाले को रुकावन के कुछ और पैसे देकर मैंन दरवाजे पर पहुँच कर आवाज लगाई—

“बेसि, बेसि ।”

मगी आवाज अचैसी सौट आई । बिबाड़ टबेया । यह गुमा था । रिक्शा वाले को पुला कर उमें साप म मैं घर के मन्दर गया । बही बाई न था । पापघर में पहुँचा हा हल्ला-सा हल्ला हुआ । भाबिस असा घर देगा । एर गीरइ था ।



उसे दो-चार अपशब्द बहे । जगम का जानवर, जंगल में घायब  
हो गया ।

घर में उस्ताद खेरीसास भी नहीं था । मले-बुरे दिनों में  
वही बेसि के घर की निगरानी करता था ।

मैं सोने के कमरे में गया । बाहर छिटकी चाँदनी के  
कारण वहाँ हल्का धूमिल प्रकाश था । विस्तरा खाली था ।  
और विस्तरा ही क्या, सब सडूक कुत्ते खाली पड़े थे । मैंने  
रिक्शा वाले को बरत के मिलिट्री कैम्प में सूचना देने को  
भेजा ।

दस मिनट के भीतर सात-आठ सैनिक वहाँ आ पहुँचे ।  
उनमें एक सूबेदार था । हरेक के हाथ में टॉर्च थी । मुझ से  
पूरा हास सुन कर व घर के कोने-कोने की छानबीन करने  
लगे ।

पोखर के पास से एक ने पुकारा—

‘मरे देखो यहाँ क्या तीर रहा है ?’

मेरा तन-मन काँप गया । दीड़ा-बोड़ा बाहर पहुँचा ।  
सैनिक ने एक सरसी वस्तु पर टोर्च फँकी । मैं पहचान नहीं  
सका । हठात् देखा किनारे पर बेसि के सड्डित पड़े थे ।  
उसी समय एक साथ कई स्वर में ये शब्द सुनाई दिये—

‘ये तो कोई घब है ।’

सब टोर्च उस वस्तु पर केंद्रित थीं । सन्देह गहरा हो  
गया । कपड़े उठारकर एक सैनिक पानी में बूझ गया । उस छिटु-  
रन पी सदी की उसने कोई चिन्ता न की । थोड़ी देर में घब का  
कंधे पर बासे वह पानी से बाहर निकला और उसे सरसी पर

मिट्टा दिया था।

मह बेसि का ही शव था।

दुःख फूल गया था। शरीर पर कोई वस्त्र न था। मैंने अपनी चादर उतारकर उसे ढक दिया। फिर झुटने टेककर उसकी परीक्षा की। गले पर रंगसिरिया उमरी हुई थी। शरीर पर कोई आभूषण नहीं था। कान हाथ गया—सब नंगे थे।

सिपाही स्थिर खड़े थे। सूबेदार ने कहा—

“यहाँ एक भाइयों रहता था। वह आज नहीं है।”

“नहीं। घर-द्वार सब खुल है।

पुलिस को तत्काल सूचना देने के लिए सूबेदार ने एक सैनिक को जाने का आदेश दिया। मैंने अनुरोध किया रास्ते में हमारे घर भी कहला जाये। वह चला गया। मैंने झुक कर बेसि के मस्तक पर एक पुबन अंकित कर दिया। मेरे कण्ठ से बहा—

बेसि, किसने तुम्हारी यह दया कर दी ?”

मियारों का झुण्ड हुआ-हुआ चलने लगा।

घबर सगते ही यमि के भडोसी-बडोसी बहाँ जा गये। ऐनीताम के गायब हो जाने के कारण सबका सन्देश उसी पर हुआ।

एक न कहा— “गाम को मैं उस भाइयों को स्टेशन की दिना में जाते देता था।

बिमी धीरे से दमका समपन किया।

बेसि अब नहीं रही। लोगों से दोगले हाथ भी मैं यह लिखा

था और अमला और प्रशान्त प्रेम के आदान प्रदान में बिभोर थे उस समय बेलि का घब यहाँ, इसी तरह हीर रहा होगा।

आध घंटे में पुलिस वहाँ आ पहुँची। उसमें पहले सबके बयान लिये, फिर घर-द्वार की तलाशी। उसे समाप्त कर वह सब को पोस्टमार्टम के लिए ले जाने का तैयार करने लगी। इतने में अमला प्रशान्त और प्रमिला आ गयी। माँ के मृत शरीर को देखकर अमला ने चीत्कार किया और उससे सिपट कर विज्ञाप करने लगी।

अब वह कुछ शान्त हुई तो बानेदार माल-मते के धायज के लिए उसे घर के अन्दर से गया। उसकी धारणा थी कि यह हत्या घन-सम्पत्ति को हथियाने के उद्देश्य से की गई थी।

सोने के कमरे में खुस हुए बक्स देख कर अमला ने कहा—  
‘ये कपड़े-सत्तों से भरे थे।’

कमरे के मध्य में ईंट चुने का पक्का गड्ढा बना था। उसमें बेलि पैसे-गहन रखती थी। बह सासी पड़ा था। बरके बरसन-भाँड़े धान-मसाला यहाँ तक कि डोर-बंगर कुछ भी नहीं बचा था। इतनी वस्तुओं का अपहरण एक दिन में संभव नहीं था। यह क्रम कई दिन से निर्वाह चल रहा होगा।

प्रश्नों का उत्तर देत-देत अमला तंग आ गई।

इस बीच में प्रशान्त शरीकी से घब की परीक्षा करता रहा था। एक गहरी साँस लेकर अब वह उठा तो मैंने पूछा—

‘क्या किस परिणाम पर पहुँचे प्रशान्त?’

‘हत्या—गना घोटकर।’

अमला हुड़क-हुड़क कर रोने लगी। प्रमिला उसे दोनों

हाथों में भर कर भी बाँध नहीं सकती। पुनिच ने दाव को उठाया। अमला ने दीड कर उससे बिपटना चाहा। मैंने उसे पकड़ा और रोक दिया।

रात के दो बजे पोस्टमार्टम समाप्त हुआ। हम दाव को घर लाए। प्रमिला ने एक ब्राह्मण को बुलवाया। कटेपिटे दाव का सम्कार करने में ब्राह्मण दक्षता ने आपत्ति की। दान-वक्षिणा में वृद्धि करने में वह मान गया।

जिस विस्तरे पर बेलि सोती थी उसे प्रमिला ने अर्धों पर रखवा दिया। मौकर से घी-बंदन और आवश्यक सामग्री मँगवाई। यह निश्चय हुआ कि आग प्रदान्त देगा। जब दो दिन बाद जामाता मनना है तो उसी का आग देना उचित होगा। मैंने अपनी अनुमति दे दी।

अर्धों सब गईं। मैं बगीचे से सारे घेमि के फूल चुन लाया और बौमलता में दाव पर चढ़ा दिए।

“बेलि यह मेरा अन्तिम उपहार स्वीकार करो। तुम जा रही हो। आश्रो किन्तु मुझमें अशन्तुष्ट न होना। भगवान् निश्चय ही तुम्हें स्वर्ग में उत्तम स्थान देंगे। तुम तिष्णाप थीं, तुम पवित्र थीं।

प्रदान्त धोती पहन, अँगोछा डाल नंगे पैर दमगान जाने के लिए प्रम्युत हो गया।

अर्धों उठ गईं।

मवेरा हो गया था। दास रवि को कानन बिरणा अमला के पामे चट्टरेपर चढ़ रही थीं। जमन रात आँगा और मुखियाँ में पागी था। मैंने उसे मानसमा दते हुए कहा—

“रा नहीं, बेटी । इस घर में रहकर तुम पर कोई दुर्भाव्य नहीं आ पाएगा ।”

अमसा “माँ” कहकर बीछ उठी । घोंसलों में कबूतर फड़फड़ा पड़े और गुटरगू करने लगे । अफरियाँ अपने बाजे में खचन हो उठीं । एक कौवे ने अमसा के “माँ” का उत्तर अपनी कौव-कौब से दिया ।

हठात् प्रमिमा ने आकर अमसा को अपनी बाँहों में ले लिया ।

“एक माँ गई तो बया, दूसरी माँ तो है ।”



## छठा माग

बेलि के हत्यारे की सज़ा सगाने में पुलिस की बायबाही बहुत धीमी प्रायः बेजान-भी, बस रही थी। यह कहना बटलिन या कि कब तक हत्यारा पकड़ा जाएगा और मुकदमे का निष्पत्त होगा। बेलि की अन्तिम इच्छा पूरी करने के लिए मैं तत्परता से प्रगान्त और अमसा के विवाह की तयारी करने लगा। पुरोहित के आलापनी करने पर भी मैंने निश्चित किया कि विवाह बस के महीने में सम्पन्न कर दिया जाए। अमसा के हित में यही खेप्ट हागा। बेलि की हत्या ने मुझे यह सिखा दी थी कि जीवन अनिश्चित है कोई ठिकाना नहीं बस समाप्त हो जाए। जो काम करना है अबिलम्ब कर डालना चाहिये। नहीं तो राक्षस बने दगा होता है। उमन घग्गी से स्वयं तरु माग बनाने की कल्पना की थी। क्षमस बोल गया। कल्पना कल्पना ही रही।

एक दिन, यथाविधि, बे टोमों, अग्नि व समथ एक मूत्र में डोस गए। रजत का बमरा उन्हें दे दिया गया। रजत क नेप स्मृति-बिह्व, उमक पित्र उससे पथ उमकी एक भुगरी मैंने आन बमरे की आमपारी में साकर रग मिये। उन्हें माने गुमय भरे मत्र सत्रम थे। किन्तु मरी मार विभी से ध्यान नहीं दिया। और दिया भी हो ता गोषा होगा कि आन क

जासू हैं ।

विवाह के बाद मैं थोड़ा तटस्थ रहने लगा था । एक सभ्या मित्रों के साथ ताश खेलकर घर सौटा तो प्रमिता पाकभर से निकल कर मेरे पास रुआसी-सी आकर बोली—

“सोग बुझापे में बहू साते हैं कि सुख मिलेगा किन्तु हम बहू साए हैं खेटी ठेक कर पेट भरने के लिए । क्या मेरे भाग्य में यही निश्चय है ?”

‘क्या हुआ, क्या वे घर नहीं हैं ?’

“वे घर कभी रहते हैं ? आप स्वयं कौन घर की सुभ लेते हैं ।’

प्रमिता की फट्टूकित मुझे बुरी लगी ।

“भेटा बहू क्या करते हैं क्या नहीं करते हैं इसकी खबर रखना मेरा काम नहीं है ।”

“हस्तनी रात गये न आने कहीं गये हैं । आप ही सोचिये घर के बड़े हो कर अगर आप इन बातों पर ध्यान नहीं देंगे तो कौन देगा ।”

मञ्छा प्रशान्त को आने दो । मैं उससे कह दूँगा ।

मन में मैं जानता था कि प्रशान्त से कुछ कहने का अर्थ होगा अपना नाम-सम्मान खोना—जसती हुई आग में धी डालना । परिवार के पुराने संस्कार और मर्यादायें, उसे अब कुछ सहा न थे । वह भेताबनी दे चुका था कि बोहाग बीहू के बाद, अमता को लेकर अपनी खूटी पर बसा जायेगा । प्रमिता और मैं चिन्तित थे । एक मव बधू को लेकर मोर्चे पर जाना ! ऐसे अविवेकी प्रस्ताव में विपत्ति की अदृश्य

सम्भावनायें निहित थीं ।

प्रधान्त को सन्तुष्ट करने के लिए मैंने बैठक से पुरानी मेज-कुर्सी निकाल कर एक मई मेज और साफा सैंट बनवाये थे । इसमें मेरी जमा पूंजी का चौथाई भाग अर्पित हो गया था । मेज देख कर प्रधान ने माक भौंह सिकोड़ ली ।

‘ऐसी मेज क्यों बनवाई, पिताजी ? आजकल लोग इतनी ऊँची मेज नहीं रखते हैं ।’

मैंने समझान की बोलिचाल की कि नगर के हाकिम बदमा साहब भी ऐसी ही मेज काम में लाते हैं ।

‘बदमा साहब को कौन आपुनिक विचारों वाला मानता है ? उनका अपना घर १९१० का मॉडल है ।’

१९१० के मॉडल के घर की बात मैंने पहली बार सुनी थी । फिर भी, बात म बढ़ जाय इस डर से मैंने वह मेज सीटा दी और उसकी पसन्द की एक नीची मेज से आया । जब दूसरी फरमाइश हुई । कमरे में सग हूए बायरूम में सैनिटरी फिटिङ्ग करवा दिये जायें ।

मैंने कहा—

‘धीरे धीरे हा जायेगा बेटा । इन दिनों सर्पा बहुत हाने में हाय लिबा हुआ है । कुछ दिन सब करो । सबिस सैट्रीन स ही काम जसा सो ।’

प्रधान्त चुप हो गया । अपना अमस्तोप दिवाने की उसन रखी भर भी बेप्टा नहीं की । वह सदा से असन्तोषी रहा है । उसका फरमाइशों की सूची में आय दिन बूटि हान सया । मैं बात बर किये मुजता रहता था बाहर टहसन निकस जाता ।



जैसे ही प्रमिषा ने आश्वासन पाया कि मैं प्रस्थान्त से कुछ कहूँगा, वह एक मुठिया सा कर मेरे पास बैठ गई और अमला के दोपों का पोषा खोल दिया।

जिस घर में सबेरे सूरज भगवान बहू को बिस्तरे में सोए हुए देखते हैं उस घर में सक्मी नहीं ठहरती है।

मैं समझ गया कि आज महामारत का अखण्ड पाठ सुनना पड़ेगा। बेबसी का भाव दरसा मैं सिगरेट बनाने लगा।

‘जहाने के बाद वह अपने कपड़े तक नहीं फसाती है। नौकर के लिए छोड़ आती है। बच्चा है, वह कितना काम करेगा।’

मैंने टोका—‘तुम भी तो अपने कपड़े नौकर से ही फेंक जाती हो। फिर बहू करे ती क्या घोप।’

प्रमिषा तमक गई।

‘अब आप भी मेरी बहू से बराबरी करने लगे हैं? मैं जब इस घर में आई थी आपने कितने नौकर लगा दिए थे?’

प्रमिषा, बहू राम रहे न वह अयोध्या रही।’

बहू कुछ क्षण के लिए मौन हो गई। यद्यपि वह मसी भाँति समझती थी कि जो मैंने कहा था वह सच था, किन्तु वह उसे पचा नहीं सकती थी।

‘आप वही पुराना राग असापसे रहते हैं। अच्छी सड़की देखकर भी थी बहू कासदूत निकसी।’

मैं सिगरेट पी रहा था और मन ही मन अस्वस्थ अनुभव कर रहा था। प्रमिषा को मुझ से यह सब कुछ कहना क्या उचित था? आखिर अमला को महने पहनाने का आग्रह उसी

१ महने पहनाना—अधमिमा मुहावरे में बहू के रूप में स्वीकार करना।

ने किया था।

“सब ठीक हो जाएगा प्रमिला। इन दिनों की बातों को बहुत धूम न दो। आजकल वे मदहोश हैं।”

‘हमारा भी दिन ये। इस तरह बीबीस घंटे पढ़ बंद किए कमरे में नहीं बंठे रहते ये। पर मैं सास-ससुर हैं इसकी उस बिल्कुल खिन्ता नहीं है। बस, रोब पार्क में मटकने का चाहिये। सिनेमा का तो कोई ठिकाना ही नहीं है। इधर मैं हूँ बूढ़े घरोर स गीली सड़कियों को फूंकते-फूंकते अपनी जान हसकान किए जा रही हूँ।

मैं यह मानने को तैयार नहीं था कि प्रमिला को कोई अतिरिक्त काम करना पड़ रहा था या अमला उसका हाथ नहीं बटाती थी। मैंने अक्षर अमला को पाय बनाते, सब्जी सेबालते और बरखन मोजत पाते देखा था। फिर भी, प्रमिला को संतुष्ट करने के लिए कहा—

हाँ, तिन मदक गए हैं। हम लोग अनी हाम तक जोड़ से निकसने में धरमावे ये।

प्रमिला हल्की-सी मुस्कराई। मैंने सिगरेट का पहला बस गोंबा और धूप के छप्पे उड़ाने लगा।

“आप जसा सबीला आर्या भी मुस्किस्त सकोइ धुंके मिले। मुम से अधिक आपको पूंघट की आवश्यकता थी।”

“बुन्हाय मोटा तिरस्कार भाद है प्रमिला।

“इसी तरह जिन्दगी बीत गई। और लोग देश में दूर-दूर घूम-फिर मागे। हमें इसी पाकघर में जान देना क्या है।”

बून्हे पर खड़ी दास से प्रसाय जान लगी। पत्नी से पकड़कर

प्रमिषा ने उसे उतार दिया। उसके उलाहून पर मैंने कोई उत्साह नहीं दिखाया। छिजोरी लगभग पैदे तक सासी हो चुकी थी। उस पर प्रशान्त की माँगें दिन ब दिन बढ़ती जा रही थीं। मैंने बात मनाने का कह दिया—

‘अगले साल हम भी चलेंगे प्रमिषा।’

“अगले अगले साल ! अगला साल करते-करते भाव तक गौहाटी नहीं देखा। प्रशान्त से क्यों नहीं कहते ?”

‘उसके पास क्या धरा है।’

‘धरा क्यों नहीं है। धरवासो के लिए नित नए कपड़े साठा है। हमने जो गहने लिये थे वे उसे मुहाटे नहीं हैं। नये गहनों का मीर्चर दिया है।’

“इन बातों से क्या मिलेगा प्रमिषा। संसार की रीत है। आजकल शादी के वाप बेटा-बेटी मुड़कर नहीं देखते हैं।’

‘आप बोन आदमी हैं।’

प्रमिषा का निर्णय मेरे विपक्ष था।

अहाते के फाटक पर एक टक्की आकर रुकी। उसमें से प्रशान्त और अमसा उतरे। गाड़ा धुकाकर उन्होंने घर में प्रवेश किया। प्रशान्त लूते घरमराता हुआ और अमसा मेससे की खिसलिसाहट करती हुई हमारे सामने से निकसे और अपने कमरे में जाकर किबाड़ सगा लिया। प्रमिषा अविचल, अव्यक्त देखती रही। मुझे बेसि ने दायद स्मरण हो जाये—

‘प्रशान्त पशु है।’

वास्तव में प्रशान्त पशु है। पाग-पीने पहनने-ओड़ने, आमद

००० छटा भा।

उपभोग में ही उसका सारा ध्यान रहता है। साध्यात्मिक चिन्तन की बात उसे नहीं छूती। उसकी बेतना में इस अनुभूति को कोई स्थान नहीं है कि यह सब सुख दो दिन का है। उसके हाब-नाब, ध्यान-धारणा का एक ही उद्देश्य है—  
 ऋण कृत्वा पूत जीबेत,  
 यावत् जीबेत सुत जीबेत।

मैंने सिगरेट फेंक दी।

‘प्रमिसा रजत ऐसा कभी न होता। उसकी हर बात में माना-जान था।’

बहु सहसा बचल हो उठी। उस दिन सबरे से उसे रजत की याद आ रही थी।

‘जो होनहार था उसे भगवान न उठा लिया। उसका गसा भरा हुआ था। उसकी तसवीर टेंगी रहती थी। न जाने कहाँ गई।’

‘मैंने मासमारी में रज दी है।

‘उमे बम बैठक में टीग दगे।

और भगने दिन, जब सारा घर आंगन सबरे की घूप में नहाया हुआ था, बड़े पाप से प्रमिसा ने रजत का चित्र दीवार पर प्रतिच्छिन्न किया। उसके बाद हम दोनों घुपपाप उसे अपसफ निहारत रहे। उसकी आठुति बितनी मुन्दर थी। सगता था उमरे उमरे मुग बी आना बगापर बङ्गी आ रही थी।

न जाने जब प्रान्त हमारे पाम आबर घठ गया था। ध्यान टूटन पर मैंने उगे देगा।

“कहाँ से आ रहे हो, प्रशान्त ?”

“बसब गया था। रजत दादा के नाम पर एक छात्र देने की व्यवस्था की है। उसे खेम का बहुत शोक था।

प्रमिला किसी काम से अन्दर बसी गई।

‘रजत एक अन्ध्र खिलाड़ी ही नहीं था वह एक उत्तम मानव भी था। यदि उसने किसी अभिजात कुल में जन्म लिया होता तो निश्चय ही वह किसी दिन कम्पायर्ड-इन-बीफ बनता या प्रधान मंत्री भी।’

‘कसूना कठिन है पिताजी।’

‘तु उसे नहीं समझ सकता प्रशान्त। तेरा मन बरती पर रमा रहता है, उसका मन सर्वत्र व्याप्त था।

इस सुप्तता से वह स्थिर हो गया।

“मैं जानता हूँ आप मुझे अपना योग्य पुत्र नहीं मानते हैं किन्तु मेरा क्या दोष है ? मैं आज की दुनिया के साथ कदम मिलाकर चलना चाहता हूँ आप लोगों को यह पसन्द नहीं है।

“जो भी हो बिबेचना करने का ज्ञान तो होना चाहिये। किन्तु ज्ञान और उर्मग से माँ घर में वह नाई है। क्या उसे बोझ बहुत समुष्ट नहीं करता चाहिये ?

“माँ को कौन समुष्ट कर सकता है ? वह छोटी-छोटी बात पर अड़ जाती है। सबेरे उठने में देर हो जाये तो अपराध मानती है। भात न बनाये तो अपराध, मींग हुए कपड़े निचाड़ कर न फँसाये तो अपराध, सिनेमा जानो तो अपराध, टहलने जाओ तो अपराध, कमरे में बैठकर बात करा तो अपराध।

मैंने तो इस लिए माँ का नाम ही मिस्टर अपराध रख दिया है।”

यह कहकर वह जोर से हँसा । प्रमिता इसी समय अन्दर से जा रही थी । प्रशान्त क धब्दा उसके कानों में पड़ गये ।

“सुन ली इसकी बात । यह सब मुझ मनुष्य भी नहीं समझता है । इसीलिए मैंने पासा-पोसा था । वहाँ के सामने मेरा ऐसा अपमान !

प्रमिता के अन्दर का कोई सोया हुआ भूत जाग पड़ा था ।

देहात की औरतों कनी-कनी अपना सासपन भ्रमाने के लिए इसी तरह गरजती बरसती हैं । बदामी फिर आई भी और बरमने ली थी । उसे बाँधन के लिए मैंने प्रशान्त को पटकदार पकाले हुए कहा—

“तेरा मुँह बहुत घुस गया है । कुछ भी हो वह ठेरी माँ है।”

परिणाम मनबाहा हुआ । उसने उद्वेगता से उत्तर दिया—

मैं समझता हूँ माप लोग क्या चाहते हैं । माँ का मत है कि बहू को घर में दासी और बन्दिनी बनाकर रगना चाहिये । ठीक है । मैं पीछे ही अपने काम पर जा रहा हूँ । माप साम जितनी चाहें उसमें जहाँ पियवामें ।”

बहू उठ गया हुआ । बड़ा सतही लडका है । निम्न प्रमिता भी काम नहीं है ।

मैं बकरी के दो पाट में आ गया था।

कुछ दिन बाद मुझे विमला के तलाक के मुकदमे में गवाही देने के लिए डिप्लोमट आना पड़ा। पुलिस की निगरानी में आधेई भी एक दिन के लिए आया था। उसने मजिस्ट्रेट के सामने कहा—

“विमला मेरी पत्नी है। मैं उसे तलाक नहीं देना चाहता हूँ। हाँ अगर मुझे सुविधा मिल जाये तो मैं अपने बेल सौट जाऊँगा। यदि विमला की इच्छा मेरे साथ आने की न हो तो वह महीं रह सकती है।”

आधेई के बयान के बाद मजिस्ट्रेट ने विमला से जिरह की। अन्त में उसकी स्पष्ट उक्ति और अपने अनुमान के बस पर, आधेई की असहमति होते हुए भी उन्होंने तलाक के पक्ष में निर्णय दिया। विमला और आधेई के दाम्पत्य जीवन की इति-थी हो गई। सम्पत्ति का बटवारा अनिश्चित रहा। कदाचित् इसलिये कि तलाक की माँग विमला न की थी।

विमला डिप्लोमट ही रह गई, मैं तिनसुबिया सौट आया।

घर पहुँचकर मैं बाहर के दरवाजे में ही आराम-कुर्सी पर बैठ गया। दो-एक बार सखार कर आने की सूचना दे ली। कुछ देर में अमला एक सौटा जस और एक अँगोछा लेकर आई और मेरे पास रख दिया। मैंने देखा वह एकदम विमला जैसी हो गई थी। सिर किया था न मुँह पर पाउडर लगाया था। एक साधारण, सूती मेसला चादर पहने थी। गहने सब उतार दिये थे।

मैंने विस्मय से पूछा—

“तुम्हें क्या हुआ है, अमला बेटी ?”

वह हँसी। उस हँसी में वेदना की ध्वनि थी।

“आपने मुझ में क्या हुआ देखा है, पिताजी ?”

“तुम बिल्कुल दीम-हीन हो गई हो। तुम्हारा यह भेस मुझ अन्धा नहीं लगता है।”

“लेकिन सरकारी काटने और हल्दी पीसने के लिए अच्छे वस्त्रों की क्या आवश्यकता है ?”

“इस सत्य की उपमन्थि तुमने सहसा कैसे कर ली, अमला ?”

“शानी देतकर सीसठा है और मुझ ठोकर खाकर। सत्य का शोभ होने में कुछ विसम्य हो गया, पिताजी।”

अमला की बातों में कबोट थी और व्यग भी। मैंने कूट-नीतिक शीम का अवसम्बन्ध किया। सौदा भँगोछा लेकर हाथ-भुँह घोये-योछे थीर फिर अपने स्थान पर आकर धँठ गया। अमला घाय से आई और उसके साथ अपने बनाये हुए नारियस के सङ्घ।

“बेटी।”

दास बदापर आई हूँ। उसमें मधक डालना है।”

“माँ वहाँ गई है ?”

“अपनी माँही के खीड़ गाने गई है।”

“माँही के ?”

“हाँ।”

प्रमिता के माप रहते इनने सास बीन गये थे किन्तु इनमे पूर्ण मुर्त बर्षी यह जानकारी मही हुई थी कि इस भग्न में भी उगकी



किसी माँही का घर है। मैं समझ गया कि मेरी अनुपस्थिति में अवश्य कोई तुमसे संपर्क हुआ है जिसके फलस्वरूप अमला ने सारे अलंकार तैयार किये हैं और प्रमिला को अपनी किसी अज्ञात कुलदील माँही के घर भीहू खाने जाना पड़ा है।

मैंने पूछा— 'प्रधान्त घर में है ?'

'वे परसों जा रहे हैं, इसलिए सबारी का पता करने गये हैं।

सुना है तेजू तक कोई बीपे जा रही है।

'तुम भी जा रही हो ?'

'मुझे घर ठहरने का आदेश मिला है। माँ की इतनी जायु हो गई है। कोई पास रहने का आह्वान है।'

स्पष्ट हो गया अमला ने कपो तापसी भेस धारण कर रखा था। प्रधान्त अपनी घमकी पूरी करने पर तुला हुआ था। प्रमिला उस स्थिति को रोकने के उपायस्वरूप घर से बसी गई थी। किन्तु वह कहीं गई थी यह नौकर के अतिरिक्त कोई नहीं जानता था। नौकर को बुलाकर पूछताछ की। मामूम हुआ कि वह अपनी किसी पुरानी साधित नर्स के घर बसी गई है। वह नर्स कौन थी और कहाँ रहती थी इसका पता नहीं लगा।

परसों बोहाग भीहू जा और आज यह बाण्ड ! मेरा सिर घूमने लगा। ऐसा अनुभव हुआ कि रक्तचाप बढ़ गया है। दाँसी का भी जोर हुआ। बुरे वक्त में सब बिकार उभर आते हैं। किन्तु, मैंने सोचा यदि मैंने टाट पकड़ सी तो माँ बेटे के बीच बढ़ता हुआ मनोमासिन्य न जाने क्या रूप धारण कर स।

हमारे परिवार पर अदृष्ट अपने दातघ्नी बान सक्ष्य कर रहा था। उसकी यथासाध्य रक्षा करभी होगी।

उस दिन भास-पानी की मेरी तनिक भी हृष्या नहीं थी, सेबिन अमसा न मानी। वह बड़ी असुर और घुड़िमान सड़की है। मेरे प्रिय ध्वंजनों से थाम सजा साईं। खाना खानर में पिसम भरने में लग गया। वह ताम्बूस बूट साईं। अब से दांत हिसने सपे थे और एक दो विदा माँग चुके थे प्रमिसा ने मेरा ताम्बूस खाना बद कर दिया था। कमी बहुत बारीक काट कर ताम्बूस खाना भी चाहा तो—नस रही थी न?—ताम्बूस से बँसर हो जाता है, यह फतवा देकर उस पर पाबन्दी लगा दी। किन्तु धात्र बहू के हाथ ने बहुत होपियारी से कटे हुए ताम्बूस खाने का सोम सवरण में नहीं कर सका। मुँह में ठाम कर धीरे-धीरे बबाम लगा। प्रमिसा वहाँ होती और मुसे देगती तो बहती—

‘क्या जामवर की तरह जुगासी कर रहे हो?’

थोड़ी दर बाद लगा कि तबियत ठीक नहीं है और ताप बढ़ आया है। मैं जाकर बिस्तर पर सेट गया। खाँसी बराबर उठ रही थी। अमसा हाथ पाँव मसने लगी। उससे कुछ खैन पटा और मैं सो गया।

रात का सहसा आँग गुल गई। पड़ो ने दो बजाये। सामने के बमरे में हवा न उन्पात मचा गया था। दीवार से कुछ गिरने का शब्द सुनकर मैं उठ बैठा। शरीर जल रहा था सिर मारी था और हाथ-पाँव में मर्गों की पकान भरी थी।

‘बाहर का कमरा बन्द नहीं है ? क्या गिरा ?’

‘घोड़ी देर में किसी का पतथाप सुना ।’

‘कौन है ?’

‘मैं, अमला ।’

‘क्या कर रही हो बेटी ? रात बहुत बीत गई । साना-भीना हुआ या नहीं ।’

‘तहीं वे अभी तक नहीं सोते हैं ।’

‘क्या ?’

‘हाँ, शायद कहीं देर हो गयी हो ।’

मैं बिस्तर छोड़कर बाड़ा हो गया । पैर डमममा रहे थे । दरवाजे की चौकट का सहारा लेते हुए कहा—

‘जाओ, तुम जाओ । उसके लिए और रुके रहने की जरूरत नहीं है ।’

‘आ सँगी, आपको श्वर है—माप सेट जायें ।’

घराण्डे की रोसनी उसके कमरे में आ रही थी । मैंने देखा मेज पर एक तसबीर रखी है । उसका काष टूट गया है ।

‘किसकी तसबीर है ?’

‘बादा की ।’

‘रजत की ?’

‘हाँ ।’

‘क्या हुआ ?’

‘हुवा से गिर पड़ी ।’

मैंने अप्रसन्न होकर कहा— ‘दरवाजा क्या सुना रखा था ? तुम लोग उसके बिना का भी शान्ति नहीं लेने दोये ।’

मैंने सुना अमला सिबूक रही है। मुझे आश्चर्य हुआ। बड़े स्नेह से पूछा—

‘क्यों, मेरे कहने से तुम्हें थोटा पहुँची?’

उसके आँसू आँसों की बीर में धरे रह गये। एक गहरी सिसकी उसे हिमा गई।

“बिस्वास मानना, भेटी वह सबका साधारण मामल नहीं था। वह कोई देवदूत या जिसने समय से इस घर में जन्म पा लिया था। भगवान ने पीछ ही उसे अपनी सेवा में बुला लिया।”

अमला ने सहारा देकर मुझे बिस्तर पर लिटा दिया। फिर बड़ी सावधानी से काप के टूटे हुए टुकड़ों को फ्रेम से निकाला और रजत के चित्र को मैरी मेज पर रख दिया। सहसा उसने चित्र को प्रणाम किया।

मैंने पूछा—“रजत तुम्हें अभी भी अच्छा लगता है?”

“हाँ।”

कितना?”

“भाप से कह नहीं सकती।”

मैंने उसे पास बुलाया, मस्तक पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और कहा—

‘तुम बंमि की बेटी हो। मायावी पहचानने में धूम नहीं कर सकती। विघाटा हो विमूढ हो गया। उसे पार्थी तो समझती कि मनुष्य को बँगा होना चाहिए।’

“उनके बारे में अब हम दृष्टि से साबना मेरे लिए पाए है।”

‘किन्तु क्या, पिताजी ?’

‘रजत मेरे रक्तमांस से बवश्य उपजा था किन्तु वह मेरे या मेरे पुत्रों के ही नहीं, वह समस्त मानवोचित गुणों का सञ्जा अधिकारी था। उसे ओकर मैंने सब कुछ छो दिया।’

‘किन्तु पिताजी वे तो हैं।’

‘बौन, प्रधान्त ? हाँ।’

अमला का हाथ अपने हाथ में लेकर मैं दुभराने लगा। किसी अभ्यक्त भय से उसकी देह काँप रही थी।

‘तुम प्रधान्त को कितना प्यार करती हो ?’

‘मैं नहीं जानती। सही माँकने मैं मैं अपने को असमर्थ पाती हूँ।’

‘हाँ, बेमि ने कहा था तुम केवल ग्रहण करना जानती हो।’

‘माँ मुझे समझती थी—मुझ से बढ़कर मुझे समझती थी। उसमें अपूर्व सहज बुद्धि थी।’

बेमि के स्मरण से अमला गम्भीर हो गई।

‘यदि आज माँ होती तो—’

‘तो ? बेटा मैं तो हूँ मुझ से कुछ न छिपामा।’

म जाने क्यों अमला हँस दी। एक रुखी, जोबली हँसी। वह हँसी थी या उसका बिद्रूप ? वह बाली कुछ नहीं।

‘आओ भात लाओ। उसका क्या जाने कब आये।’

वह बेबी दुर्गा की प्रतिमा-सी पत्थी रखी मौन और अचल।

रात प्रायः बीत चुकी थी। वहीं कोई सियार बोझ उठता था। मुँगे ने ऊँचे स्वर में अन्तिम प्रहर की भूषणा दी। आम की डाल पर कोयल बुहक उठी।

“अमला, वह तुम से लड़कन तो नहीं गया है ?”

“उहो !”

मेरे और अमला के बीच वामु का अन्तर एक अदृश्य दीवार के समान था । मैं इससे अधिक और नहीं कह-सुन सकता था । एक बार और खाने का आग्रह करने मैंने आँखें बंद कर लीं ।

सवेरे जब मैं उठा सूरज काफी बढ़ चुका था । जब अभी तक नहीं टूटा था । उस दिन उक्का' का पत्र था । मैंने उल्टे ही पूछा कि गाँवों को नहलाया गया था या नहीं । अमला ने सुचित किया कि वह कार्य हो चुका था । वह नहा-धोपन सामारण सफे' बस्त्र पहने हुए थी ।

“और प्रशान्त ? वह आ गया ?”

“हाँ ।”

‘जरा उसे बुसाओ । मेरा तापमान देख लेना ।’

‘घो रहे हैं ।’

वह दो दूध उत्तर मूँसे रख गया ।

‘सो रहा है तो मौने दो ।’

अमला मेरा भाव ताड़ गई ;

“अभी जगा गे तो हूँ ।”

आँगों मनता हुआ प्रणाल्य आया । जब दरते ही मैं जान गया कि उसने रात जागरण में बिनाई थी । एक भयंकर उद्विग्नता उसे परे हुए थी । उमड़ी आँगों नारी थी और

१ जगा—बीट में एक तिन करने ।

‘किन्तु क्या, पिताजी ?’

‘रखत मेरे रक्तमांस से अबश्य उपजा था किन्तु वह मेरे या मेरे पूर्वजों के ही नहीं, वह समस्त मानवोचित गुणों का सच्चा अभिकारी था। उसे छोड़कर मैंने सब कुछ छोड़ दिया।’

‘किन्तु पिताजी, वे तो हैं।’

‘कौन, प्रश्नाक्ष ? हैं।’

अमला का हाथ अपने हाथ में लेकर मैं बुसराने लगा। किसी अव्यक्त मय से उसकी देह काँप रही थी।

‘तुम प्रदान्त को किसना प्यार करती हो ?’

‘मैं नहीं जानती। सही आँकने में मैं अपने को असमर्थ पाती हूँ।’

‘हाँ, बेसि मे बहू या तुमकेवल ग्रहण करना जानती हो।’

‘हाँ मुझे समझती थी—मुझ से बढ़कर मुझे समझती थी। उसमें अपूर्व सृष्टि बूझि थी।

बेसि के स्मरण से अमला गम्भीर हो गई।

‘यदि आज माँ होती तो—’

‘तो ? बेटी मैं तो हूँ मुझ से कुछ न छिपाया।’

न जाने क्यों अमला हँस दी। एक हँसी, साकसी हँसी। बढ़ हँसी थी या उसका विद्रूप ? वह बोसी कुछ नहीं।

‘माओ मात जाओ। उसका क्या, जाने क्या आवे।’

वह देवी दुर्गा की प्रतिमा-सी खड़ी रही मौन और मन्मथ। रात प्रायः बीत चुकी थी। कहीं कोई सियार बोल उठता था। मूर्गे ने ऊँचे स्वर में अन्तिम प्रहर की सूचना दी। आन की आस पर कोयल बुहक उठी।

“अमला, वह तुम से सबक तो नहीं गया है ?”

“उठे !”

मेरे और अमला के बीच मायु का अन्तर एक अदृश्य दीवार के समान था । मैं इससे अधिक और नहीं कह-सुन सकता था । एक बार और छाने का आग्रह करके मैंने आँखें बन्द कर लीं ।

मझे जब मैं उठा सूरज काफी बढ़ चुका था । खर मनी तक नहीं टूटा था । उस दिन उष्ण का पब था । मैंने उठे ही पूछा कि गाँवों को नहनाया गया था या नहीं । अमला ने सूचित किया कि बह कार्य हो चुका था । वह महा-धीकर साधारण सफेद वस्त्र पहने हुए थी ।

“और प्रज्ञान ? वह भा गया ?”

“हाँ ।

‘जरा उमे भुसाओ । मेरा तापमान देय लेगा ।’

‘मो रहे हैं ।

वह धी टूट उतर मुझ पास गया ।

‘सो रहा है वो सोने दो ।

अमला मेरा भाव ताड़ गई ।

अभी जगा देती हूँ ।

भागों ममता हुआ प्रणाम आया । उस देगते ही मैं जान गया कि उराने रात जागरण में बिनाई थी । एक भयंकर उद्विग्नता उमे घरे हुए थी । उसकी आँगे नारी थी और

१ जगा—बीहू मे एक दिन बरते ।



गति में संतुलन का अभाव था। वह मेरे पास आकर बैठ गया। मेरी नब्ब देसी। पास से मेरे चेहरे की जाँच की। पूछा—

“कौसी है ?

‘हाँ।’

यत्र लाकर रक्तचाप देखा। फिर नुस्खा सिखा।

“क्या देखा ?”

कुछ देर वह चुप सोचता रहा। फिर बोला—“अभी कहना कठिन है।”

अमसा वहीं खड़ी थी। प्रशान्त की ओर दृष्टि से संकेत करते हुए मैंने पूछा—

“इन्हें चाय दी ?”

‘अभी बनाई है। आप भी सेंगे ?’

“से आओ, लेकिन बहुत हल्की।”

अमसा के जान के बाद मैंने प्रशान्त से कहा—

‘मेरा शरीर गिरता जा रहा है। अब तुम इस घर की जिम्मेदारी सम्भालो।’

‘मैं कस जा रहा हूँ। सब निर्दिष्ट हो गया है।’

‘जाना चाहते हो तो जाओ, लेकिन यह सब क्या हो रहा है ? माँ घर में नहीं है और इस सड़की ने सारी रात अनाहार बिताई है। यह सब देख कर मेरा प्जर टूटना न हासल सुपरेयी।’

अन्तिम बात मैंने प्रशान्त को भोट पहुँचाने के उद्देश्य से कही थी। वैसे वह झूठ भी नहीं थी। मैं मन में गहरी

अपान्ति और वेदना अनुभव कर रहा था ।

"पिताजी, माँ के साथ निम्नता कठिन है ।

"क्यों ?"

"वह यह जानने-मानने को बिस्कुस तैयार नहीं है कि आज का आदमी क्या चाहता है ।"

कई सौग ऐसे होते हैं जिनमें आपु के साथ उनक अनुभव और बिबक में कोई वृद्धि नहीं होती है । वे सदा भावना देने रहते हैं । हमारी प्रमिता भी ऐसी ही है । उसके मस्तिष्क अपकचरा है । नहा ता बर्ष में एक बार आने वाले बौह के स्पोहार पर हमारे परिवार में व्यथ क विवाद से ऐसी बिपम स्थिति क्यों उड़ी होती । अत्र तक यह बात कम पाहिर हो चुकी होगी कि प्रमिता पर छोड़कर बसी गई है । यह तो बहो हुआ कि पति में मात सगने को भी रोहू का डेहू बना सेना । हमने सग जयतो सुराह्यो का अवदेसा करने अपने परिवार की नाथ को सनाज के छहापुत्र के विद्वय सेने का पृष्ट प्रयास किया है । यदि ऐस में हमारी नाथ किसी पैर में पड़कर बेनाबू हो जाये तो हमारे बेरी प्रसन्न होकर ऐस नाथे बूहये उसे बरसात क गए पल में छोटे मद्यलिया ।

मैंने प्रजान्त को छोटी-सी वक्तुता दे जाती ।

'मेरे दिन पूरे हो रहे हैं । अपिब मही जाना है । मेरे बाद घरदार तुम्हारा होगा । अपने मन के अनुसार बसाप्रोग ।

१ रोहू का डेहू बनाता—एक बरधिया सुराहाज जिहवा बर्ष है कि लाने की सामान्य बन्नु हो बरवी बर्ता है ऐमा बना हैना जने रोहू बरणी को बहुर ।

हाँ, थोड़ी सहिष्णुता सीख लो। वर जमाना एक महान विद्या है।”

प्रशान्त अपने को कूँए और खाई के बीच में पा रहा था। उसने मेरी बातों पर ध्यान दिया न दिया हो, किन्तु मेरे रक्तबाप की उसे अवश्य चिन्ता थी। डाक्टर जो था। अधिकार से बोला—

“पिताम्ही जाप थोड़ी देर सो जाएँ।”

मिथ्या क्यों कहूँ, दिन भर घेरे बहू ने मेरी भरसक टहस की थी। किन्तु ऐसे रोग में जिसके प्रिय परिचित स्पर्श से तन मन को शांति मिलती उस महिमामयी पत्नी का संसर्ग सुखम न था।

दोपहर से मोहल्ले में बीहू के नाच रंग की ध्वनि कानों में पड़ने लगी। मैंने सुना कि गगना, पेपा और टोका<sup>१</sup> लेकर पड़ौसी गाँव के सड़का की एक टोसी हुसारी<sup>२</sup> गाने आई है। मेरा हृदय बेकस हो गया। भगवान से प्रार्थना की—

‘हे परमात्मा उसे आज घर लौटने की सद्बुद्धि दे।’

गोधूमी के समय मेरे मन में बिधाम का बिधान साइने की प्रकृति प्रकप्त हो उठी और अकस्मात् जिन रीति रस्मों की मैंने आजीवन कमी चिन्ता नहीं की थी—जसे गायों के नई रस्ती बाँधना, गीशासा में अग्नि जमाना मेंहदी जमा करना—उमका समापन हुआ है कि नहीं, यह स्वयं देखने के लिए मैं

१ गगना पेपा और टोका—असमिबा बाघ बंन।

२ हुसारी—बीहू के बबसर पर पाये जाने वाले भक्ति गीत।

व्यग्र हो गया। यह पहला मीठू या जिसकी अभिज्ञा को हमारे घर में व्यवस्था करनी पड़ी थी। पिज्जा, पीठी और लड्डू-बनान में उसने तनिक भी घुटि नहीं की। यदि उसे सही भावेन-निर्देश मिलता तो शेष वस्तुएँ भी बना लेती। प्रमिसा की अनुपस्थिति ने सब गड़बड़ कर दिया।

प्रमिसा का अभाव मेरे अन्तर को खालता रहा, और जब देर रात गए तक वह नहीं आई तो मुझे खबर चढ़ जाया। जब मनुष्य के शरीर और मन की अवस्था अलग-अलग होती है तब वह उसी व्यक्ति का सस्य चाहता है जिस पर वह सब से अधिक निर्भर रहता है। उस रात बाई में मैं बार-बार प्रमिसा को पुकारता रहा।

जब खबर दूटा और बेतना आई तो रात अभी शेष थी। मैंने प्रयाण को आवाज दी। पास से एक अत्यन्त कातर स्त्री स्वर ने उत्तर दिया।

“नहीं हैं। गए हैं।

“इतनी रात कहीं गया है ?

“मुझे नहीं मालूम।

“तुमन पाठ पाया ?”

“सही।”

‘तुमन मात्र भी मेरी बात नहीं रानी। न जाने क्यों वह तुम जैसी लम्बी-लम्बी पन्नी फाहर रात में इस प्रकार घटकरता पिशता है।

“साथ” दाग मेरा ही है, पिशानी। पूरा का अर्थ ही होता रानी पर निर्भर रहता है। मान गया काय न करें।

घाम्त होकर सो जायें। उन्होंने कहा था नींद न आई तो कष्ट होगा।”

अमला का धिनय भाव मुझे छू गया। बात करते-करते पकान लगने लगी थी।

“बेटी दो-चार दाने पेट में डाल लो।”

“मैं खा लूंगी। आप सो जायें।”

अमला ने पानी के साथ एक गोली दी। थोड़ी देर में नींद की झुमेर आने लगी।

सबेरे उठा तो देखा कि नाटक के दृश्य की तरह पट परिवर्तन हो गया था। सास थोड़े, म्साग मुस, प्रघाम्त मेरे पाँसत बैठा था। सगता था वह तड़के ही लौटा था। ताप देखने के लिए उसने हाथ बढ़ाया तो मैंने हटा दिया।

‘तुम्हें कोई अस्तर नहीं है। मुझे मरने दो।’

‘क्यों क्या हुआ पिताजी?’

‘कल रात भी तुमने इस लड़की से उपवास करवाया?’

पिताजी उससे उपवास करने के लिए किसने कहा है? मैं तो अस्तर में लीहू मनाने गया था।

‘तो आधा सो जाओ। मेरा ज्वर देख कर क्या होगा।’

प्रघाम्त नहीं उठा। उसने जिव करके मेरे रक्तचाप का यत्र लगाया। मैंने देखा उसक चेहरे पर गहरी चिन्ता छा गई। फिर, वह उठकर चला गया। मरी हथेली और तमुए जस रहे थे। हृदय की धड़कन तीव्र हो गई थी। सिर पर मानो किसी ने एक दामा रक्त दी थी।

इतने में अमला आई। वह उजले सफेद वस्त्र पहने थी।

“स्नान हो गया, बेटी ?”

“हाँ पिताजी। आप हाथ-मुँह धोयेंगे ?”

“मुँह बड़ा कड़वा हो रहा है।”

अमला ने नमक के पानी से मुँह साफ करवाया। बाहर से एक नया सिंसा बेसि का फूस साकर मुझे दिया। उसकी गंध में मैंने बीहू के उत्सव की सजीव और सतेज प्रकृति का संदेश पाया।

“बीहू का समय जसपान तयार हो गया ?

“हाँ।”

“माँ की कोई खबर मिली ?”

“नहीं।”

“हूँ। प्रदान्त है या नहीं।”

“हूँ।”

“वह क्या आज जा रहा है ?”

प्रश्न का उत्तर दिया अमला की आँखों में डमके हुए दो आँसुओं ने।

“क्यों, क्या हुआ ? रो रही हो।

“नहीं तो।”

आँसुओं में हँसने की चेष्टा से यह मुझ भरना न मनी।

मैंने स्पष्ट अनुभव किया कि अमला हम घर में मर्यादा कातमा पा रही है। यदि प्रमिता के निर्दिष्ट मास का अनुसरण कर वह घोमा-पार्स और छुआतून के खरार में घर की खत्री

में फँस गई तो उसका दाम्पत्य जीवन नष्ट हो जाएगा। प्रशान्त स्वार्थी जीव है। उसकी धारणा है कि अमला के साथ अपना असंग जीवन बिताने का उसका सम्पूर्ण अधिकार है। उसमें मेरा या प्रमिला का बाधा बनना उचित न होगा।

मैंने आवाज दी—“प्रशान्त।”

दो तीन बार पुकारने पर वह आया।

‘तुम आज आ रहे हो?’

‘प्रबन्ध तो सब हो गया था पिताजी किन्तु मैं आपका बुखार उतरने पर ही जाऊँगा। वैसे मेरा हस्पताल फिर खुल गया है।

क्या सोनी वहाँ से चले गए?’

‘हाँ चले गए।

‘तो जाओ तुम आओ और अमला को भी अपने साथ लेते जाओ।’

प्रशान्त को एकदम मेरे शब्दों पर विश्वास नहीं हुआ।”

“आप सच कह रहे हैं? आपकी तबियत अब ”

उसके उल्हास में कितना स्वार्थीपन था। मैं चिढ़ गया।

“मेरी चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है। बुखार है दो दिन में उतर जायेगा। बिमला भी आने वाली है। वह वेस लेगी।

प्रशान्त ने प्रतिवाद नहीं किया किन्तु अमला ने आकर कहा—

“पिताजी, आप क्या कह रहे हैं? ’बीहू पर कौन अपना घर छोड़ कर जाता है। आपको बुखार है माँ घर में नहीं है।

ऐसी स्थिति में आप कहे भी तो मैं नहीं जाऊँगी।

प्रधान्य बटल था।

“तुम्हारी इच्छा। मैं तो जाऊँगी।”

“पिताजी की देखभाल कौन करेगा?”

“उसकी धरम्या मैंने कर दी है।

“हठ न करो, समय मैं तुम्हें आगेबाँद दता हूँ। तुम प्रधान्य के साथ जाओ और मुक्तो रखा। प्रमिता की समझाने का भार मैं नेता हूँ। जामा तैयारी करो।”

दोपहर को एक मिमिटी की गाड़ी आई। मैंने विशेष ध्यान नहीं दिया। प्रधान्य जा रहा था। उसी के लिए ईं हागी। किन्तु वह कुछ क्षण रुककर बसों गई। पीछे ही प्रधान्य आया। उसके हाथ में एक पत्र था। मोहर देखते ही मैं समझ गया कि सनिक हैडक्वार्टर से आया था।

“पिताजी पिताजी!”

“क्या बात है प्रधान्य? इतने उत्तेजित क्यों हो?”

“पिताजी, राजत दादा जीवित है।

राजत जीवित है! मेरा हृदय कौन गया। मैं उठ, बैठा। मुँह से कुछ न बोल मरा। किन्तु मरा घेस-नाम पूछ रहा था—  
“क्या यह समाचार सच है?”

प्रधान्य कह रहा था—

“दादा को नीनी बनी बनारस से गए थे। पण्डा उसे छोड़ दिया जायेगा। बीच में कोई गड़बड़ नहीं हुई तो पण्डा फिर से वह घर पहुँच जायेगा।”

पत्र को फाट कर मैंने खबर पढ़ा। बार-बार पढ़ा। मरा



हृदय आनन्द से हिंसोरें सेने लगा । सहसा मैंने देखा प्रदान्त का मुख भातक से विवर्ण हो गया । मैंने अमसा पर वृष्टि डाली । उसकी अवस्था सूक्ष्मान हो रही थी । उसे अस्थिर देख, प्रदान्त पकड़ कर भीतर से गया ।

मेरे अन्तर में एक अजीब उत्तार चढ़ाव होने लगा । रूढ़ रूढ़ कर एक आवाज उभर कर कहती थी—

‘बहुत देर कर दी, रजत । लौटकर अब तुम क्या पाओगे ? तुम्हारा घर बसाने का सपना चूर चूर हो गया ।’

कसी विडम्बना थी, इस समय घर में प्रमिसा थी न विमसा ।

धारों ओर घूब फैली हुई थी । हमारे घर के ऊपर आकाश में एक बादल का टुकड़ा भँडरा रहा था ।

कमरे में प्रदान्त और अमसा में कानाफूसी हो रही थी । धीरे-धीरे उसमें घस्त्रों की वही झनझनाहट आने लगी जो एक दिन मैंने आधेई और विमसा में सुनी थी ।

पत्र हाथ में लिये मैं विस्तर पर जाकर सेट गया । मैंने अनुभव किया कि मेरी देह एक प्रबल आघात से संज्ञाहीन हो गई थी । मेरा सिर चकराने लगा । मुझे स्मरण आता है मैं घुड़बुड़ाया भी था । प्रदान्त आने में क्यों देर कर रहा है ? वह अमसा को लेकर क्या क्यों नहीं आता ? वह कमरा खाली हो जाये ताकि हम दिखावे मात्र को ही सही—रजत का बर वेद्य में स्वागत करने के लिए, इस घर को एक बार फिर वैसे ही तैयार कर सकें जैसे पहले कमी किया था । किन्तु—किन्तु

वधू कीन होगी ? जिस कन्या का उसने मन से वरण किया था वह तो भाई की पत्नी बन चुकी थी ।

इतने में प्रदान्त ने आकर मेरे माथे पर हाथ रखा और ताप का अनुमान किया । मैंने पूछा—

“तुम जा नहीं रहे हो, प्रदान्त ?”

“आपका प्वर तेज हो गया है । इस दशा में आपको छोड़ कर नहीं जा सकता । मैंने सवर कर दी है । और फिर, रजत बादा भी तो मान जाना है ।”

मैंने कुछ नहीं कहा । थोड़ी देर में अपनी आ गई । एक सपना देखा । हिमामय के ऊपर से किसी ने शतम्बी यान छोड़ा है । बान से प्रज्वलित अग्नि को वायु ने उठाया और उसकी बिनगारियाँ चारों दिशाओं में व्याप्त हो गईं । एक चिनगारी एक पर पर गिरी और उसे तिनकों के डेर के सद्ग पत्तक भ्रम करते पत्ताकर राक्ष कर दिया ।

मेरी नींद टूट गई । आँख लोसी तो देखा अमसा लड़ी थी । मूय अस्त हो चुका था । दीवार पर एक छिपकली<sup>१</sup> बोल रही थी ।

अमसा ने पूछा—“अब आपको कैसा लग रहा है ?”

“क्यों, मुझे क्या हुआ था ?”

“भूछाँ भा गई थी ।

“तुम गई नहीं ?”

“हम वैसे जा सकते हैं ?”

गिड़गिरी बंद थी । अमसा को उसे गोमने का दरार

१ छिपकली बोलना—अमसा में वह शुभ भावा भाजा है ।

किया। हवा का एक झोंका आया और उसके क्षरीर में प्राण फूँक गया। जीवन धान वे गया। मैंने देखा। अमसा की आँसू सूज आई थीं और मुँह उतरा हुआ था।

“प्रधान्त कहाँ है ?

‘द्विगुणक’ गये हैं।’

“क्यों, मेरा रोग बहुत बढ़ गया क्या ?”

‘नहीं तो।’

‘तुम बात छिपा रही हो किन्तु मैं समझ गया हूँ। रोग अबश्य गम्भीर हो गया है। माँ आ गई ?

‘नहीं। सबर करा दी है।’

“रजत के आने की सबर मेजोगी तो वह आ जायेगी।”

“उन्हें सबर मिस गई होगी। समाचार पत्र, रेडियो—सभी में है।”

सहसा मैंने पूछा—

‘बेटी रजत के आने पर क्या तुम उससे धीर-स्विर भाव से बात कर सकोगी ?

“मुझे साज लयेगी।”

‘बस, इतना ही ? क्या मम में यह भाव नहीं उठेगा कि कभी तुमने इस व्यक्ति को अपना सर्वस्व देकर प्यार किया था ?

मेरी आँसू कदाचित् हिसक व्याध की तरह जस रही थीं।

२ द्विगुणक जाना—द्विगुणक में बड़ा हस्पताल है। उसमें बोलचाल की भाषा में ‘द्विगुणक गये हैं’ कहने का अर्थ होता है विशेषज्ञों से परामर्श के लिए जाना।

अमला के हाथ में धीरो का खासी गिलास था। वह छूट कर टूट गया।

'तुम इतनी कठोर हो गई हो कि उसके लिए—मने छिप कर ही सही—आँसू की एक बूँद भी नहीं गिरा सकोगी ?

अमला के हृदय पर मेरे शब्द टिन पर कण्डों की तरह बरस रहे थे।

मैंने ही उस पुत्र-वधू के रूप में स्वीकार किया था। वह बलि की बेटी थी। मेरे हृदय में उसके लिए स्नह था ममता थी। किन्तु वह धर्म की एक इमी थी जिसे गलत पात्र में रक्त दिया गया था। पित्रसने पर उसने आ आकार धारण किया वह उसका अपना आकार नहीं था। वह क्यों और थोड़े दिन पीरख रत कर उसकी प्रताशा न कर सकी ? यदि वह अपने का रोक सती ता ये अनसोई रातें ये अनाहार, ये अत्याचार जेमे न मुगतन पड़ते। अनागिन है। अब वह रजत को अपना खुद कैसे दिखावेगी ?

अमला और न सह सकी। वह फूट पड़ा।

'आप निदम हैं। आप असुर हैं। आपन क्यों मेरे अन्तर के मातृ माँप का जगापा है ? अजाम इमक आपन भर आत क्या नहीं लगा बी। माँ माँ ! तुम मुझे अपने साथ क्यों नहीं ले गई ?"

इस आम्पछा में भूत मन्तार हुआ।

अमला तेजी से भरने बमर में बनी गई और बिबाह बंद कर के रान सर्गी। उसका अन्त अमरु था।

मन्त्रों का स्थान आर्योस ने ल मिया।

मैं बिस्साया—

“किसी को मेरे पास रहने की आवश्यकता नहीं है। सब बसे जाओ यहाँ से, सब।”

हृठात माथे पर एक परिचित हाथ का स्पर्श अनुभव किया।

“कौन ?

“मैं हूँ, प्रमिता।

“तुम भी बसी जाओ। हाँ, तुम भी।”



## सातवाँ भाग

मेरी बीमारी अभी तक बिल्कुल ठीक नहीं हुई थी। उसने सुधार की दिशा में मोड़ अब्दुस से लिया था। विमला डिब्रूगढ़ से सीट आई थी। रजत के लिए घर में नया कमरा बन रहा था। निर्मापि-नाय का भार विमला ने अपने ऊपर से लिया था। यदाकदा मैं भी निरीक्षण कर आता था।

रजत के आने में एक दिन शेष था। विमला मुझ कमरा दिगाने से गई। वह सुन्दर बन गया था। कुछ चित्र जो टाँग दिए गए थे। अपने ही सचों पर उसने एक सगा हुआ बाबुल्लू और सैमिटीरी सैट्रीन बनवा दिए थे। तनाव के बाद विमला में सुसापन आ गया था। हृदय के सारे कपनों से मुक्ति पाकर वह अपने स्व-निर्बाचित कायसेन में अवि-सम्भ्र अग्रसर होना चाहती थी।

उसने मुझसे पूछा —

“रजत के आने के बाद मैं मारपरोटा बनी जाऊँगी। वहाँ मुझे काम जाए और व्यंग संनिधों के बच्चों के लिए एक स्कूल खोला गया है। मैं उसमें काम करूँगी।”

मैंने आटीबाई दिया।

“अबदय जाओ। भगवान तुम्हारा भंगस करे।”

देवारी बनन पीयन को बठोर धाम्तिविदता को भुस

जाना चाहती थी। काम में लग जायेगी तो शान्ति मिलेगी और देश-सेवा भी हो जायेगी।

सारा घर रजत के स्वागत के लिए सब-सँवर पया था। मैंने कुछ खादमी समवाकर बाग की सफाई करवा दी थी। बाग में जगमगी पेड़-पौधे और भासफूस देखकर उसे ठेस पहुँचती। उसका अन्तर बहुत कोमल है। प्रमिमा ने अपनी देख-रेख में घर में तैल और सफेदी<sup>१</sup> करवा दिए थे। बत्तनों के दड़बे और बकरियों का वाड़ा भी धो-सौँछ दिए गए थे। वहाँ गवामी देखकर वह कहता था—'मेरा पिता फूँकने लगता है, पिताजी।'।

प्रधान्त भी खूब सगन से घर का रूप सँवारने में लगा हुआ था। मैंने बैंक से कुछ रुपया निकाल कर उसे दे दिया था। कमरे में नए परदे लग गए थे। अहाते के फाटक पर मुरमई रंग हो गया था लेकिन बनी-कमी मुझे प्रधान्त के व्यवहार से आशका होती थी, विशेष कर जब वह कमरा बंद करके अमसा से बातें करता था। रजत के प्रति उसका स्नेह और श्रद्धा भटूट थे। फिर भी ऐसा प्रतीत होता था कि वह रजत को एक प्रतिद्वन्दी के रूप में देखता था।

बीच रात मैंने अमसा को प्रमिमा के कमरे की ओर जाते देखा। मुझे बताया गया कि प्रधान्त बिना पसक

१ घर में तैल सफेदी—असम के मकानों में छकड़ी का प्रयोग होता है और छिरकण्डे के शोनों और चारे या सीमेंट का कैप जिससे दीवार बनती है। छकड़ी पर तैल लगाया जाता है और दीवार पर सफेदी होती है।

सपके उसे ऐसे घूर रहा था मानो अपनी दृष्टि से उसकी देह को छसनी कर देगा। उसकी आँखा में एक भयङ्कर भाव जल रही थी। वह कभी कुछ कहना चाहता और रुक जाता। प्रमिता ने अमला को समझाया—

“यह कुछ नहीं है, बेटा। मरों को कभी-कभी ऐसा हो जाता है। औरतों को इन बातों की बहुत चिन्ता नहीं करनी चाहिए। बहुत छूट बन से मुक्ति हो जाती है।”

“छूट देने से मुक्ति हो जाती है।” यही प्रमिता का दमक है। मेरे मन की सारी तक़ाओं और आशंकाओं को भी वह यही कहकर चढ़ा देती है। हर रोग की वह यही एक दवा जानती है। उसी की एक गून्गक अमला ने उसे उतार दी। उपदेश के अनुसार अमला अपने कमर में मौट गई। मरा मनुमान है, बस रात नहीं साग। किन्तु अगली रात तो नहीं सुनी लेकिन बत्ती जलती रही।

मैंने भी सारी रात बट-बैठे आँसों में काटा। एक ही विचार में जूझता उलसता रहा। हमें इस प्रकार रहते देगन्तर रजत का कितनी भयानक बदला होगा? इसका उपचार क्या है? उदग धोर अमानि में भी— की वहाँ चिसात। बड़ मरब ही मैंने विस्तार छोड़ दिया और सारे घर को जगा दिया। विदधा का गुना बर बहू—

“रजत की अगवासी को नहीं जानाएँ ?”

उसने आश्चर्य में पूछा—“अगवासी को ?

“हाँ, माया भी अगवा है।”

“लेकिन हमें अद्वय का पदवेगा यह मानना है।



मोहनवाड़ी तक जाना होगा ।'

“फिर भी देखो मो ।’

मुझे चिन्तित और अधीर देखकर उसने कहा—

“अच्छा, आऊँगी ।

मैं जानता था कि मेरे आग्रह से विमला को कष्ट ही होगा किन्तु मेरी यह कामना थी कि रजत अपने स्वागत में कोई कोर-कसर न पाए ।

मैंने प्रशान्त को घुलवा कर कहा—

“देखो, मैं फाटक के अहाते पर उसका स्वागत करूँगा । उसक पहुँचने की सूचना मुझे दे बी जाए ।”

प्रशान्त ने मेरी नब्ब देखी । मुझे बुझार हो आया था । कमरे मे से जाकर बिस्तरे पर लिटा दिया और मेरे पास बैठ गया । बिस्तरे से उठना निषेध कर दिया ।

ऐसी हानत में यदि आप अहाते क फाटक पर न गए तो रजत दादा बुरा न मानेगा

प्रमिसा ने मेरे कपड़ बदसवा दिए । बड़े घाय से मैंने पुरानी बुछासट और पतलून पहनी । सैनिक पोशाक पहनकर मुझे सदा मुस मिसठा है । बातों में कंधी करके प्रमिसा ने कपड़ों पर चन्दन की कुमैस लगा दी । मन को अच्छा लगा ।

मैंने प्रशान्त से पूछा—

‘क्या मैं दो-चार दिन और जिंदा रह सकूँगा ?’

बह हँस पडा ।

“आप भी क्या कहत हैं ? अभी आप बहुत दिन जियेंगे ।’

मैंने देखा, प्रशान्त की आँखें साम थीं ।

“बयों, रात सोए नहीं ?”

उसने कोई उत्तर नहीं दिया । वह अभ्यसित हो गया ।  
 घामघाम वह प्राम ऐसा हो जाता है । कोई मौतली मय उसे  
 मन की बात कहने से रोक्ता है ।

‘क्या बात है पुत्र ?’

“कुछ नहीं, पिताजी ।

‘न जाने क्यों तेरे कारण एक मय मेर मत को परे  
 छूता है ।’

“कैसा मय ?”

‘मैंने उसकी आँखों में देखत हुए कहा—

“तरी एक आँख खमी है ।”

‘क्या मायने पिताजी ?’

‘तू मनुष्य के अन्दर का सत्य नहीं देख सकता है ।”

यह मेरा तात्पर्य समझ गया । कुछ टककर बाना—

‘मैं जानकर हूँ । मुझे मनुष्य के आत्मिक शरीर, उसके  
 हाड-नाख का ज्ञान है । वास्तव में मैं पशुपति के अन्दर की  
 दगने समझने में असमर्थ हूँ ।’

सहसा मैं कहा—“अमना बड़ी अन्धरी सड़ती है ।

उसने विस्मय से मरी ओर देखा ।

“बयों, क्या हुआ ?”

“अमना बड़ी अन्धरी सड़ती है, पिताजी ।’

“कुछ न कुछ अटिगता का सकार के हर प्राणियों में  
 होती है ।’

उसने कुछ कहना चाहा बिन्दु रुक गया । मैंने उसे बड़ा

दिया ।

“कहो, सकोप न करो ।

“मैंने उस जितना सत्व समझा था वह उतनी सत्व नहीं है ।

‘यह सू कैसे कहता है ?’

“इस मामले में आप से बात करना मुझे अटपटा लगता है ।

बेटे बहू के आपसी सम्बन्धों में पिता की इस प्रकार की जिज्ञासा अशोभन थी । किन्तु अपने ज्ञान-बल से मैं स्पष्ट बोल रहा था कि यदि परिवार को आने वाली विपदा से बचाना है तो शोभन अशोभन का विचार तजना होगा ।

“मेरे सामने कौसी सज्जा, प्रशान्त । मैं तुम्हारा पिता हूँ । सोसह वर्ध कं बार आप बेटा वहु माने आठे हैं । शोसी, संकोष न करो ।

“बड़े पुत्र की बात है पिताजी ।

“क्या ?”

‘अमता रजत दादा को मूल से अधिक प्यार करती है ।

‘यह तुने कैसे जाना ?

‘इन दिनों उसके आचरण से । उसने मेरे साथ बहुत अन्याय किया है ।’

उसने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ी । सिडकी से हवा का एक झोंका आकर उसके मिथित्री क्रेयन से कटे धामों को हिंसा गया । उसकी नाक की मोक आरक्त हो गई ।

मैंने कहा—

“सब एक ही हाड़-भांस के बने होते हैं । अमता ने तेरे

००० साजबी भाग

साथ कोई अन्याय नहीं किया है।'

'आप सतही बात कहते हैं। मैं आपको सारी बात नहीं बताना चाहता हूँ। और यताना आवश्यक भी नहीं है।'

विपत्ति के बादल घन हो रहे थे।

प्रगल्भ किसी काम से पड़ोस में कहीं चला गया तो मैं अमला का बुलवाया। यह अत्यन्त साधारण बेश में थी। मुझ पर विवाद की गहरी रेखाएँ थीं।

'क्या कर रही थी अमला ?'

मैं मातिकादूरी और तंगेसी के पत्ते तोड़ रही थी। मैं ने कहा था दादा का बहुत पसंद है।'

'साग उमे छुटपन से ही माने है।'

आजने मुझ किसी काम से बुलाया था ?'

'हाँ, एक बात कहनी थी।  
'क्या पिताजी ?'

उस दिन बीमारी की अवस्था में तुम से पूरी बात नहीं कर सका। पर क माग के लिए मरा तुम से अनुरोध है

अप क्या कह रहे हैं पिताजी ?

'तुम्हारे अन्तर में मैंने रजा का स्मृति क्या कर सारी भूल की थी। तुम ने टोक कहा था—मैं निश्चय हूँ, असुर हूँ।

मायन वार्द भूल नहीं की। मैं रजन दाग को मर्मा तक विमृत्त नहीं कर सकी हूँ। पिताह हान हान, परस्पर का स्नेह

१ मातिकादूरी और तंगेसी—अपम में माए जान वाले दा माग ।  
दसरी बनने होनी है।

भुसाया नहीं जा सकता है।”

“किन्तु तुम्हें भूलना होगा, अमला। तुम न भूरीं तो इस घर में मेस रहेगा न व्यवस्था। प्रशान्त ईर्ष्या में जसा जा रहा है।

“वे ऐसी स्थिति में नहीं हैं कि मुझसे बग की बात कर सकें। मैं क्या करूँ? इस क्षरीर पर मेरा अधिकार है, उस पर नियंत्रण कर सकती हूँ। किन्तु मन को कैसे बाँधूँ? एक क्षण सोचती हूँ कि एक की पत्नी होकर दूसरे की बात सोचना पाप है, तो दूसरे ही क्षण मन सब अधन तोड़कर भाग निकसता है।”

“अमला, तुम रजस को एकदम भूल जाओ नहीं तो इस घर में कोई मयानक काण्ड हो जाएगा। प्रशान्त मनकी लड़का है। उसका कपाल बुद्धि-विवेक से भूय है।

“मेरे से यह नहीं हो सकेगा पिताजी।”

तुम्हें भूलना होगा, बेटी। इस घर की मसालों के लिए तुम इतना त्याग नहीं कर सकोगी?”

“चाहती तो हूँ किन्तु अपने को दुदल पाती हूँ।”

“क्या तुम प्रशान्त से प्रेम नहीं करती हो?”

“करती हूँ, लेकिन सगता है उनमें कोई अभाव है।

“कैसा अभाव?”

“उनमें उस वस्तु का अभाव है जिसके होने से स्त्री एक-मन से अपने को पति में जो देखे है। उसमें आत्मसात् हो जाती है।”

इस छोटी-सी लड़की ने प्रशान्त के हृदय को कैसी सूदमता से परस लिया था? जिस अभाव की अनुभूति मुझे खीर बेलि को, इतने बरसात म हुई थी उसे अमला सब दिनों में जैसे सहज

पहचान गई थी ?

“उसमें अन्तरात्मा नहीं है ?”

“आत्मा अन्तरात्मा की बात मैं नहीं जानती। उनका मन उदार नहीं है। उनके हृदय में मेरे लिए कोई सबेदना होती तो वे समझ पाते कि उनसे प्रति बिना किसी प्रकार के बपट या अन्याय के मैं पहले व्यक्ति को भी अपने हृदय में स्थान दे सकती हूँ।”

अमला की बात युक्तिसंगत थी किन्तु प्रशान्त के बठोर हृदय में तक या युक्ति के लिए कोई स्थान नहीं था। वह एक पशु था।

मैं सब समझता हूँ अमला किन्तु मैं स्वार्थी हूँ। पर क मगल और दान्ति के लिए मेरी तुमसे माँग है कि जैसे नी हो रजत को भूलकर सम्पूर्ण रूप से प्रशान्त की यत जाओ। तुम्हारा नाम्य गोट्टा था और हमारा भी। यदि यह मामूम होता कि रजत शोषित है तो यह दुपटना कभी न होती।”

मेरी छड़ी की तरह अमला मुँह और निष्प्राण रहने लगी। मैंने एसे त्याग की माँग की थी जो उसकी शक्ति के पर था।

इसी समय रजतखड़ी का रूप धारण किए प्रमिला ने प्रवेश किया।

‘आपका यह वेशा अजब व्यवहार है। घट-बूट म ऐसी बातें परते नाम नहीं मानते ? उसी वया अनहोनी हमारे घर में हो गई है ? क्या करने ही पर मैं मुझ उपमूर्ध क दागड़े की सृष्टि करना चाहते हैं ?’

मैं समझ गया कि यह आन वाले भूषण की पूव मृषना

थी। ज्वर का वहाना कर सिर तक कमरस लींवा और सेठ गया। अमला अपने कमरे में चली गई।

प्रमिना धान्त नहीं हुई।

‘मैंने भी आप से पहले अग्नि को साक्षी कर, किसी का पत्ना पकड़ा था। आप स्वयं बेसि के साथ घर बसाना चाहते थे। फिर क्या हुआ? क्या हमारा आपस में मन नहीं मिला? घेठे-बहू के साथ यह प्रसंग उठा कर आप क्या करना चाहते हैं? घर का सर्वनाश करने पर तुले हैं?’

जिस समस्या को मैंने इतना विकट बना लिया था उसका प्रमिला के सहज साधारण ज्ञान द्वारा इतनी सरसठा से समाधान होते देखकर पहले तो मन में असन्तोष हुआ, किन्तु जब मैंने देखा कि मेरी भावुकता की अपेक्षा उसकी उपस्थित बुद्धि प्रशान्त-अमला रजत के तिफोने विवाद को निपटाने में अधिक कारगर होगी तो, उसके भाँड़े तिरस्कार और तर्क के प्रति विरक्ति के स्थान पर, बड़ा प्रदर्शित करने पर विवश होना पड़ा।

मैंने कहा—

‘अगर तुम समझती हो कि मेरे इस मामले में पड़ने से घर के टूटने का डर है तो इस तुम सम्भासो। मैं निश्चिन्त हो जाऊँगा।’

उसने प्रतिरोध किया।

‘अगर आप ही ‘घर टूट जायेगा’ ‘घर टूट जायेगा’ को रट लगाकर विपत्ति को न्योता देना चाहते हैं तो यह निश्चय टूट जायेगा। आप बीमार हैं निश्चित मन से पौड़ रहिये।’

मेरे सड़के हैं। मैं सम्मान लूंगी। न जो कौन हुड्डू या केंपा<sup>१</sup>  
मेरे घर पर बैठ गया है।”

मैंने मन में दान्ति अनुभव की।

‘इन बातों को तुम मुझ से ज्यादा समझती हो।’

‘समझने की क्या बात है। ‘जार कन्या तार विवाह’। जिसके  
साथ में जो सड़की लिखी है वह उसे ही मिलेगी।’

मैंने देखा कि प्रमिसा का दृष्टिकोण बहिष्कृष्टी है। उसके  
लिए अन्तर माम की वस्तु का कोई महत्त्व नहीं है। मेरा दृष्टि-  
कोण अन्तर्मुखी होता है। प्रमिसा बाह्यी रीतियों और मर्या-  
दाओं के अनुबन्ध उन चीजों के आचरण को नियंत्रित करना  
चाहती है। युग-युगान्तर से समाज इन रीतियों और मर्या-  
दाओं का पालन करता आया है। ‘जार कन्या तार विवाह’  
का विधान आज भी वही जितना ही सही है। समाज के  
नियम और बंधन स्पष्ट, कठोर और भयानक हैं। यदि कोई  
यह कहता है कि मुझे मनचाही सबूत नहीं मिली या मनचाहा घर  
नहीं मिला और इसके लिए परचाठान करता है तो वह भी  
समाज-विराधा कम है।

मैं चाहता था कि अमला अपने मन के अनुशासन से प्रेम  
के उग दी-मुँहें सप का जिसन उसे घर रखा था, एक मुँह  
विपहीन घर दे। यह एक महान त्याग था। प्रकृति का  
नियम है कि अमृत मंथन बरके हो गरम निकाला या स्रवता  
है। इस गरम घर पान यही कर सकते हैं जो सपथा समता-

१. हुड्डू और केंपा—उष्ण के प्रकार।



मान हैं, अधिकारी हैं—अर्थात् नीसकण्ठ हैं। मेरी हार्दिक कामना थी कि अमसा नीसकण्ठ की भूमिका चारण करे। किन्तु मैं यह भी जान गया था कि किसी के महू रूपी सप को अगाने का परिणाम कितना भयंकर होता है।

विमला कपड़े पहन कर एयरपोर्ट जाने के लिए तैयार हो कर आई। हाथ में एक तार था।

मैंने पूछा—“किसका तार है ?

उनका।’

‘किसका—आयेई का ?

‘हाँ।’

‘क्या सिखा है ?

‘अपने देश आ रहे हैं। विदा मांगी है।’

‘यह विदा नहीं फिर विदा है। उस देश में आकर फिर आदमी की खबर नहीं मिलती है।’

‘आप ठीक कहते हैं। चीन से कोई खबर मिलना मुश्किल है। उनके इस निर्णय से मुझे बहुत सुख मिला है।

‘कैसे ?

‘इस देश में उनके लिए कोई स्थान नहीं था।’ और फिर कुछ रुककर—“इस हृदय में भी नहीं।

‘तेरे सुख में हमारा सुख है बेटा।

‘अच्छा मैं जाऊँ रजत को से आऊँ।’

बाहर एक गाड़ी रुकी। विमला ने सिद्धकी से हाँक कर

देखा

मिसिट्टी की गाबो है। कोई उतर रहा है।

फिर हृष से चिस्माई—'रजत, रजत !'

बहाते के काटक से ही उतर आया 'बाइदेव !'

वह परिचित स्वर भरती और आकाश में गूँध गया।

मैं विस्तरे से उठ खड़ा हुआ। विमना बाहर दीड़ी। कुछ ही दणों में अपने सैनिक बूटों में ठप ठप करता हुआ वह अन्दर आया और मेरी चरणधूमि से अपने भाँधे से लगाई।

वही वस्त्र के अण्डे सी धाँगे उमरे हुए गाल, मीठा धन बना हुआ शरीर बज्रस कास बैदा, बमफवार बर्षा।

कैप्टन रजत मजुमदार।

मेरा रजत।

मुझ देगत हूँ रजत ने कहा—

पिताजी, आप इतने पमजोर कैसे हो गये ?

मैंने उगे धरती बाँहों में तम मिया और पीठ धनपपाता रखा।

'दुःखितामो ने शरीर का जबर बना दिया है। बौद्ध स गाट पम्दी है। बस तुम देगने की आस में हम पिबर में मारा मटल रहे हैं। तुम मोट आशोम यह हमने अपने में नो नही गाथा था। हमने तमज पिया था कि तुम हमें छोड गय।'

मेरा हृदय भर आया। मेरा सज्ज हो गय। इतने में

वान हैं, अधिकारी हैं—अर्थात् नीलकण्ठ हैं। मेरी हार्दिक कामना थी कि बमसा नीलकण्ठ की भूमिका धारण करे। किन्तु मैं यह भी जान गया था कि किसी के अहं स्फी सप को जगाने का परिणाम कितना भयकर होता है।

बिमसा कपड़े पहन कर एयरपोर्ट आने के लिए तैयार हो कर आई। हाथ में एक तार था।

मैंने पूछा—“किसका तार है ?”

उमका।

‘किसका—आपेई का ?’

‘हाँ।’

क्या सिखा है ?

‘अपने देश जा रहे हैं। विदा मांगी है।’

“यह विदा नहीं, धिर बिदा है। उस देश में आकर फिर आदमी की सबर नहीं मिलती है।

‘आप ठीक कहते हैं। चीन से कोई सबर मिलना मुश्किल है। उनके इस निर्णय से मुझे बहुत सुख मिला है।’

‘कैसे ?’

‘इस देश में उनके लिए कोई स्थान नहीं था।’ और फिर कुछ रुककर— ‘इस हृदय में भी नहीं।’

‘तेरे सुख में हमारा सुख है बेटी।’

‘अच्छा मैं जाऊँ रजत को ले आऊँ।’

बाहर एक गाड़ी रकी। बिमसा ने सिड़की से झोक कर

देखा

मिसिद्रा की गाड़ी है। कोई उतर रहा है।

फिर हृष से बिस्मार्क—“रजत, रजत !”

बहुते के काटक से ही उतर माया “बाह्येव ।”

बहु परिचित स्वर बरती और आकाश में गूँब गया।

मैं विस्तरे से उठ खड़ा हुआ। विमला बाहर षीकी। कुछ ही क्षणों में अपने सैनिक वृत्तों में ठप ठप करता हुआ वह दम्वर आया और मेरी चरणसूक्ति से अपने माथे से लगाई।

वही अक्षर के अण्डे सी भाँपें, उमरे हुए गान, मीठा बज, समा हुआ तरोर कज्जल काल कल, कनकदार बर्दी।

कैप्टेन रजत मञ्जुमार।

मरा रजत।

मुम देगत न रजत न कया—

“विभाजी आप इनके अक्षर कम हो गये ?

मैं नये भावों बाँहों में कम निदा और नर

प्रमिसा वा गई ।

“वाह, अभी तो बड़का पहुँचा है और तुम वहाँ मर रहे हो ! यह तो आनन्द मनाने की घड़ी है ।”

मेरी वहाँ से मुक्त हो कर रघु ने माँ का चरण स्पर्श किया ।

‘बोहू का प्रणाम करने में बहुत विलम्ब हो गया माँ । क्षमा करें ।’

उसने अर्धसौ को सुटकेस सात का आदेश दिया । जल्दी से उसे सोसा और एक सुन्दर पाता की चादर और एक महीन घोंटी निकाली । चादर माँ को और घोंटी मुझे प्रस्तुत की ।

“घड़ी जल्दी में आना हुआ है । और कुछ नहीं ला सका ।”

प्रमिसा ने कहा—

जो साथे ही वह क्या कम है । तुम जायें । हमारा परम आग्रह है ।

सात घुँद के एक झोठका का टुकड़ा उसने प्रमिसा को दिया ।

बाहदेव यह तेरे लिए है ।

‘कहाँ खरीदा ? बहुत अच्छा है ।’

फिर एक रेशमी कुर्ता निकाला ।

“यह प्रशान्त का है । बाहदेव तू ही रज से । ये सब दिस्सी से लाया हूँ ।

‘तुम दिस्सी होकर जाय हो ?’

१ पाठ—एक प्रकार का बगदिया रेशम ।

‘हाँ, पिताजी।’

बुल्ले के तोड़े एक मैसूरी रेशम की छाड़ी थी। वह उसने नहीं निवाली। सूटकेस बंद करते हुए विमला से पूछा—

‘भीनहीदेव’ के क्या समाचार हैं?’

विमला का चेहरा एकदम काला पड़ गया। मिन संक्षम में सारा वृत्तान्त सुनाया। सुनते ही रजत की आश्रुति कठोर हो गई।

‘तूने ठीक किया बाहूँबे। बिल्कुल ठीक।’

फिर मेरी ओर मध्य करके बोला—

‘उमका जैसा असम्य और निन्दनीय व्यवहार कहीं देखा न मुना।’

‘बिसकी बात कर रहा है रजत?’

‘भीनिया की। आपको अपना एक अनुभव सुनाता हूँ पिताजी।’

मै सक्रिय का सहारा लेकर सेट गया। विमला पाँयत बठ गई। प्रमिता दरवाज़ के पास काम लगाये गयी रही। रजत सामन कुर्सी पर बैठ गया।

हम लोग एक डुम की रथा कर रहे थे। मरे अपान पी-जान से मड़ रहे थे। मै दृष मे था। गनु की सहामन दुक-दिया पारों ओर से उमड़ी आ रही थी। जब देगा कि पुन बखान का बोर्ड उपाय नहीं है ता जवानों को फीसे दृष्टने का आगे दिया। हम आहूँते थे कि लगभग नो कर्नाग पीर हू

१ भीनहीदेव—कई जग का गनि।

“तुमने अपना उपहार देखा ?”

“नहीं।”

विमला ने प्रधान्त को कुर्ता देते हुए कहा—

“यह साया है रजत तेरे लिए।”

कुर्ता ले कर प्रधान्त, रजत की आगे कवा सुमने की प्रतीक्षा में एक कुर्सी पर बैठ गया। प्रमिला बोली—“रजत, कुछ जसपान से आऊँ ?”

“नहीं माँ। अब एक बार ही भात साऊँगा।”

कवा में इस व्याघात से मैं अधीर हो उठा।

‘फिर क्या हुआ, बेटे ?’

“भेरी घात सुन कर उन श्रीमती जी का पारा आसमान तक पहुँच गया। मुझे से जाकर एक निर्जन, भेरी कोठरी में आस दिया गया। उस दिन से लेकर सौदने के दिन तक मैंने अपने किसी साथी अफसर या जवान को नहीं देखा।

“इन चीमियों के लिए किसी अन्तर्राष्ट्रीय नियम या संधि का कोई मूल्य या महत्त्व नहीं है। यहाँ की तुमना में हमारी सरकार ने आपई आदि को कितना आराम से रखा था। क्यों न विमला ?”

“हाँ, देखनी में सब मन्तरबदों को एक साथ रखा गया। उन्हें हर प्रकार की सुविधा दी गई। खेस-कूद, मिसाई-पड़ाई, चिट्ठी-पत्री—सब की।

‘तू बहाँ गई थी बाइबेस ?’

“महीं उन्होंने मिला था।”

“हमारे स्थिति इसके विपरीत थी। खाने को छोड़ कर सब सुविधायें बढ़ थीं। अगले दिन सवेरे, फुट माथ करा कर, मुझे न्हासा की दिना में एक कस्बे में पहुँचा दिया गया। कस्बे का नाम मुझे याद नहीं जा रहा है। वहीं सिखा हुआ है। अन्त तक मैं यही एकान्त कारावास में रहा। मरी बोटरी में एक रक्षियाँ थी। उस पर केवल फोकिन मुता जा सकता था। दिल्ली या गोहाटी नहीं। कभी-कभी अपने देश के समाचार पाने की मन प्रेरणा हो उठता था। मैकिन क्या करता ?

सबसे धाम, पाय पीने के बाद एक सड़की आया करती थी। वह हँस-हँस कर बातें करती। एक दिन माथो-न्स-सुंग की बन्दना में उसने एक गीत गाया। अथ पृथ्वी पर एसा लगा कि माथो-न्स-सुंग ने परम ब्रह्म का पद ले लिया है। मैंने कहा—‘हम अपने देश में किसी को इस प्रकार नहीं पूजते हैं। वह बोली—‘क्योंकि वहाँ ऐसा कोई है ही नहीं। मैंने कहा—‘धीमछी जो हमारे देश ने गांधी अमे व्यक्ति को जन्म दिया है। मैकिन हम गणतंत्र में विश्वास करते हैं। हमारे लिए जनता ही राजा है। उसमें मरी गणतंत्र वाली बात को गिल्ली उठाने को बेव्याही (मुत स सहज न हुआ। मैंने रिविया कर कहा—‘मृत सोम पित्रों के साथ के समान ही, परकटे और गद्दू। जो रटा दिया वह रट लिया। किसी ने पुष्पारण और पूरा पाठ दुहरा दिया। हम मुक्त कपाठ के समान हैं। सारे भाषाओं में अबाध उदात्त भरते हैं और मानन्द मनाते हैं।

“यह सारात्र हो गई। मैं उठकर गिडटा के पास गया। उसने खाने वाली मरी ने मरी कर्पनी हवा को याद दिया



और हाथ जोड़ कर प्रकृति देवी से थोड़ी सी भूप के घरवान की याचना की। मैंने देखा, दूर कुछ नौजवानों को परेड करवाई जा रही थी। नये रगस्ट थे। शायद तिख्खती।

“सिड़की के नीचे एक बड़ी सबक बनाई जा रही थी। पत्थर ठोड़ने और डायनामाइट के विस्फोट की आवाज आ रही थी। मजदूर सब तिख्खती थे। उनके चेहरे बुझे हुए थे। क्रूर आदृति के पीनो सनिकों की देखरेख में, सिर सुकाये, बेमन, बजान थे बस काम किये जा रहे थे। समझने में देर नहीं लगी कि सबक क्या बनवाई जा रही थी।”

‘क्यों?’

‘सेना और रसद की आवाजानी के लिए। कुछ दिन बाद मैंने वहाँ नई सनिक टुकड़ियाँ भी जमा हाते देखीं। और फिर वहाँ बड हवाई जहाज उड़ने उतरने की पटरी भी बनने लगी।

‘क्या वे फिर आक्रमण करने की साध रहे हैं?’

‘मैं नहीं जानता पिताजी किन्तु उनकी तैयारियाँ बराबर चल रही हैं।

सहसा विमला ने प्रश्न किया—

‘क्या हम चाँदियों का बिस्वास कर सकते हैं रजत?’

रजत ने कहा—

‘जहाँ शक्ति का राज्य होता है वहाँ प्रेम बरुणा, मन्त्री—  
य नहीं रहते हैं। शक्ति मनुष्य का अधा बना देती है। अच्छा बाइबल, तू ही बटा आघेई न किस आधार पर असम को पीनी इसाका समसा पा?’

“कोई सुक्ति ता प्रस्तुत नहीं की थी किन्तु ऐसा सोचना उस अश्या सगठा था।

“भाज्य भी बात है। धीनों सोचते हैं कि यदि भारत पर अपनी विचारधारा लादने के लिए उन्हें युद्ध का मो सहारा लेना पड़े तो य तयार है।

‘क्या यं सुस्मयमुस्मा ऐसा कहते हैं ?

‘मैं से न सोते था क्या, पेट न ता मही है।

रजत रुक गया।

‘एक गाँव मेरे मन न मझरा रही थी।

‘क्या यह सप है कि चीनियों न तुन लोगों स अपने नगरों में मावजिनिय परेड परबाई ?’

‘वहाँ मैं था यहाँ तो नहीं किन्तु अन्य मुउबयी कह रहे थ कि कुछ दूर क नगरों में एमा हुआ था।

‘यह सवमा अनुचित है।

‘हाँ, जिनीया की संधि क अनुचार सुउबदिया स ऐसा अग्रहाण करना अनुचित है। मैंने नैम्प कमाण्डर से कहा था। मुत्तर यह हेम दिया। मुन स गई धार कम्पूनिस्ट बनन को कहा गया। मैंने उन्हें गार्सियों दी— तो गीत कर।

दिन न दो बार यह सझरा आती थी। पानी-कनी रल न भी भा जातो। एरात कोठरों न जवान सड़ने का डा प्रकाश आता अश्या नहीं है, यह कह कर मैं जगल धारण जान का भावत करता। सजिन यह हराती—हंसती रहती। यहाँ माग एग ही हेतत रहत है। यह हेतता भा एक एनावा है पागा है। उनको यही कागिण रहता है कि दुपरे का मल-सजिनउन

कर दें।

“पिताजी, युद्ध के बीज ने उनके हृदय में गहरी जड़ पकड़ ली है। उसके उन्मूलन में समय लगेगा। हमने उनका क्या विमादा था? हम उनके मित्र थे। वे भी भाई भाई का नारा लगाते थे किन्तु उन्होंने महाना घना कर हमारी सीमा पर आक्रमण किया। और प्रश्न क्या करते हैं? कि आक्रमणकारी हम हैं। हम जानते हैं सीमारेखा पर हमारी सेना क्यों थी जितनी थी, क्या कर रही थी। हमारी नीति की यह नींव की ईंट थी कि चीन से हमें कभी कोई संकट नहीं आयेगा वह हमारा बंधु है, हमने और उसने मित्र कर पंचशील का प्रतिपादन किया है। लेकिन चीनी क्रुद्ध और ही सोचते थे।

मैंने मत प्रकट किया—

‘युद्ध बहुत दूरी बीज है बेटा। ससार से जितनी बल्दी युद्ध का अस्तित्व मिटेगा उतना ही मनुष्य जाति का कल्याण होगा। हमारे और उनके क्या कम सन्धिक मरे हैं?’

‘पिताजी, जो युद्ध आरम्भ करता है वह पागल होता है। पागल को बाँध रखने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। इस काम में हमें किसी से सहायता लेने में आपत्ति नहीं होनी चाहिये।

यह केपल रजत का ही मत नहीं है सार वेद की बनता का मत है। दुनिया धान्ति का मार्ग अपना कर प्रगति की दिशा में बढ़ना चाहती है। वेबल चीन धान्ति में विश्वास नहीं करता है। युद्ध द्वारा ही मानव जाति का कल्याण हो सकता है इस सिद्धान्त को वह भौतिक दस से मनवाना चाहता है। दुनिया के

देशों को इस बुनौती का उपयुक्त प्रत्युत्तर देना होगा।

इतनी देर रजत धरावर मेरे मुँह की खोर देखता रहा था। क्या समाप्त कर मन की बात कही।

“पिताजी आपके रोग का उपचार क्या हो रहा है ?

प्रधान्त ने सक्षम में उपचार को व्यक्तिया बसाई। सुन कर रजत बहुत आश्चर्य नहीं हुआ। एक लम्बी साँस छाड़ी।

आपकी अनिवार्य रूप से कुछ दिन विश्राम करना चाहिये।

अब विश्राम तो उस पाग क घाट पहुँच कर ही मिलेगा।

मेरा समय निकट है। हाँ महमताया सुमचितने दिन रहने ?

कुछ दिन रहूँगा पिताजी।

वह कुछ देर के लिए मौन हो गया। मैं भी विश्राम से लौ गया। विमला समझी मेरे मन कोई नई धारा का उदय हुई है। वह बोली —

“रजत, तू बका-भाँदा है। जा, महा धो क।”

वह अपने पुराने कमरे की ओर मुड़ा। विमला ने रोका।

“जरे, तेरे लिए मया कपरा बनवाया है।

“अच्छा ?”

प्रधान्त अपने कमरे में बसा गया। उसका मन भरा-सा लगा। मैंने मन ही मन भगवान से प्रार्थना की।

‘हे खीनानाथ आज का दिन बिना कोई अमंगल बटे बीत जाये।

स्नान से निवृत्त हो कर रजत एक महीन धोती कुर्ता पहन

कर दें।

“पिताजी, युद्ध के बीच ने उनके हृदय में गहरी जड़ पकड़ सी है। उसके उन्मूलन में समय लगेगा। हमने उनका क्या बिगाड़ा था? हम उनके मित्र थे। वे भी भाई भाई का नाच समाते थे किन्तु उन्होंने बहाना बना कर हमारी सीमा पर आक्रमण किया। और प्रश्न क्या करते हैं? कि आक्रमणकारी हम हैं। हम जानते हैं सीमारेखा पर हमारी सेना क्यों थी कितनी थी क्या कर रही थी। हमारी नीति की यह नीज भी ईंट थी कि चीन से हमें कमी कोई सकट नहीं आयेगा, वह हमारा षण्ड है, हमने और उसने मिल कर पञ्चवीस का प्रतिपादन किया है। लेकिन चीनी कुछ और ही सोचते थे।

मैंने मत प्रकट किया—

“युद्ध बहुत बुरी चीज है बेटा। संसार से जिसनी जल्दी युद्ध का अस्तित्व मिटेगा उतना ही मनुष्य जाति का कल्याण होगा। हमारे और उनके क्या कम सैनिक मरे हैं?”

पिताजी जो युद्ध आरम्भ करता है वह पागल होता है। पागल को बाध रखने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। इस काम में हमें किसी से सहायता देने में आपत्ति नहीं हानी चाहिये।

यह केवल रजत का ही मत नहीं है, सारे देश की जनता का मत है। दुनिया घान्ति का माग अपना कर प्रगति की दिशा में बढ़ना चाहती है। केवल चीन घान्ति में विश्वास नहीं करता है। युद्ध द्वारा ही मानव जाति का कल्याण हो सकता है, इस सिद्धान्त को वह भीतिक घम से मनवाना चाहता है। दुनिया क

दोनों को इस चुनौती का उपयुक्त प्रत्युत्तर देना होगा।

खूनी दर रजत बराबर मेरे मुँह की ओर देखता रहा था। कथा समाप्त कर मन की बात कही।

“पिताम्ही, आपके रोग का उपचार क्या हो रहा है ?

प्रचान्त ने संक्षेप में उपचार की व्यवस्था बताई। सुन कर रजत बहुत आश्चर्य नहीं हुआ। एक झम्बी साँस छाड़ी।

“आपको अनिवार्य रूप से कुछ दिन विधाम करना चाहिये।

“जब विधाम तो उस पार क भाट पहुँच कर ही मिलेगा। मेरा समय निकट है। हाँ यह बताओ तुम कितने दिन रहोगे ?”

‘कुछ दिन रहेगा पिताम्ही।’

वह कुछ देर के लिए मौन हो गया। मैं भी विचारा में खो गया। विमला समझी धरे मन कोई नई आशा का उदय हुई है। वह बोली —

“रजत तू बका-माँदा है। जा नहा खो से।’

वह अपने पुराने कमरे की ओर मुड़ा। विमला ने रोका।

“अरे, तेरे लिए नया कमरा बनवाया है।’

“अच्छा ?

प्रचान्त अपने कमरे में जाता गया। उसका मन भरा-सा लगा। मैंने मन ही मन भगवान से प्रार्थना की।

‘हे दीनानाथ, आज का दिन बिना कोई अमंगल बड़े बीत जाये।’

स्नान से निवृत्त हो कर रजत एक महीन धोती कुर्ता पहन

मेरे पास आ बैठा ।

‘पिताजी, अपनी डायरी लाया हूँ । आप पढ़ें । इसमें पूरी आप-बोली लिखी है ।’

मैंने बड़ी उत्सुकता से डायरी हाथ में ली ।

‘उनको बड़ी हिंसासत में भी तुम डायरी रख सके !’

बह हँसा । ‘हाँ किसी न किसी तरह रख ली ।’

उसकी हँसी में विजय की ध्वनि थी ।

मैं डायरी के पन्ने पसट रहा था । रजत सिद्धकी स भाग की ओर झाँक रहा था । इतने में मुझे दबा पिचाने के लिए हाथ में गिलास लिये अमला आई । दरवाज़ में प्रवेश करते ही वह सड़ी की सड़ी रह गई । रजत न मुँहकर अमला को देखा ।

अमला !!

अमला के सिर पे बादर हटो हुई थी । माँ में भीर मापे पर सिद्धुर नहीं था । यह विवाहिता है यह स्पष्ट बर्ण के लिए मुँह पर कोई बिछ्छू या सकेत नहीं था ।

‘अच्छा हुआ, तुम्हीं आ गई । मैं तुम्हारे लिए एक उपहार लाया हूँ । आओ सो ।’

रजत ने वह मैसूरी रेशम की साड़ी अमला के हाथ में दे दी । बिना रजत की ओर आँस उठाये मेरे हाथ में दबा का गिलास सोंप कर, उसने तत्प्राप्त वहाँ से चले जाना चाहा । रजत के मेरे कमरे में होन की उसने अपेक्षा न की थी । उसमें

१ अगम में अनप्याही सड़कियाँ सिर पर चारर नहीं बनती हैं ।

रजत से आँसू मिसाल का साहस न था ।

रजत ने पूछा—

“बेसि माँही अम्मी हैं अमला ?

अमला ने किसी प्रकार आत्म-संरक्षण की चेष्टा की किन्तु कर न सकी । उसकी आँसू से पानी झरने लगा । मैंने उसे अपने कमरे में जान का आदेश दिया । यह भली गई । रजत प्रचरज से भर गया ।

‘ज्या हुआ पिताजी ?

मैंने बेसि की हत्या का बृहन्त सुनाया । उसने घुपघाप सुना । रजत में असीम भीरव है । इसी गुण के कारण मैं उस पर इतना माहित हूँ ।

उसने सरस भाव से पूछा—

इसीलिए आप लोग अमला को अपने घर से बापे हैं ?

“हाँ किन्तु

किन्तु क्या, पिताजी ?

‘रजत’

कहिये पिताजी, एक क्यों गये ?

‘सब उल्टा-मल्टा हो गया, बेटा । यह मान कर कि तुम बैठ रहे हम से एक बड़ा अमलाहा काम हो गया । मनुष्य में एक सतष्ठी वान छोड़ा जो हम सबको बेव गया—तुम्हें, हमें, अमला को प्रखान्न को, बेसि को—सब को ।

मैंने सुना पास के कमरे में अमला विसर्कियाँ भर रही थी ।

‘पिताजी ?’

‘बताता हूँ, रजत । सुनो ।’





## प्राठवाँ भाग

मैं दुर्बल बहुत दुर्बल हो गया था। मांस पेशियाँ सटक आई थी। आँसों की ज्योति क्षीण होने लगी थी। क्षरीर में एबन ऐसा घुस पैठा था कि निकालने नहीं निकल रहा था। नहाते समय जब मैं क्षरीर पर हाथ फेरता तो उभरी हुई पसलियाँ बेसकर डर लगता था। पिताजी होते ही कहते— बभुराम हरि नाम सुमरने का समय आ गया है। किन्तु मैं भव-ब्रंजाल में ऐसा फँसा था कि उद्धार का कोई मार्ग नहीं सूझता था। प्रमिसा के साथ एक दिन जो घर बसाया था अदृष्ट के कृटिम आघात से उसके ज्योर्ण-शीर्ष होने का उपक्रम अपनी आँसों से बेस रहा था।

रजत के आने का समाचार सारे नगर में फैल गया था। अनेक स्थानों और अवसरों पर उसका सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। व्यक्तिगत रूप से भी लोगों ने घर आकर उसके प्रति आदर सम्मान प्रकट किया। एक साधारण सैनिक की सम्मान के लिए जनता द्वारा ऐसे कृतज्ञता स्थापन में हमारे सारे परिवार को उत्कृष्ट कर दिया।

उस दिन रजत डिङ्गुगड़ गया था। दोपहर को प्रमिसा मेरे

पास आकर खंड गई। बोली—

“इस घर को घनी जग गया है।”

क्या मायने ?’

“दो सहके हैं। दाना बोलचाल मानो है ही नहीं। एक भाता है तो दूसरा खाता है। दानो को साथ खाया वें तो भाफ़त। गबत ने भात खाना छोड़ ही दिया है। पहले अमला का नाम सुन कर मुषबुध भूस खाता था अब उमकी हुवा सग बाये ती तिसमिसा उठ्या है।’

कुछ मन्तव्य व्यक्त करना घनावश्यक मान कर मैं पूछ रहा।

कल प्रधान्त से बहुत कह सुन गया है।’

क्या तनमें बुला सगबा हो गया है ?’

“और बुला क्या होगा ? वह साबो बिप को गांठ बन गई है।”

“बीम सी, वह मसूरी रेसम की ?’

“हाँ, प्रधान्त कहता है, अमला का वह साबो नहीं सेनी चाहिये थी।”

मैं विस्मय हो गया। मानव जाति में, विशेष कर पुरुषों में, अधिकारत्व की भावना अभी तक इतनी प्रबल है कि वे पशु के बनें से बड़ नहीं पाये हैं। नहीं तो एक साधारण साबी को लेकर दो सये माहियों के आपसी सम्बन्ध में कैसे इतना ब्यापार हो सकता था।

प्रमिसा, मुझ में कुछ करने की व्यक्ति रोप नहीं रह गई है। जीवन का अध्याय समाप्त हो रहा है। बस, कुछ धाम्ति चाहिये।’

प्रमिसा खीब गई।

‘ऐसे कहने से कैसे काम चलेगा ?’

रजत के जाने के पहले प्रमिषा को अपने आत्म-विश्वास पर बड़ा गुमान था। वह मेरे सामने खीग मारती थी कि अपने ऊपर अनुशासन रखो, सब मामला अपने आप सुलट जायेगा। आज उसके मनोबल की सबेँ हिंस गई हैं। वह मान गई है कि मनुष्य के अन्तर की समस्या बड़ी जटिल होती है—आज के युग में तो वह जटिलतर हो गई है।

‘अब तुमने हाथ-पैर बाँध दिये हैं तो मैं क्या कर सकता हूँ ?’

‘क्या बरूँ मामला को जितना सरल समझी थी उतना सरल नहीं है। पानी को ऊपर से देखकर उसकी गहराई आँकना कठिन है।’

‘प्रधान्त से तुमने कुछ कहा है ?’

‘हाँ, कि वह बेकार सन्देह न करे।’

‘उसने क्या कहा ?’

‘वह कहता है, उसका सन्देह बुरा होता जा रहा है। रजत के जाने के बाद उसके प्रति अमला में संकोच बढ़ गया है।’

‘उस पर भ्रूट सवार है।’

‘मैं भी ऐसा ही सोचती हूँ। आजकल अमला उससे बात करते हुए डरती है।’

‘मेरे पास कोई उपाय नहीं है प्रमिषा। तुम्हीं अमला को समझाओ।’

‘अमला और क्या कर सकती है ? उसने रजत के सामने निकसना यद कर दिया है। वह बराबर प्रधान्त की टहल में

सगी रहती है । फिर भी उसे पैन नहीं है ।

प्रशान्त के कमरे से उनका प्रसाप सुनाई दिया । घायद अमसा भी वहीं थी । हम दोनों चुप हो गये । प्रशान्त कपड़े बदल कर हमारे सामने से निकल गया । वह अब कमी बाहर जाता था मेरी बीमारी के घारे में दो बात कर सेता था । भाव उसने हमारी ओर देखा तक नहीं । प्रमिसा किसी काम से रसोई में चली गई ।

मैं रमल को बायरी के पन्ने पलटने लगा ।

अधिकांश भाग में उसके बंदी जीवन की कहानी थी । इसके अतिरिक्त कहीं नगाधिरात्र की शुभ्र हिम-मंडित पर्वत श्रृंखला का सुन्दर वणन था कहीं सिद्धतियों के धार्मिक जीवन का मार्मिक चित्रण कहीं नीतियों के असम्य व्यवहार के विरुद्ध विप भरे उद्गार, और कहीं अपने देश के प्रति स्नेह सिक्त, मनोरम आत्म-प्रकाश ।

एक पृष्ठ पर लिखा था—

'मात्र बहुत घर की याद आ रही है । घर का वह मेरा अपना कमरा । विवाह के लिए पिताजी आदि ने कंठी घूम घाम से तैयारियाँ की होंगी । सब गुड़-गोबर हो गया । न जाने कब घर सौटना होगा । न जाने फिर कब अमसा का देख पाऊँगा' "

मैंने बायरी बद कर दी ।

अमसा दबा पिसाने आई । मैंने कहा—

‘मुझे और दवा नहीं चाहिये । जितने दिन रहना है, बिना उसके रह जाऊँगा ।’

‘नहीं पिताजी, ऐसे काम नहीं चलेगा । यह सीजिय । सीजिये न ।’

उसने दवा का पितास मेरे आगे बढ़ा दिया । मुझे स्मरण नहीं है कि जीवन में मैंने कभी दवा में इनकार करके राग को बढ़ावा दिया हो । किन्तु उस दिन एक अजीब नादानी की हठ मैंने पकड़ ली ।

‘नहीं मैं दवा नहीं लूँगा । तुम इसे से जाओ ।’

अमला गई नहीं । पितास आगे बढ़ाय वैसे ही सड़ी रही । उसकी दृष्टि में कातर अनुरोध था । वह एक गम्भीर आत्म-द्वन्द्व में उमझी हुई थी । उसमें नारी का अबना रूप साक्षात् मूर्तिमान देखकर मेरा मन विपण्ण हो गया । किन्तु क्या इस अबना की सहायता करने की मुझ सामर्थ्य थी ? मैं एक पिता था । पितृत्व के हित का रक्षा करना मेरा पहला धर्म था । आज कह सकते हैं मैंने स्वाध को धर्म मान लिया था । मैं यह भूल गया था कि दूसरे घर की सड़की साकर मुझे उसके भागसिब सुख की भी कोई व्यवस्था करनी चाहिये ।

मैंने पूछा—‘क्या हुआ अमला ?’

दबी, दुखी आवाज में उसने कहा—

‘इस घर में अगर मैं किसी से कोई बात कह सकती हूँ तो वे आप हैं । यदि आप भी मेरी उपेक्षा करेंगे तो मैं क्या करूँगी ।’

‘मैंने क्या किया, अमला ?’

‘दबा न लेकर आप मुझे अपनी सेवा से वंचित कर रहे हैं। क्यों ? क्या इस घर में मैं किसी की सेवा नहीं कर सकती हूँ ?’

‘तुम इस घर का काम करते-करते मरी जा रही हो। सबको लगन प्राप्त से सेवा करती हो। व्यय में अपने को क्यों दुखी करती हो ?’

‘न जाने किस बूरी धर्मी में आप लोगों के घर में बहू बन कर आई हूँ। मेरा ही माम्र खोटा है। किसी के काम न आ सकी।’

मैंने अनुभव किया कि अमला अपना आत्म-विश्वास विस्तृत हो चुकी है। मन को पश्चात्ताप की तीस बेध गई।

‘साओ बेटी, दबा दा। मैं पीऊँगा।’

मूँह में दबा डाल कर वह जाने को उद्यत हुई।

‘ठहरो अमला, सुनो।’

‘कहिये।’

‘प्रणाम कर्हा गया है ?’

‘कस जा रहे हैं। सवारी की पुछताछ करने गम है।’

‘अच्छा ! कस जा रहा है ? हमें भी सूचना दे देता तो कुछ अनुचित न होता।’

‘किस के मन की कीमत जानता है।’

‘क्या मतसब ?’

‘एक दिन आपने मुझे सुनकर बात करने का अधिकार दिया था। इसीलिए कह रही हूँ। उन्हें मैं अब समुत्त नहीं

कर सकती। इतने सन्नेह में मेरा रहना कठिन है। मैंने कह दिया है कि मैं भी हाड़-मांस की बनी हूँ।'

'उसने क्या कहा?'

'कहा तुम्हारे मन में जो आये करो। मैं कस खा रहा हूँ।'

'अमला, तुम भी उसके साथ बनी जाओ।'

'नहीं, मैं नहीं जाऊँगी।'

'क्यों, क्या तुम उसकी विवाहिता पत्नी नहीं हो?'

'हाँ, हूँ। किन्तु जब मेरे घस की बात नहीं है। इतनी अबहेलना इतना सन्नेह, इतना कटु व्यवहार मैं नहीं सह सकती। इससे तो पथ की मिळारिन होना स्वीकार है।'

'अमला यदि तुम ने थोड़ा और धीरज न रखा तो यह घर छिन्न-भिन्न हो जायगा।'

जब असम्भव है पिताजी। रजत दा से साड़ी सने के कारण आ यातना मुझे सहनी पडी है वह मेरा परमात्मा ही जानता है।'

'अच्छा। मैं ही प्रदान्त से कहूँगा।'

'भाप न कहें पिताजी। जिस व्यक्ति को अपनी पत्नी पर इतना सन्नेह है उसे कर्त्तव्य का उपदेश देने से कोई साम न होगा।'

'तुम निश्चय ऐसा समझती हो?'

'हाँ पिताजी।'

मैंने देखा यह अमला अबसा नहीं है। उसमें दुःख है और वकल्प है।

'वह तुमसे प्रेम करता है।'

मेरे बाहरी रूप से । मेरी धारणा से नहीं ।

‘क्या तुम यह विवाह से पहले नहीं जानती थीं ?’

‘नहीं । रजत दा के आन के बाद ही इसका पहली बार परिचय मिला । यदि वे मुझे मेरे समस्त सुष दोष सहित स्वीकार कर लेते तो यह दुर्भाग्य न होता ।’

मैंने और आगे प्रश्न नहीं किया । अनन्ता खसो गई ।

मेरी कुपहरी में मैं अपने का गहम अंधकार से घिरा पाया ।

मेरी धारणा हुई कि इस इहते घर को अब सहारा देने से कोई मान न होगा । मदका यह और स्वार्थ का भाव इतना जागृत है कि उसे बच म करना उसका नियत प्रयत्न करना यदि सामर्थ्य से बाहर है । (हमारा—मरा और प्रेमिका का—मुठ भोंत गया । प्रयास और अमना भादि की अपेक्षा कदाचित् हम में विवेक और सहिष्णुता की भाषा अधिक थी । हम घर बसान पर अधिक बल देते थे । ये भाग अपनी नाक ठेंधो रखने में व्यस्त हैं ।

संभावना प्रयास मरा अब देखने आया । मैं कुछ न बोला । उससे ‘जा रहा हूँ’ कहने पर भी कोई प्रतिवाद नहीं किया । रजत ने आकर दिन में अनन्ता द्वारा अपने अभिनन्दन का हस्त सुनाया । उसका उत्साह बढ़ाने के लिए मैंने दो चार शब्द कह दिये । प्रयास के जाने के बारे में कोई उद्गम प्रकट नहीं किया । हाँ सकता है कि रजत ने जा मान लिया था कि नियमित अबकास की समाप्ति पर प्रयास अपने काम पर लौट



रहा था। प्रमिस्ता ने अवश्य आपत्ति की। मैंने स्पष्ट कह दिया—‘प्रधान्त राम है न प्रमिस्ता कौशल्या।’

अगले दिन सुबेरे वह चला गया। ठीक सात बजे गाड़ी आई। मुझ से और प्रमिस्ता से यथाविधि विदा ली। रजसु को भी सादर नमस्कार किया। किन्तु अमला से दोसा न चलते समय एक बार मुड़ कर भी देखा। वेमि के शब्द मेरे कानों में गूँज गये—‘प्रधान्त पशु है।’ मुझे वेमि पर क्रोध था। जब वह जानती थी कि प्रधान्त पशु है तो अमला के साथ विवाह के लिए उसने सहमति क्यों दी? क्याचित् उसने ऐसे भविष्य की कल्पना नहीं की थी।

गाड़ी के चले जाने के बाद प्रमिस्ता मेरे पास आई। वह बहुत उदास थी।

‘वह चह गया है, अब फिर कभी घर नहीं आयेगा।

‘कभी घर नहीं आयेगा?’

‘हाँ।’

प्रधान्त सनकी है। एक बार हठ पकड़ लो तो उसे नहीं छोड़ेगा। वह अब घर नहीं आयेगा। उसके इस सुत्किशीन निर्णय पर मुझे क्रोध आ गया। मैंने कहा—

‘न खाना है तो न आये।’

‘सन्तान की मूसता पर माँ-बाप भी पीरज लो बेटों लो परिवार नष्ट हो जाता है।’

‘बह पशु है नहीं लो भसा बह का यों छोड़ जाता।’

अपने प्रधान्त के पल में दो शब्द कहने का नैतिक साहस

जब प्रमिता में नहीं था। भ्रमसा के लिए भी उसने कुछ नहीं कहा। प्रकट में भ्रमसा पर उसका कोई बिसय अभिप्राय नहीं था।

दोपहर के खाने के समय मैंने रजत में अद्भुत परिवर्तन देखा। वह बहुत उत्फुल्ल था। उसका विनोदी स्वभाव मकस्मात् फिर सौट खाना था। वह हूर व्यञ्जन को घटखारै के साथ खा रहा था और प्रशंसा करता जाता था। वह बार-बार पाकघर में छिपी भ्रमसा को पुकार कर खाने की मेज पर बुला रहा था। मैं भी वहीं अपना पय्य—मास की काप्सी—खा रहा था। भ्रमसा सामझानी से चिर ठके आई। उसकी माँग भरी थी। रजत को सब्जो परोस कर वह उल्टे पैरों पाकघर में भाँट गई। अपनी प्रशंसा के आभास स्वरूप रजत एक दो शब्द को अपेक्षा करता था। न पाकर सिग्न हा गया। मैं बात बतान के लिए कहा—

‘आज भ्रमसा बहुत उदास है।’

उस दिन रजत कहीं नहीं गया। अपने कमरे में एक खसमिया उन्मत्त पड़ता रहा। शाम की भाव भी प्रमिता नहीं ले आई। रात को फिर खाने की मेज पर बैठकर उसने भ्रमसा के साथ बातचीत कर मन का संयोग स्थापित करण का अवसर ढूँढना चाहा। भ्रमसा न कोई बड़ाबा नहीं लिया। मैं भ्रमसा के मनोबल पर मुग्ध हो गया।

रात बहुत बीग गई थी, किन्तु भ्रमसा के कमरे में बत्ती जल रही थी। मैंने सोचा दिन भर की घटनाओं के साथ अकेले कमरे में भीड़ नहीं आ रही होगी। उठकर गया और बाहर

से कहा—

“अमसा, सो जाओ, बेटी ।

बह दरवाजा खोल कर बाहर आई । बोली—

“रजत वा कुछ उपन्यास लाये हैं । पढ़ने को भेज दिये हैं । उन्हें देख रही थी ।”

“कय भेजे ?”

अभी कुछ देर पहले ।

मैंने ठण्डी हवा की आवश्यकता अनुभव की । दरवाजा खोल कर बराण्डे में आया ।

बराण्डे के एक छेदरे कोन में आगमकुर्सी पर सेटा हुआ रजत एकचित्त से अमसा के कमरे की ओर आँखें गड़ाये था ।

“सोमे नहीं, रजत ?”

“नहीं पिताजी, बहुत गर्मों है । यहाँ मैं ठण्डक की जमह विधाम कर रहा हूँ ।”

‘तुम्हारे कमरे में पल्ला नहीं है ?’

“है, बाइदेव बे गई है, बिनतु मुस पब में नीब नहीं आती है ।

मैंने अनिष्ट की कल्पना की ।

मैं अपने कमरे में लौट आया । थोड़ी देर बाद मैंने सुना कि अमसा ने रजत के कमरे की तरफ सुसने वाली अपनी सिड़की बढ़ कर सी । गहरी चिन्ता की ऊब डूब में मुझे बहुत देर तक नीब नहीं आई ।

छेदरे मैंने देखा रजत मुस से कहीं पहल उठ गया था ।

अमसा भी रात का वषा काम निपटा चुकी थी। व बाग के बारे में बात कर रहे थे। रजत ने कनी रखरानी का एक पैड लगाया था। वह मर गया था। रजत दुख प्रकट कर रहा था। अमसा 'हाँ' 'हूँ' के अतिरिक्त और कुछ नहीं बोल रही थी। मैं बाहर निकला। पिछली' की सफाई समाप्त कर अमसा मोठर पसी गई।

रजत ने पूछा— 'कसे हैं पिताजी ?'

"अच्छा नहीं हूँ।"

और आगे बात नहीं हुई।

माते पर मैंने प्रमिसा से कहा—

"अमसा को आज से अपने कमरे में मुसाओं नहीं तो तुम्हीं उसके कमरे में आ कर सा रहना।"

"क्यों ?"

मैंने अपना सम्येह प्रकट किया। प्रमिसा ने हँसी में उका दिया।

"इन बेकार की बातों में अपना सिर खपान रहत हैं। अमसा बेसी सड़की नहीं है।"

मैं चुप रह गया।

अगले दिन प्रमिसा वहीं बाहर गई थी। रजत से अपने अदंती से एक किमो मारबाड़ी मिठाई' मँगवाई और अमसा

१ पिछली—घर के अर्ध का होथार के बाहर निकला हुआ भाग।

२ मारबाड़ी मिठाई—असब में इसका अर्थ है बहिषा मिठाई जैसे कबाकब पून की बर्डी, पैदा बर्दि।

के पास भिजवा कर कहलाया—एक प्याला चाय और एक प्लेट मिठाई ले आये। थोड़ी देर बाद मैंने अमला को चाय और मिठाई लेकर रजत के कमरे की ओर जाते देखा। सूरज डलने लगा था। पास में कटहल के पेड़ पर एक कीवा एक पके हुए कटहल को काँच काँच करता हुआ चाव से खा रहा था। पेड़ पर और कई काँचे कटहल पर चाँच मारने की छान में बैठे थे। अमला कमरे में बड़ी देर कर रही थी। मेरी उद्विग्नता बढ़ती गई। कटहल खाने वाले काँचे को देखने के बहाने मैं पेड़ के नीचे पहुँचा। वहाँ से मैंने देखा अमला कमरे की भीड़ों को सहज रही है रजत का विस्तरा ठीक कर रही है। प्रत्यक्ष में आपत्ति करने की कोई बात नहीं थी, किन्तु प्रघात के साथ मनोमालिन्य के बाद अमला को रजत की इस प्रकार सेवा करते हुए देखकर मेरे विवेक को आघात पहुँचा। उसके कमरे से बाहर आते तक मैं पेड़ के नीचे रुककर कटहल से काँचे को उड़ाता रहा। अमला सहज भाव से रसोई में चली गई। थोड़ी देर में रजत टहलने चला गया।

उस रात मेरा ज्वर तेज हो गया। सारी देह में पीड़ा हो रही थी। प्रमिसा ने रजत से डाक्टर बुलाने को कहा। इतने में अमला आई। मेरी दशा देखकर बोली—

पिताजी के पेट के दर्द की दवा दे गये हैं। मुझे समझा गए हैं कि जिस हालत में देनी चाहिये।

दर्द से विवश होकर मैंने कहा—

“सामो घेटी।”

गरम पानी के साथ उसने दो गोखियाँ दीं। दस मिनट में आराम मालूम देने लगा। फिर मुझे धुंवर आ गई।

बाँस खुनी तो बाहर दूबिया जुन्हाई छिटकी हुई थी। सिद्धकी के पास कड़ा हुआ रजत उसकी अप्सुष सोमा देख रहा था। अमसा मेरे पाँव दवा रही थी। प्रमिसा बहाँ नहीं थी।

मैंने कहा—

“रजत जाओ, सो जाओ। बहुत रात हो गई।”

उसने मेरे भाँपे पर हाथ रखा। अवर कम हो गया था।

मैंने अमसा से भी कहा—

“तुम नी सोने जा सकती हो।

वे अपने-अपने कमरे में चले गये। अमसा के कमरे में बत्ती जली तो बसती ही रही। मैंने भमकाते हुए आवाज लगाई।

“अमसा धत्ती घट करके सो जाओ।”

कोई प्रतिक्रिया न हुई। मैंने फिर आवाज लगाई। बत्ती बसती रही। मैंने उठना चाहा। मुझ में शकट नहीं थी। प्रमिसा को पुकारा। उससे भी कोई उत्तर नहीं मिला। विस्तरे पर सेटा तो ऐसा लगा कि हवा के साथ कानाफूसी के शब्द खरखे आ रहे हैं। पत्ते हिससे तो ऐसा आभास होता कि रजत और अमसा धाँसे कर रहे हैं। सारी रात मैं सो न सका। उसके उठकर मैं बाहर आया। रजत का अर्दसो टहल रहा था। उसे हाथ के इंगारों से बुसा कर पूछा—

“बाह्य को रात केंसी नींद आई?”

मेरे प्रश्न से उसे बिस्मय हुआ।

“साहब रात को बहुत देर में सोया।”

मैंने अर्दली से कहना उचित न समझा कि यह रतबगे का अम्मास साहब के लिए नहीं चीज है।

उस शाम रजत के कई मित्र आए। अमला ने बड़े नि संकोच भाव से उनकी आवाभगत की। घटों शाम का दौर बसता रहा। रात को जब अमला मेरे लिए बवा और पथ्य लाई तो मैंने बसा उसमें आनन्द समा नहीं रहा था। उसकी आँसों हँस रही थीं। उसके सलाट पर पिरकन थी। उसके ओठ फड़फड़ा उठते थे मानो मुक्ति की अभ्यक्त भाषा का उच्चारण कर रहे हों।

अगला दिन बहुस्पतिवार था। गोधूनी के समय प्रमिसा ने सदमी पूजन किया। पूजा के समाप्त हात ही अमला नैवेद्य और निर्माली सेकर सीधी रजत के कमरे में पत्नी गई। घर के बड़े होने के नाते नैवेद्य और निर्माली का मोग पहले मुझे मिलता था। आज ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरा स्थान रजत ने स लिया है। मैं निम्न पक्ति में आ गया हूँ। कदाचित् यही ससार का नियम है।

थोड़ी देर बाद जब नैवेद्य और निर्माली सेकर अमला मेरे कमरे में आई तो यह रजत की दी हुई मैसूरी रेचम की साड़ी पहने थी। वह बहुत सुन्दर लग रही थी। मैंने प्रसाद को माथे से लगा कर ग्रहण किया।

“प्रसाद का कोई समाचार मिला ?

“नहीं।”

क्या वे पूछ लिया है ?

“नहीं।”

“एक सिद्ध दो।”

वह मित्रा कुछ कहे चली गई। दो दिन मेरा ज्वर तेज रहा। जग प्रत्यग निष्प्राण हो गया। जीवन एक अनिवाप बोझ बन गया जिसे सोसने या हटका करने के लिए कोई भागीदार न था। अपनी अज्ञान और दुबल बह को सिये मैं विस्तरे पर पड़ा रहता। पुराना रोगी मान कर घर के छोड़ों में सेवा क सिय जो पहला उत्साह था, वह कम होने लगा था। कई बार ऐसा होता कि मैं कराहता रहता और प्रमिसा मेरी ओर मुड़ कर भी न देखती। अमसा भी पहले की तरह नियमित विधि से दवा लेने का आग्रह न करती थी। ज्ञान पूछना तक मूल जाती थी। रजठ का आसत्य बढ़ गया था। वह जाने तक के लिए अपने कमरे से नहीं निकमना चाहता था। कमरे में ही जाकर अमसा को उसका कामकाज बेखना पड़ता था।

भुझे प्रघान्त की याद आने लगी। यदि वह होता तो मेरे पथ्य और दवा की व्यवस्था भय न होती। उस दिन दोपहर को अमसा दवा खिमाने आई तो मैंने फिर पूछा—

“तुमने प्रघान्त का पत्र लिखा ?

नहीं।

“मेरे कहने पर भी तुम दो दिन में उठे एक छोटा सा पत्र नहीं लिख सकी।”

मात्र भी बिना उत्तर दिये वह भीतर चली गई।

घाम को एक टीकसी आई। उसमें रजठ, प्रमिसा और



अमसा बैठ कर गये। नीकर से पूछने पर शास हुआ, विमला बाइदेव भस्वस्व है। उन्हें देखने गये हैं। पास का थड़ियाल कई बार बजा। नीकर दवा लेकर आया। मन में तीव्र विक्षोभ था। इनकार कर दिया। उस नीरव निर्बल एकान्त में भगवान् से प्राथना की कि इस उपेक्षा धीर अत्याचार से मेरा पीछा चढ़ार करे।

रात को दस बजे रजत और अमसा टबसी में सौटे। प्रमिता वहीं रह गई। मैं क्या जानता क्यों? अमसा ने आकर पथ्य के लिए पूछा। मैंने उत्तर नहीं दिया। बपड़े से मुह डक, करवट लेकर पड़ा रहा। उस रात मैं जाने कब तक बे सोनीं जागते रहे।

सबेरे आवाग में बदली छाई थी। दो बार छीटे भी पड़ चुके थे। मेरा पुराना दमे का विकार भड़क गया। साँस नहीं चला रही थी। बार-बार छाँसी झिल्लोड रही थी। रजत आकर मेरे पास बैठ गया।

“यह क्या से हो गया पिताजी?”

“सबेरे से।”

“डाक्टर बुलाओ?”

“नहीं। प्रशान्त को छार भेज दो। वह आ जाये।”

“वह अभी झूटो पर सौटा है। मैं डिब्रूगढ़ से डाक्टर ले आऊँगा।”

मैंने बड़ी स्तर्द्ध से कहा—

डिब्रूगढ़ से डाक्टर नहीं चाहिये। मेरा अपना सड़का है।

मैं किसी और को क्यों बुझाऊँ ?'

'किन्तु पिताजी, वह कह गया है, अब घर नहीं सौटेगा।'

'वह घर क्यों नहीं माना चाहता, इसका कारण मैं जानता हूँ। अभी उसका व्यवसाय शेष था। तुम लोगों के उत्पात के कारण ही वह घर से दूर चला गया है।'

रजत को थोटा लगी।

'हमने, यानी मैंने क्या किया है ?'

बिना शर्तों में मैंने उत्पात शब्द का प्रयोग किया था उसका रहस्य रजत समझ गया। वह देर तक मेरा मुँह ताकता रहा, फिर धीरे से उठा और माँ के कमरे से अपने कमरे में चला गया। मुझे दुःख हुआ और संतोष भी कि उसने मेरा संकेत ग्रहण कर लिया।

बोपहर को जब अमला दवा लेकर आई तो मैंने फिर पूछा—

'तुमने प्रधाम्त को पत्र लिखा ?'

'नहीं।'

मैं अपने को रोक नहीं सका। बिल्साया—

'इतने दिन सोचता था कि सारा दोष उसी का है, लेकिन देखता हूँ कि तुम शेर कम नहीं हो।'

वह पाकघर में चली गई और वहाँ जाकर आत्म-नोपन कर लिया। रजत के बुझाने पर भी नहीं निकली। पाकघर को चारदीवारी में अपने को बंद कर के वह अपना सामान्य काम करती रही। उसने भात पकाया, समय पर परोस कर

भेजा, मौकर द्वारा मेरी दवा और पथ्य की व्यवस्था की।  
परिचर्या में कोई घुटि या असावधानी नहीं की।

अगले दिन सुना, रजत अबेला मारघरीटा गया है।  
सगमग भार घटे बाद वह प्रमिता के साथ लौटा। मुझ में  
इतना साहस नहीं था कि मैं उससे पूछता कि इतने दिन बिना  
कहे क्यों घर से दूर रही। घर में मेरा प्रभाव मिट चुका  
था। याभा के कपड़े बदल कर वह मेरे पास आई।

“सुनती हूँ आपकी बीमारी बढ़ गई है ?”

“ओ तुम आ गई प्रमिता ? मैं अच्छा हूँ।”

विमला को देखने गई थी। उसे एकदम खोर का मुखार  
हो आया और हासत नाचुक हो गई।

“क्या हो गया है उस ?”

पीलिया।”

“अच्छा ? अब कसी है ?”

“कुछ अच्छी है।”

“फिर तुम क्यों आ गई ?”

“आपके कारण।”

“आ” मुझे हँसी आ गई। और कोई कारण नहीं है ?  
तुम्हारे बिचार से इस घर में सब ठीकठाम चल रहा है ?”

“मैं पहले भी कह चुकी हूँ आप व्यर्थ का सन्देह करते हैं।”

“व्यर्थ है या सर्व यह मैं जानता हूँ।”

“और आप यह भी जानते हैं कि इस तरह विस्तर पर  
लेटे-लेटे बैठे-बहु पर सन्देह करने का क्या परिणाम हुआ है।

“क्या ?”

“रजत बस जा रहा है।”

इस समाचार से मैं अतमना हुआ गया। किन्तु जो मैंने स्वयं देखा जाना था उसे अमान्य कैसे कर सकता था।

मैंने कहा—

‘यदि वह इतना समझदार होते हुए भी इस प्रकार का व्यवहार करना चाहता है तो करे। मुझे कुछ नहीं कहना है।’

रजत ने अपनी बमकी पूरी की। अगले दिन वह प्रस्थान के लिए तैयार हो गया। दोपहर में एक मिलिट्री को जोप आई और हमें प्रणाम कर और अमसा से विदा से वह उस पर सवार हो गया।

मैंने कहा—

“जमी छूटती थी। और दो चार दिन क्यों नहीं रुक जाते ?”

वह हँस कर बोला— ‘आप सब जानते हैं पिताजी।’

प्रमिना ने रुझासी होकर पूछा—

‘अब फिर कब आवेगा रजत ?’

‘भगवान् जानें माँ। याया भी तो अतिथि बनकर आज़ेगा। क्या इस घर में मेरे लिए कोई स्थान होगा ? और हाँ पिताजी, मैं प्रधान्त को जाने के लिए तार दे दिना है।’

यह कहकर वह जमा गया।

प्रमिना देर तक अन्दन करती रही। एक और सड़का-

भेजा, नौकर द्वारा मेरी दवा और पथ्य की व्यवस्था की।  
परिचर्या में कोई त्रुटि या असावधानी नहीं की।

अगले दिन सुना, रजत अबेला मारपरीटा गया है।  
सगमग घार घंटे बाद वह प्रमिला के साथ लौटा। मुझ में  
इतना साहस नहीं था कि मैं उससे पूछता कि इतने दिन बिना  
कहे क्यों घर से दूर रही। घर में मेरा प्रभाव मिट चुका  
था। यात्रा के बपड़े बदल कर वह मेरे पास आई।

“सुनती हूँ आपकी बीमारी बड़ गई है ?

“ओ तुम आ गई प्रमिला ? मैं अच्छा हूँ।”

विमला को देखन गई थी। उसे एकदम जोर का मुखार  
हो आया और हालत माजुब हो गई।

“क्या हो गया है उस ?

“पीसिया।”

“अच्छा ? अब कैसी है ?”

“कुछ अच्छी है।”

“फिर तुम क्यों आ गई ?

“आपके कारण।”

“ओ” मुझे हँसी आ गई। “और कोई कारण नहीं है ?  
तुम्हारे विचार से इस घर में सब ठीकठाक चल रहा है ?

“मैं पहले भी कह चुकी हूँ आप ध्यर्ष्य का सन्देह करते हैं।”

“ध्यर्ष्य है या सर्ष यह मैं जानता हूँ।”

“और आप यह भी जानते हैं कि इस तरह बिस्तर पर  
लेटे-बेटे-बहु पर सन्देह करने का क्या परिणाम हुआ है।



अपने अहंकार में, धर छोड़कर पता गया। मन में यह कसक थी। सब दिशाएँ अंधकारमय थीं। किन्तु मैं समझ न पा रहा था कि मैंने भूल कहाँ की थी।

उस दिन से अमला का आत्म-न्योपन और बढ़ गया प्रमिता ने अपना रोप प्रकट करने का नया ढंग अपनाया उसने घर में रहना कम कर दिया। वस, बाहर घूमती फिरती मैंने भी अपनी देह के प्रति अत्यधिक अवहेलना आरम्भ की।

दो दिन बाद प्रदान्त का तार आया। वह सीधे ही पढ़ रहा था। मैंने अमला को घुमाया। उसे दखे दो दिन हो गये। कैसा परिवर्तन हो गया था उसमें ? वह विवर्ण, क्रूर अंभयावह हो गई थी।

“आपने घुलाया है ?

“हाँ यह तार आया है—प्रदान्त का।”

उसने तार नहीं लिया।

“वह आजकल में आ रहा है।

‘आर्ये।’

उसका स्वर अत्यन्त भावहीन था। बेहरे पर अक्षयर्ण उदासी थी।

“इस बार मैं उससे आप्रहू करूँगा कि वह तुम्हें से आये

“इसकी कोई आवश्यकता नहीं है पिताजी।

“क्यों ?”

“आप से अपनी बात क्या कहूँ ? अब तो भगवान् से कहूँगी।”

प्रमिमा व मी तार देखकर काई उत्साह नहीं दिखाया । वह एक टैक्सी पकड़ कर किमला को देलने अकेली मारपगीटा बसी गई ।

मैने अमला को फिर बुलाया । उसने कहला दिया कि पोकर रुपड़े घोने गई है । घामे में बेर हो जायेगी ।

मै सारा दिन बिस्तर पर पड़ा छटपटाया रहा । परिवार में मेरी कोई मान-मर्यादा नहीं रह गई थी । कोई मेरी सुनने-मानन को तैमार नहीं था । मै स्वयं बाहर जाने में असमर्थ था ।

आकिमा आया । मेरे नाम रखत का पत्र था । बड़ी बेसदी से उसे खोस कर पढ़ा ।

अद्येय मिठानी

मै आज फ्ल्ट पर आ रहा हूँ । जाने से पहले जायका आशीर्वाद चाहता हूँ । धीनी फिर सैन्य संघर्ष करके आक्रमण की योजना बना रहे हैं । इस बार मुझ हुआ तो पहले से कहीं अधिक भयकर होगा । आशीर्वाद दीजिये कि मै देश के सुख की रक्षा कर सकूँ । सुना है हूँ मैं नई पद्धति से मुझ करने की, विशय कर पहारकों में, ट्रेनिंग से जायेगी ।

प्रधान्य आया होगा । उससे कह दीजियेगा कि मैने सबा के लिए अमला पर अपना अधिकार त्याग दिया है । यदि मै कहूँ कि मैने अमला को विस्मृत कर दिया है तो झूठ ही होगा । वह समथ नहीं है । मेरी स्मृति भी अमला के मन से विस्मृत नहीं मिट सकगी । जिसे आपने उत्पात अमला



था, वह उत्पात नहीं था। हम यह चेष्टा कर रहे थे कि मर्द परिस्थितियों के अनुकूल अपने को किस तरह ढालें। हृदय के सम्बन्धों को नया आधार देना बड़ा चटित काम होता है। हम उसमें असफल रहे।

प्रदान्त ने अमसा को एतत् समझा है और आपने भी। बाहरी नियमों से अन्तर का शासन नहीं हो सकता। यह मानकर कि घर के मंगल के लिए मेरा यहाँ से चला आना ही उचित होगा

मैं पत्र और आगे नहीं पढ़ सका।

अपने घरम त्याग से रजत हम सबको पराजित कर गया।

इस त्याग के अभिकारी प्रदान्त और अमसा भी हो सकते

थे। किन्तु उनका हृदय इतना उदार नहीं था।

अमसा अभी तक पोस्टर से नहीं सौटी थी। मौकर के हाथ पत्र मीने नहीं भिजवा दिया।

दिन का अन्तर्धान हो रहा था। मेरी काया विल्कुल बिखर चुकी थी। मुझ में पसकों तक के धारने की शक्ति नहीं थी। बाहर बूँदें पड़ रही थीं। ऐसा प्रतीत होता था मानो धरती आकाश सब उल्टा है।

मैंने अनुभव किया कि मैं एक छोटे दिग्गु क समान हूँ। मेया अन्धान्ति आघात के उस पार से मेरी माँ टेर रही है—

‘आओ बंधुराम अपने बासे सौट आओ।’

अपनी चिकित्सा की अब कोई पाहू नहीं थी। धरती करण अवतति देखकर मन से दुःख का भाव मिट गया था। यह सब उस अदृश्य का परिणाम था जो अवश्य घटता है, घट कर रहता है। बदायित् अदृश्य की कल्पना मानव मन की उपज है। वा भी है, हमारा जीवन अपनी निदिष्ट परिणति की ओर अग्रसर हो रहा था।

रजत गया। मैं जानता हूँ वह कितना दुःख-प्रतिष्ठ है। वह अब नहीं सौटेगा। प्रशान्त दो दिन के लिए था रहा है। हो सकता है प्रमिता भी मारघसीटा से सौट आयेगी। इस परिवार के लिए उसमें कोई आशक्ति नहीं है। मुझे कबल अमला से आया थी किन्तु अब मैं उसे भी समझने में अपने को असमर्थ पा रहा था।

प्रशान्त आया। उसका सुन्दर शरीर पर्वत की असवायु से और निकर आया था। उसे देखकर सुल की अनुभूति हुई, किन्तु साथ ही एक अमाव के कारण वेदना की कसक भी। जब वह आया तो किसी ने अहात के फाटक पर उसका स्वागत नहीं किया। प्रकृति सखी है, वह फाटक सूना था।

वह अपने कमरे में नहीं गया। सामान रजत के कमरे में भेजकर सीधा मेरे पास आया। मुझे प्रणाम कर मेरी परीक्षा की। मुझे आश्वासन देने के लिए बराबर मुस्कराता रहा। कुछ प्रश्न पूछे। मैंने से दवा निकाल कर मुझे दी। फिर भी मेरे पास ही रका रहा। मैंने अमला को पुकारा। उसे सदिया भेजा। वह अपने आत्म-गोपन में ही रही। प्रशान्त के लिए जसपान की भी चिन्ता नहीं का। मैं खीज गया। नीकर पर चित्साया—

“अमला बाइदेव नहीं है ? उन्हें बुसाओ।”

नीकर हृदयकाया-सा लडा रहा ।

“सड़ा क्या है ? अमला बाइदेव को बुसाने क्यों नहीं जाता ?”

अपनी सारी शक्ति बटोरकर उसन कहा—

“व बाहर गई है ।”

“धाहर कहाँ ?”

“मुझे नहीं मालूम । कुछ कह नहीं गई ।”

मेरा सिर झकराने लगा । मैंने कहा—

“प्रधान्त मुझे पकड़ो । अरे मुझे क्या हो रहा है ?”

मुझे इतना स्मरण है कि प्रधान्त ने मुझे अपनी मजबूत बाँहों में धाम लिया था । उसके बाद क्या हुआ, मैं कह नहीं सकता ।

